खण्ड-06 सत्र -05 (भाग-01) / अंक-45

मंगलवार 7 मार्च, 2017 / 16 फाल्गुन, 1938 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

छठी विधान सभा

पांचवां सत्र

अधिकृत विवरण

(सत्र-05 (भाग-01) में अंक 44 से अंक 48 तक सम्मिलित हैं)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

प्रसन्ना कुमार सूर्यदेवरा

सचिव

PRASANNA KUMAR SURYADEVARA

Secretary

एम.एस. रावत

उप-सचिव (सम्पादन)

M.S. RAWAT

Deputy Secretary (Editting)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-5 भाग (1) मंगलवार, 7 मार्च, 2017/16 फाल्गुन, 1938 (शक) अंक-45

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2:00 बजे समवेत हुआ।

सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची:

1 श्री शरद कुमार
2 श्री संजीव झा
3 श्री पंकज पुष्कर
4 श्री पवन कुमार शर्मा
5 श्री अजेश यादव
6 श्री महेंद्र गोयल
7 श्री वेद प्रकाश
8 श्री सुखवीर सिंह दलाल
9 श्री ऋतुराज गोविंद
10 श्री रधुविन्द्र शौकीन
11 श्रीमती बंदना कुमारी
12 श्री जितेंद्र सिंह तोमर
13 श्री राजेश गुप्ता
14 श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
15 श्री सोमदत्त
16 सुश्री अलका लाम्बा
17 श्री आसिम अहमद खान
18 श्री विशेष रवि
19 श्री हजारी लाल चौहान
20 श्री गिरीश सोनी

21 श्री जरनैल सिंह (तिलक नगर)
22 श्री राजेश ऋषि
23 श्री महेंद्र यादव
24 कर्नल देवेंद्र सहरावत
25 श्री सुरेंद्र सिंह
26 श्री विजेंद्र गर्ग
27 श्री प्रवीण कुमार
28 श्री सोमनाथ भारती
29 श्रीमती प्रमिला टोकस
30 श्री नरेश यादव
31 श्री करतार सिंह तंवर
32 श्री अजय दत्त
33 श्री दिनेश मोहनिया
34 सरदार अवतार सिंह कालकाजी
35 श्री सही राम
36 श्री नारायण दत्त शर्मा
37 श्री अमानतुल्लाह खान
38 श्री राजू धिांगान
39 श्री मनोज कुमार
40 श्री नितिन त्यागी
41 श्री एस. के. बग्गा
42 श्री अनिल कुमार बाजपेयी
43 श्री राजेंद्र पाल गौतम
44 श्रीमीत सरिता सिंह
45 मो. इशराक
46 श्री श्रीदत्त शर्मा
47 चौ. फतेह सिंह
48 श्री जगदीश प्रधान

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-05 मंगलवार, 07 मार्च, 2017/16 फाल्गुन 1938 (शक) अंक-45

सदन अपराह्न 2.00 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री राम निवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

शोक संवेदना

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, आपको विदित होगा कि दिनांक 24 फरवरी, 2017 को विकासपुरी में एक दुकान में लगी आग को बुझाते समय सिलेंडर फटने से दो दमकल कर्मियों; श्री हरि सिंह मीणा तथा श्री हरि ओम की मौत हो गई जबक दो अन्य गंभीर रूप से झुलस गये। यह अत्यधिक दुखद घटना है। यद्यपि दिल्ली सरकार ने दोनों मृतकों के परिजनों को एक-एक करोड़ रूपये की सहायता राशि दी है तथा परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने का आश्वासन दिया है लेकिन उनके परिजनों को जो असहनीय आघात पहुंचा है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इन जुझारू दमकल कर्मियों की मृत्यु पर शोक संवेदना व्यक्त करता हूं तथा घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार वालों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, आपको जानकर अत्यधिक दु:ख होगा कि कल दिनांक 06 मार्च, 2017 को लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री रवि

रे का निधान हो गया। वे स्वतंत्रता सेनानी तथा समाजवादी विचारधाारा के व्यक्ति थे। वे 1967 में पहली बार उड़ीसा से लोकसभा सदस्य चुने गये तथा 1974 में राज्यसभा सदस्य बने। वर्ष 1979 के दौरान वे श्री मोरारजी देसाई के मंत्री मंडलन में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री भी रहे। श्री रवि रे वर्ष 1989 में सर्वसम्मति से नौवीं लोकसभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए तथा वर्ष 1991 में दसवीं लोकसभा के सदस्य चुने गये। वे अपनी सादगी, कर्तव्यनिष्ठा और सरल स्वभाव के लिए विख्यात थे तथा उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष के रूप में निष्पक्षतापूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करके अध्यक्ष पद की गरिमा में वृद्धि की।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री रवि रे के निधान पर शोक संवेदना व्यक्त करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार वालों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अब दिवंगत आत्माओं के सम्मान में खड़े होकर दो मिनट के लिए मौन धाारण करेंगे।

(सदन द्वारादिवंगत आत्माओं के सम्मान में सदन द्वारा दो मिनट का मौन धाारण।)

माननीय अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था

अध्यक्ष महोदय : विशेष उल्लेख 280 श्री जरनैल सिंह जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, उसको विषय को मैं चाहता हूं कि इस पर....

अध्यक्ष महोदय : मुझे विजेंद्र गुप्ता, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा श्री जगदीश

प्रधान जी, माननीय सदस्य से नियम 32 के तहत और 10 अल्प सूचनाओं का नोटिस मुझे कई माननीय सदस्यों से नियम-54 के अंतर्गत धयानाकर्षण तथा नियम-55 के अंतर्गत अल्पकालिक चर्चा की अनेक सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। आज नियम-55 के अंतर्गत केवल उसी अल्पकालिक चर्चा को स्वीकार किया गया है, जिसको धान्यवाद प्रस्ताव तथा बजट पर चर्चा के दौरान उठाया जा सकता है। अतः उक्त सभी सूचनाओं को मैं स्वीकार नहीं कर पा रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, ये चर्चा का विषय नहीं है, ये धयानाकर्षण हे। दिल्ली की फायर सर्विसेज की जो स्थिति है। जिस तरह से फायर सर्विसमैन जिसकी मौत हुई है, लगातार हो रही हैं, दः महीने में दूसरी बार ऐसी घटना हुई है। विभाग की स्थिति बहुत दयनीय है। ये लोकहित का मामला है। हम चाहते हैं इस पर मंत्री महोदय रिप्लाई करें और इस पर सदन में जो विषय इस पर हम रेज करना चाहते हैं, हमें इसकी इजाजत दी जाए।

अध्यक्ष महोदय : मैंने रूलिंग दी है। मैं इस पर विचार....

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मुझे लगता है कि ये सदन सिर्फ राजनीति करने के लिए रह गया है। लोक हित के मामले में आप....अध्यक्ष जी ये बहुत महत्वपूर्ण मामला है। ये मामूली मामला नहीं हे। लोग मर रहे हैं और आप उसको महत्वपूर्ण विषय नहीं मान रहे हैं। अध्यक्ष जी, ये बहुत गंभीर मामला है। हरिओम और हरि सिंह मीणा दो 25 फरवरी को 5 बजे इनकी मौत हुई। उसके बाद....

अध्यक्ष महोदय : भई प्लीज राजेश जी, दो मिनट रूकिए।

श्री विजेंद्र गुप्ता : उसके बाद जून 2016 में इसी तरह....

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, इसमें मैंने अपनी रूलिंग दी है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, रूलिंग का क्या विषय है इसमें?

अध्यक्ष महोदय : मेरा 280 पर है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, ये धयानाकर्षण प्रस्ताव बहुत महत्वपूर्ण है और दिल्ली के अंदर फायर सर्विसेज की स्थिजि जितनी....

अध्यक्ष महोदय : मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं। जब भी सदन की कार्यवाही शुरू होती है....

श्री विजेंद्र गुप्ता : स्थिति जितनी भयावह है, ये सदन के सामने सत्य आना आवश्यक है....

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, में आग्रह कर रहा हूं...

श्री विजेंद्र गुप्ता : इस पर फैसला लेना सरकार को, ये आवश्यक है।

अध्यक्ष महोदय : अभी 280 का समय है। उससे पहले इसमें कोई अलाऊ नहीं कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप : जिस तरह से उनके पास फावड़े तक नहीं हैं, पानी पम्पिंग सिस्टम नहीं हे।

अध्यक्ष महोदय : अभी 280 का समय है पहले। ये 280 का समय है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, ये गंभीर मामला है। अध्यक्ष जी, आप इस तरह इसको....मैं चाहूंगा सरकार इस पर रिप्लाई करे। विपक्ष इसको बहुत गंभीरता से ले रहा है।

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी....

श्री विजेंद्र गुप्ता : ये साधाारण विषय नहीं है। हमने समय रहते आपको सूचित किया है।

अध्यक्ष महोदय : मैं आग्रह कर रहा हूं आपसे....

श्री विजेंद्र गुप्ता : हमने नियम-32 में भी दिया है, हमने 54 में भी दिया है।

अध्यक्ष महोदय : मैं इस लिए अलाऊ नहीं कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मेरा आपसे अनुरोधा है, आप इसको अलाऊ करिए।

अध्यक्ष महोदय : देखिए, मैंने बार-बार कहा सदन को जितने भी और विषय हैं....

श्री विजेंद्र गुप्ता : दिल्ली के अंदर दिल्ली फायर सर्विसेज की जो क्रियाकलाप हैं, वो संतुष्ट करने वाले नहीं हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि इसमें मंत्री महोदय जवाब दें। जो मौतें हो रही हैं कर्मियों की, उसकी जिम्मेदार सरकार है। सरकार की लापरवाही है।

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, में आग्रह कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : सरकार द्वारा इस मामले में कोई कदम उठाना नहीं है। ये हमारा साफ रूप से कहना है। हम चाहते हें इस पर मंत्री जी रिप्लाई करें।

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, मैंने हर बार, जब भी सदन चालू होता है मेरी प्रायरिटी 280 है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : देखिए डिपुटी सीएफओ की मौत हुई। अध्यक्ष जी, सात सर्विसमैन एक साथ मरे!

अध्यक्ष महोदय : मैं आग्रह कर रहा हूं और बिल्कुल उस बात को मानते नहीं हें।

श्री जरनैल सिंह : अरे! इनका माईक बंद करो।

श्री विजेंद्र गुप्ता : उसके बाद दो मरे, फिर दो मरे।

अध्यक्ष महोदय : मेरी प्रायरिटी 280 है। जरनैल सिंह जी।

श्री जरनैल सिंह : धान्यवाद अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी मेरे को बहुत खुशी हुई थी आज पहले नमबर पर मेरा नाम लिखा था....(2.20)

अध्यक्ष महोदय : जरनैल संह जी, जरनैल जी,

श्री जरनैल सिंह : धान्यवाद अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी, मुझे बड़ी खुशी हुई थी आज पहले नंबर पर मेरा नाम लिखा था। गुप्ता जी ने फिर बीच में टांग अलसा दी।

अध्यक्ष महोदय : मेरी प्रॉयरिटी 280 है। ये सदस्य, ये सदस्य लिखकर लाते हैं, इतनी तैयारी करके आते हैं वो।

श्री विजेंद्र गुप्ता : ये साधाारण है, आप बताइए?

अध्यक्ष महोदय : मैंने यह नहीं कहा साधाारण है या असाधाारण है। मैं यह कह रहा हूं आपसे, फिर सुन लीजिए आप। मेरी प्रॉयरिटी ये सदस्य

जो लिखकर लाते हैं, तैयारी करके लाते हैं। आप बैठिए, बैठिए। विजेंद्र जी, मैं आग्रह कर रहा हूं बैठ जाइए, विजेंद्र जी मैं आग्रह कर रहा हूं बैठ जाइए। श्री जरनैल सिंह जी।

श्री जरनैल सिंह : अध्यक्ष जी, इन्हें चुप कराओ या बाहर भिजवाओ।

अध्यक्ष महोदय : बोलने दीजिए। आप अपना रखिए।

श्री जरनैल सिंह : सुन ही नहीं पायेंगे। इनको बाहर भिजवा दो ना जी।

अध्यक्ष महोदय : देखिए, आप ऐसे नहीं प्लीज।

श्री जरनैल सिंह : अध्यक्ष जी, डिस्टर्ब कर रहे हैं बीच में। सारा ध यान हट जाता है।....हां, जब नंबर आए तो मेरा नंबर आया इसमें पहले नंबर पे।

अध्यक्ष महोदय : जरनैल जी, आप पढ़ना शुरू करिए मैं बात कर रहा हूं। आप शुरू करिए।

श्री जरनैल सिंह : अध्यक्ष जी, जब जब दिल्ली सरकार के कामों की चर्चा होती है, कभी तारीफ होती है तो विकास पुरी से मीरा बाग ऐलिवेटिड कोरिडोर की जरूर बात होती है। दिल्ली सरकार....अध्यक्ष जी, आप खुद ध यान नहीं दे रहे हैं तो मैं क्या बोलूं? फिर बताओ आप खुद देखें, आपका धयान वो खींच लेते हैं।

अध्यक्ष महोदय : भाई देखिए, विजेंद्र जी, आपसे आग्रह कर रहा हूं। आप एक घंटे का समय खराब कर रहे हैं। ये एक घंटे का मैं आग्रह कर रहा हूं। इसको मैं बाद में भी ले सकता हूं और आप भी चर्चा में। मैंने कहा है तो आप सुनने को तैयार ही नहीं हो रहे हैं। आप सुनने को तैयार ही नहीं हो रहे हैं। आप एक घंटे का समय खराब....

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप आश्वासन दे रहे हैं कि 10 मिनट बाद करेंगे, एक घंटे के बाद करेंगे।

अध्यक्ष महोदय : आप सुनने को तैयार ही नहीं हो रहे हैं। मेरा हर बार सदन में यह आग्रह रहता है, मैं जो भी अन्य विषय होंगे।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मेरा एक प्रश्न और है। आप हमें आश्वस्त कर दीजिए, हम बैठ जाएंगे। आप तो हमसे बिल्कुल बात भी नहीं करते, जवाब ही नहीं देंगे।

अध्यक्ष महोदय : अभी मुझे इसको पूरा करने दीजिए। मुझे इसे पूरा करने दीजिए। पहले ये पूरा करने दीजिए 280। हां, उसके बाद बात करूंगा।

श्री विजेंद्र गुप्ता : 54 में मेरा सवाल उठाएंगे, लेंगे आप?

अध्यक्ष महोदय : कौन सा 54 में कौन सा है आपका?

श्री विजेंद्र गुप्ता : ये ही तो है फायर वर्क का यही तो है, हम किस लिए बोल रहे हैं? हम बिना बात को सूचित किए थोड़ा बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैं करता हूं इसको। हां, मैं करता हूं इसको। करता हूं, कह रहा हूं आपसे।

श्री जरनैल सिंह : धान्यवाद अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : भई, मैंने रूलिंग दे दी, अब बार-बार नहीं होगा। वो इतना महत्वपूर्ण विषय नहीं है जो आपको पढ़ने दिया जाए। आप बैठ जाइए, बैठिए प्लीज। आप बैठिए प्लीज। आसप बैठ जाइए प्लीज, आप बैठ जाइए। कल आप गए थे, मैंने देख लिया है। इतना महत्वपूर्ण विषय नहीं है कि मैं सारी चर्चाएं बंद करूं। आप बैठ जाइए आप 280 में दे देते उसको।

श्री पंकज पुष्कर : अध्यक्ष महोदय, 280 के बाद इसको दे दीजिएगा।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपका आया हुआ है इसमें, 280 में आया हुआ है। आपने....ठीक है, बस बैठिए आप प्लीज। हां, चलिए, अब नहीं, पुष्कर जी, आप बैठ जाइए प्लीज। आप बैठ जाइए प्लीज। मैं आग्रह कर रहा हूं। पुष्कर जी मेरी बात सुन लीजिए एक बार समझ लीजिए। किसी भी कीमत पर 280 का समय जो मेम्बर तैयार करके लाते हैं वो मैं डिस्टर्ब नहीं करना चाहता और ये आदत बना ली है आपने भी और उन्होंने भी चलिए।

विशेष उल्लेख (नियम 280)

श्री जरनैल सिंह : धान्यवाद अध्यक्ष जी, अधचक्ष जी, जब-जब दिल्ली सरकार की कोई विकास कार्यों की चर्चा होती है कोई तारीफ होती है तो विकासपुरी से मीरा बाग ऐलिवेटिड रोड का जिक्र जरूर आता है जिसमें एक तय शुद्धा समय में पुल बनाया गया और उसमें 100 करोड़ के आसपास रूपया बचाया भी गया और अध्यक्ष जी ये पुल बनने से जहां लााों लोगों को उेली सुविधाा हो रही है, लोगों को टाइम बच रहा है, लोगों ने दूसरे रूट छोड़ के इस रूट से आना शुरू कर दिया है। वहीं इस रूट पे ज्यादा ट्रेफिक होने कि वजह से जहां पर ये पुल डिस्ट्रिक सेंटर पर आके उतरता है, रोज सुबह शाम उस जगह पे जाम लग जाता है। पीछे मंत्री जी के कार्यालय में एक मीटिंग हुई थी। वहां पर मंत्री जी ने डारेक्शन भी दी थी क्योंकि इसमें कई सारे डिपार्टमेंट इन्वॉल्व हो गए, ट्रेफिक पुलिस, यूटी पैक, एमसीडी, पीडब्ल्यूडी तो उस वजह से वो परेशानी खत्म होने को नहीं आ रही है। दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है जिससे शाम के टाइम पूरा क्षेत्र लगभग जाम हो जाता है

तो में यही निवेदन करना चाहता हूं कि इस परेशानी को समझते हुए अर्जेंट बेसिस पे जो हजारों लोगों को डेली परेशाीन हो रही है, इसमें कोई ठोस कार्रवाई की जाए ट्रैफिक पुलिस को, यूटी पैक को हिदायत दी जाए कि पूरी नजफगढ़ रोड शाम को जाम हो जाती है तो पूरी रोड की रिडिजाइनिंग का कोई प्रोविजन कराया जाए जिससे क्षेत्र वासियों को वहां के निवासियों को दिक्कत से बचाया जा सके, धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : चलिए सुरेंद्र जी।

श्री सुरेंद्र : धान्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं दिल्ली सरकार के कार्यो कि पूरा दिल्ली ही नहीं, पूरा देश चर्चा कर रहा है साथ ही जब दिल्ली के अंदर राशन कार्ड से संबंधित बात हुई, राशन की दुकानों से संबंधित बात हुई तो जो पायलेट कोर्स चलाया गया, जो पायलेट कार्रवाई की गई राशन कार्डों पे थम्ब इम्प्रेशन से राशन मिलने की तो सबसे पहले दिल्ली सरकार ने मेरी विधाान सभा को चुना और साथ ही विजेंद्र गुप्ता जी की विधाान सभा को चुना। इसके लिए मैं दिल्ली सरकार का धान्यवाद देता हूं और साथ ही मैं कुछ क्वैश्चन आपके माधयम से माननीय मंत्री जी से पूछना चहाता रहा हूं कि जो भी राशन कि दुकानें खोली गई, दिल्ली छावनी क्षेत्र के अंदर प्रोजेक्ट पायलेट लागू होने के बाद राशन धाारकों को अपनी ही एक दुकान पर जाना पड़ता है जबकि उस रूल के अंदर ये लिखा गया था कि पायलेट तौर पर इस कोर्स को चलाया जा रहा है, कोई भी राशन कार्ड धाारक किसी भी दुकान से कभी भी राशन ले सकता है। वो ऐसा अभी तक वहां पर लागू नहीं हुआ है और जिस क्षेत्र में राशन कार्ड धाारक रह रहे हैं, उसी क्षेत्र के राशन धाारक कार्ड के बावजूद उन धाारकों को दूर-दूर दुकानें एलॉट की गई हैं। आप नारायण में रह रहे हैं, आप ओल्ड नांगल में राशन

लेने के लिए जाएंगे। तो ये बार-बार मैं लिख चुका हूं कि वो चैंज होने के लिए अभी तक वो दुकानें भी चैंज नहीं हुई हैं। साथ ही राशन कार्डों में त्रुटि है काफी। किसी के नाम वगैरह ऐड करने हैं। उसके ऊपर भी किसी प्रकार की कोई कार्रवाई अभी तक नहीं हुई है और कार्रवाई हुई तो किस स्तर पर चल रही है। नये राशन कार्ड किस तिथि से जारी किए जाएंगे तथा यह कार्य कितने समय बाद चलना शुरू होगा।

अध्यक्ष महोदय, अगला क्वैश्चन दिल्ली विधाान सभा क्षेत्र में नई राशन की दुकानों को कब तक आवंटन दिया जाएगा। साथ ही दिली छावनी विध ाान सभा क्षेत्र के अंतर्गत कुछ क्षेत्र में पहले से राशन की गाड़ियां चलती थीं, जैसे कि चाणकक्य पुरी का क्षेत्र है उसमें पूरा वीआईपी और एम्बेसीज हैं। साथ ही झुग्गी कलस्टर हैं तो वहां पे पहले गाड़ियों से राशन दिया जाता था तो उस खेत्र में अभी कोई दुकान न होने की कि वजह से....मैं बार-बार पत्र लिख चुका हूं कि राशन की गाड़ी वहां पर दोबारा लगाई जाए जिससे वहां के लोगों को सुविधाा हो। क्योंकि वो राशन लेने के लिए उनको लगभग 12-12 15-15 किलोमीटर दूर जाना पड़ता है और किसी कारण से अगर मशीन के अंदर खराबी है और थम्ब इम्प्रेशन नहीं लगता तो उसको राशन नहीं मिल पाता उसको कई बार चक्कर लगाना पड़ता है।

तो मैं आपके माधयम से माननी मंत्री जी से निवेदन करता हूं कि जितने भी ये राशन से संबंधित मुद्दे हैं, ये बड़े अहम क्वैश्वन हैं मेरे। क्योंकि पायलेट प्रोजेक्ट यहां से शुरू किया गया है। दिल्ली के अंदर दो विधाान सभाओं में ये कार्य चालू है। तो ये जो कमियां हैं, इनको जो खामियां हैं इनको दूर करने का जल्दी से जल्दी अनुरोधा करता हूं। धान्यवाद जय हिंद।

अध्यक्ष महोदय : धान्यवाद, धान्यवाद। श्री जगदीश प्रधान जी।

श्री जगदीश प्रधान : धान्यवाद अध्यक्ष जी, सबसे पहले तो मैं आपका धान्यवाद करता हूं कि आज आपने हाउस 10 मिनपट देर से शुरू कराया। क्योंकि मैं पौने बारह बजे अपेन घर से निकला विधाान सभा आने के लिए और बार-बार फोन जा रहे थे कि आप कहां रह गए भई। मैंने कहा, ''जी लंदन पेरिस में खोया हूं।'' जाम लग पड़े हैं। सारा, वजीराबाद पुल से लेकर खजूरी भन पुरा क जाम, पुरा पुश्ता जाम और आपको मेरा विश्वास न हो तो अभी आप बस अड्डे से और शास्त्री पार्क तक जाम लगा पड़ा है पूरा पैक है। तो अध्यक्ष जी, एक तरफ तो आप दिल्ली को लंदन बनाने की बात करते हैं सरकार और दिल्ली में जो आज हालत हैं, अभी जरनैल जी कह रहे हैं जाम लगा रहता है घंटों घंटों हजारों आदमी....भइया, मैं तो आपकी बात की ताईद कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : क्या जाम नहीं है, क्या आप इस बात से सहमत हैं कि दिल्ली में जाम नहीं हैं? आप इस बात से सहमत हैं क्या कि दिल्ली जाम फ्री है?

अध्यक्ष महोदय : जगदीप उजी, एक सैकंड देखिए, भाई एक सैकंड।

श्री जगदीश प्रधान : कोई केंद्र सरकार में आप अपने दिल में हाथ रख के कह दे कि जाम नहीं।

अध्यक्ष महोदय : जगदीश जी, मुझसे बात करिए आप।

श्री जगदीश प्रधान : आप सब दुखी हैं जाम से। आप कह रहे हो....

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं....

श्री जगदीश प्रधान : आप ईमानदारी से अध्यक्ष जी को बता दें कि जाम रहता है या नहीं रहता दिल्ली में।

अध्यक्ष महोदय : राजेश जी, ये ठीक नहीं तरीका प्लीज।

श्री जगदीश प्रधान : तीन साल में दिल्ली का हाल है। अरे! दिल्ली को दिल्ली तो रहने दो, लंदन तो बाद में लाना। दिल्ली जैसी थी, उसको वैसे ही रहने दो आप।

अध्यक्ष महोदय : जगदीश जी, मेरी प्रार्थना सुनें। एक सैकेंड, मेरी प्रार्थना एक बार सुन लीजिए।

श्री जगदीश प्रधान : अध्यक्ष जी, मैंने सुन ली आपकी बात।

अध्यक्ष महोदय : मैं वहां से चला हूं अपनी कन्स्टीट्यूएंसी से और यहां आने में मुझे अपने ओएसडी को दो बार फोन करना पड़ा कि ट्रैफिक खुलवाइए, मुझे खुद फोन और कहीं पर भी एक सैकंड, रूक जाइए विजेंद्र जी, राजनीतिक विषय जो है....अगर इसको राजनीतिक बनाएंगे। पूरे रास्ते में एक भी ट्रैफिक का कांस्टैबल नहीं था और ये ड्यूटी जो है, मुझे....एक सैकेंड रूक जाइए। अखिलेश जी रूक जाइए आप। रूक जाइए आप। मुझे इतनी पीड़ा हुई है। आज रावल जी ने फोन किया। दो बार फोन किया कि मेरी ये स्थिति बनी हुई है मैं ट्रैफिक में डेढ़ घंटे से फंसा हुआ हूं। कहीं पर भी, वहां से लेकर सीलमपुर से लेकर और यहां तक मुझे एक कांस्टेबल यहां आकर के मिला बस। बस, अब आप बैठ जाइए। विजेंद्र जी ऐसे नहीं। उनको बात कर लेने

दो। अब पुलिस किसके अधीन है, मैं उसका उत्तर नहीं दे सकता। अब बात करिए आगे।

....(व्यवधान)

श्री जगदीश प्रधान : आप ये बताएं कि रेहड़ी पटरी खोलने के लिए आपकी सरकार ने कितनी बार पुलिस को लिखा।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब आगे बोलिए अब इस पर। चलिए, ये राजनीतिक कर रहे हैं। आप ट्रैफिक कमिश्नर को बोलिए ना, प्रधानमंत्री को बोलिए, मैं खुद दुखली हूं, पूरी दिल्ली की जनता दुखी है। प्रधानमंत्री को बोलिए ना कि मैं दस बार लिख चुका हूं।

....(व्यवधान)

श्री जगदीश प्रधान : रेहड़ी पटरी को हटवाओ।

अध्यक्ष महोदय : मैं तो दस बार लिख चुका हूं। प्रधानमंत्री को क्यों नहीं बोलते आप? गृह मंत्री को बोलिए, पुलिस जिसके अधीन है। प्रधानमंत्री को बोलिए आप पुलिस जिसके अधीन है। चलिए, चलिए, बोलिए आगे करिए। दो मिनट रूक जाइए प्लीज।

श्री जगदीश प्रधान : भइया, आप दिल में हाथ रखके फिर से सोच लेना।

अध्यक्ष महोदय : जगदीश जी, आप दिल पे हाथ रख के पूछिए जब जगदीश जी इधार बात करिए आप। जगदीश जी, फिर वो बोलेगे, जगदीश जी फिर वो ऊपर देंगे ठीक नहीं।

....(व्यवधान)

श्री जगदीश प्रधान : जो वो टोन फुल था।

अध्यक्ष महोदय : जो आपने इसमें लिखा है, इसको लीजिए आप। (2.30)

श्री जगदीश प्रधान : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका धयान अनाधिाकृत कालोनियों को नियमित करने के मामले पर सरकार द्वारा जनता को गुमराह करने से पैदा हुई स्थिति पर दिलाना चाहता हूं। अनाधिाकृत कालोनियुों को नियमित करने के मामले मुें सरकार जनता को गुमराह कर रही है। सरकार अपने उस वायदे से पल्ला झाड़ रही है जिसमें उसने कहा था कि सत्ता में आने के एक वर्ष के भीतर हम सभी अनाधिाकृत बस्तियों को पास कर देंगे, जिसमें ऐसी सभी अनाधिाकृत कालोनियों के निवासियों को मालिकाना हक दे दिया जाएगा। मार्च और जून, 2013 में केंद्रीय शहरी मंत्रालय ने एक अधि ासूचना जारी करके दिल्ली सरकार को सभी अनाधिाकृत कालोनियों को नियमित करने का अधिाकार दे दिया था। दिल्ली सरकार को उन कालोनियों की बाउंड्रीवाल सहित नक्शा ब नाकर रिपोर्ट केंद्र सरकार में सौंपनी थी। परंतु सरकार इस दायित्व को निभाने में पूरी तरह से विफल रही है। अनाधिाकृत कालोनियों की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। पानी, सार्वजनिक शौचालय, सड़कों, खड़ंजों, जलापूर्ति इत्यादि सार्वजनिक सेवाओं की भारी कमी जैसी समस्या मुंह बाये खड़ी है।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भई, जो उन्होंने लिख के दिया उसको, भई जरनैल जी तरीका ठीक नहीं है, उनके यहां अनाधिाकृत कालोनियां है ना।....भई जरनैल

जी ये तरीका ठीक नहीं है। प्लीज। सदन को सदन की तरह से चलने दो उसके क्षेत्र में अनाधिकृत कालोनियां है। चलिएस आप करिए, ऐसे नहीं, सदन की कुछ गरिमा को बना के रखो प्लीज। चलिए आप जगदीश जी।

श्री जदीगश प्रधान : मैं अध्यक्ष महोदय आपसे सिर्फ इतना निवेदन करता हूं कि सरकार को उचित निर्देश दें और अनोथराइज कालोनियों को जो दिल्ली सरकार ने अलग में डाल रखा उसको लूट रहा है धान्यवाद, जयहिंद।

अध्यक्ष महोदय : पुष्कर जी।

श्री पंकज पुष्कर : माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मेरी विधाानसभा तिमारपुर में स्थित दिल्ली विश्वविद्यालय में जो उत्तरी परिसर है, उसके विभिन्न कॉलेजेज में बहुत गंभीर स्थिति उत्पन्न हो रखी है इससे सदन के अधिाकतर सदस्य परिचित होंगे लेकिन उसके कुछ पहलू इतने गंभीर है कि उसको संज्ञान में लेना और एक दलगत राजनीति से ऊपर उठकर के उसको एक संकट की घड़ी देखते हुए, उस पर कुछ प्रभावी कदम उठाने आवश्यक हैं। इसलिए ये विषय मैं आपके समक्ष सदन के समक्ष रख रहा हूं। दिल्ली विश्वविद्यालय पूरे देश के लिए एक माना हुआ विश्वविद्यालय है, केंद्रीय विश्वविद्यालय है और विश्वविद्यालय की परिकल्पना जो है, वो स्वतंत्र चिंतन और विचार-विमर्श के एक केंद्र के रूप में है। एक तो समस्या का पहलू ये है कि विश्वविद्यालयों को जिस तरह से स्वतंत्रता मिलनी चाहिए बातचीत की, उसमें बाधाा पहुंचीह है। अभी पिछले पखवाड़े जो घटनाएं हुई हैं, उनको संदर्भ में लेते हुए रामजस कालेज से शुरू होकर के एक के बाद अनेक विद्यालयों में जो छात्रों की अपनी बात रखने की आजादी है, संवाद करने की आजादी है, उस पर सीध ाा हमला हुआ। ये घटना राजमस कालेज से शुरू हुई। आज इस पर एक विस्तृत

चर्चा है, बहुत खुशी की बात हैं लेकिन यहां मुख्य बात ये है कि इस पूरे प्रकरण में जो मोरिस नगर थाना है, वहां पर छात्रों के ऊपर शाम 6 बजे के बाद उनको रोकने की घटना हुई, उनको डिटेन किया गया। जो छात्राएं थी, उनको मेल पुरूष कर्मियों के द्वारा रोका गया चोट पहुंची, मारा गया उसके बाद पूरा विश्वविद्यालय क्षेत्र एक लगभग छावनी के जैसा बन गया है। राजनीतिक दलों और राजनीतिक संगठनों का अड्डा जैसा बन गया है। मैं पूरे सदन से जो अपील करना चाहता हूं माननीय अध्यक्ष महोदय के माधयम से जो सरकार से अपील करना चाहता हूं कि विश्वविद्यालय की अपनी स्वायत्तता होती है और उसमें केंद्र सरकार भी इसमें शामिल है। लेकिन हमारी प्रदेश सरकार का भी इसमें एक दायित्व बनता है कि छात्रों की स्वतंत्रता, छात्रों का रहने का अधिाकार, छात्रों का पढ़ने का अधिाकार, छात्रों का लाइब्रेरी जाने का अधिाकार, इन सबको सुनिश्चित करने कें लिए एक समन्वित व्यवस्था बनाने की तरफ से गंभीरता होनी आवश्यक है और जो पुलिस प्रशासन के द्वारा छात्रों के प्रति जो राजनीतिक तरीके की कार्रवाई हुई, उस पर एक दलगत राजनीति से ऊपर उठ के एक समन्वित दृष्टिकोण बने अन्यथावो पूरे शहर, पूरे दिल्ली प्रदेश और पूरे देश के लिए बहुत संकटग्रस्त स्थिति हे। अगला एक महत्वपूर्ण बिंदु इससे जुड़ा ये है कि पूरा दिल्ली विश्यवविद्यालय इतने कंजेशन का शिकार है कि आखिर ऐसा क्यों होता है कि एक छोटी सी भी घटना, एक लॉ एंड आर्डर की बहुत बड़ी समस्या बन जाती है। सामान्यतौर पर मर्यादा ये है कि विश्वविालय परिसरों के अंदर कालेज परिसर के अंदर पुलिस प्रशासन के जाने की आवश्यकता नहीं होती है।

अध्यक्ष महोदय : पुष्कर जी, अब समाप्त करिए जो लिखा था, उससे डबल हो गया।

श्री पंकज पुष्कर : मैं दो मिनट में समाप्त कर रहा हूं। तो जो दिल्ली सरकार का एक दायित्व बनता है, मैं उसकी तरफ संकेत करना चाहता हूं कि हमने ये वादा किया चुनाव के समय कि हम अतिरिक्त विश्वविद्यालय खोलेंगे जिससे कि विश्वविद्यालय के ऊपर कालेजिज के ऊपर....

अध्यक्ष महोदय : भई पुष्कर जी, आप विषय से अलग जा रहे हैं। नहीं, आप बैठिए प्लीज।

श्री पंकज पुष्कर : मैं अंतिम बात कहकर बैठ रहा हूं कि इसमें अपनी जो एक सार्वजनिक नागरिक जीवन की मर्यादा है, उसको धयान में रख के राजनीतिक दलों की जो एक आम कार्यशैली है उसे बचके अन्यथा इस संकट की घड़ी में छात्रों के अंदर जो आक्रोश है, जो डर है, वो बहुत चिंताजनक स्तर पर है। इसको मैं सदन के संज्ञान में लाना चाहता था बहुत-बहुत धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : अनिल कुमार बाजपेयी जी। राजेंद्र पाल गौतम जी।

श्री राजेंद्र पाल गौतम : अध्यक्ष जी, आपने मुझे नियम 280 के तहत क्षेत्रीय समस्या रखने का मौका दिया। माननीय अध्यक्ष जी, मेरी विधाानसभा क्षेत्र में डीएम का आफिस है जिसमें डीएम, एडीम, एसडीएम ही बैठते हैं और साथ ही साथ रिटर्निंग ऑफिसर्स भी बैठते हैं। आधाार कार्ड भी बनते हैं और राशन कार्ड का भी दफ्तर वही है, इलैक्ट्रल कार्ड भी बनते हैं वहां उस आफिस के सामने बाहरी रिंग रोड भी है जिस पर बहुत हैवी व्हीकल चलता है उस रोड को क्रास करने के लिए ना तो कोई अंडरपास है और ना ही कोई फुटओवर ब्रिज है। अपोजित साइड में दो सीनियर सैकेंडरी स्कूल हैं; एक जीटीबी एंकलेव में, एक नन्द नगरी ई-ब्लाक वाला। वो दोनों भी बिल्कुल रोड के उस पार हैं और दोनों स्कूलों में बच्चे ज्यादातर मात्रा में सुंदरनगरी के पढ़ते हैं। उन

बच्चों को भी रोड को क्रॉस करके स्कूल जाना पड़ता है रोड से और फिर वापस भी उस रास्ते से आना पड़ता है। इस जगह चूंकि ना तो कोई फुटओवर ब्रिज है, ना अंडरपास है, इस वजह से लोगों को रोड क्रॉस करने में बड़ी परेशानी झेलनी पड़ती है। कई दफा यहां एक्सीडेंट्स भी हुए हैं। मैं इस मुद्दे को पिछले लगभग दो साल से निरंतर उठा रहा हूं। मैंने माननीय पीडब्ल्यूडी मिनिस्टर श्री सत्येंद्र जैन जी से इस बारे में कई दफे निवेदन किया। उन्होंने खुद अपनी तरफ से भी सुझाव दिया था। एक अच्छा सुझाव था रोड को थोड़ा लिफ्ट करके बनाने का और इस संदर्भ में मैं लिखित में दे चुका हूं। लेकिन पिछले दो सालों में बार-बार इस मुद्दे को उठाने के बावजूद अभी तक कोई समाधाान नहीं निकला है। मैं आपके माधयम से सत्येंद्र जी से निवेदन करना चाहता हूं कि प्लीज इस दिशा में जल्दी से कुछ कीजिए। ये बहुत ही गंभीर जगह बन गई है जहां बार-बार एक्सीडेंट्स होते हैं। इसका प्लीज समाध ाान कराइए। बहुत-बहुत धान्यवाद, शुक्रिया।

अध्यक्ष महोदय : धान्यवाद। श्री महेंद्र गोयल जी।

श्री महेंद्र गोयल जी : धान्यवाद अध्यक्ष जी, जो आपने मुझे बोलने का मौका दिया। वैसे तो दिल्ली सरकार नए-नए आयाम रचती है, चाहे मौहल्ला क्लीनिकका हो या एजूकेशन के क्षेत्र में हो। इस सदन के माधयम से मैं आपका धयान सिनेमाघरों में लूट जो चल रही है, उसकी ओर दिलाना चाहता हूं। एक तो सिनेमाघरों की टिकटें बहुत महंगी होती हैं लेकिन सुरक्षा के नाम पर जो अंदर किसी को भी पानी की बोतलें नहीं लेके जाने देते, कोई भी खाने की सामग्री नहीं लेके जाने देते और बाद में वहां पर मनमाने रेट के अंदर जो पानी की बोतल देते हैं, कोल्ड ड्रिंक की बोतल देते हैं या पॉपकोर्न या कोई

भी और खाद्य सामग्री देते हैं, उसके रेट बहुत ज्यादा होते हैं। ये कोई मेरे क्षेत्र की समस्या नहीं है, अपितु पूरी दिल्ली की समस्या है। इस सदन के माध यम से जो सुरक्षा की दृष्टि से जो पहले फ्लाइटों के अंदर जब हम खाना लेके जा सकते हैं, पहले लेके नहीं जाते थे लेकिन केंद्रीय सरकार ने आज फ्लाइटों के अंदर आप खाना लेके जा सकते हैं तो सिनेमाघरों के अंदर क्यों नहीं? तो इस सदन के आप अध्यक्ष हैं। आप इस आवाज को जहां तक भी पहुंचा सकते हैं, इस आवाज को पहुंचाकर उन सिनेमाघरों के अंदर जो ये लूट चल रही है, लोगों के साथ ये काम हो रहा है नहीं, विधाायकों को तो वैसे भी टिकट लेकर के ही देखने का शौक है। क्योंकि मैं बहुत से साथियों को देखता हूं, कभी भी जाते हैं तो वे टिकट लेकर के ही जाते हैं कोई विपक्ष के नेताओं की तरह नहीं है कि वहां पर....

अध्यक्ष महोदय : चलिए महेंद्र जी समअप करिए।

श्री महेंद्र गोयल जी : तो इस ओर धयान आपका दिलाना चाहता हूं धान्यवाद। (2.40)

अध्यक्ष महोदय : महेंद्र जी के विषय में इमरान जी से प्रार्थना करूंगा माननीय खाद्य मंत्री जी से कि इस विषय को देखें। वाकई में गंभीर विषय है। महेंद्र जी ने पूरा नहीं पढ़ा इसको और ये वास्तविकता में सच है जो पापकार्न का पैकेट दस-पंद्रह रूपए में बाहर मिलता है उन्होंने लिखा है वो सौ-सौ रूपए में वहां मिलता है। ये एक बहुत गंभीर विषय है। इस पर कहीं न कहीं हमारा कन्ट्रोल होना चाहिए। चलिए, श्री राजेश गुप्ता जी।

श्री राजेश गुप्ता : अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया। इसके लिए बहुत-बहुत धान्यवाद। मैं एक निवेदन करना चाहूंगा कि गलती से इसके

अंदर एसडीएमसी लिख दिया गया है। इसे नार्थ एमसीडी कर दिया जाये। जो मैं इस विषय पर बोलना चाहता हूं। तो नार्थ एमसीडी जो है, वो लिखा हुआ है मेरे पास में।

अध्यक्ष जी, अभी माननीय हमारे मेम्बर साहर ने इस बात पर चर्चा करी कि दिल्ली के अंदर बहुत ज्यादा ट्रैफिक है और उसी पर मैं बोलना चाहता था कि जो आज दिल्ली के इन्क्रोचमेंट है दिल्ली के अंदर, लगभग पूरी दिल्ली का बहुत ज्यादा बुरा हाल होता चला जा रहा है। अब हम ये समझ नहीं पा रहे हैं कि जिस तरीके से हमारा मोहल्ला क्लीनिक रूकवा दिया गया रोडों के ऊपर, ये कहके कि ये इन्क्रोचमेंट है लेकिन इसके अलावा सब कुछ एलाउड है वहां पर। हर तरीके की दुकान लग रही है। हेल्मेट बिक रहे हैं। मूंगफली बेच लीजिए। सिगरेट बेचिए। सब कुछ एलाउड है लेकिन अगर एक चीज एलाउड नहीं है तो लोगों को दवाईयां मिल जायें, वो तो एलाउड नहीं थी। लेकिन ये सब कुछ एलाउड है और उस वजह से जो दुकानें वहां लगती हैं, खासतौर से जो खाने-पीने की दुकानें हैं, उसके साथ में दस-दस गाड़ियां आकर के खड़ी हो जातीं हैं और पूरा रोड जाम हो जाता है, उसके बाद में दिल्ली सरकार की जो बस है, क्योंकि उसको जो जगह नहीं मिलती तो बीच रोड के बीच में खड़ी होना पड़ रहा है उस बस को। बुजुर्गों को, हैंडीकैप्ड लोगों को, बच्चों को उस बस को पकड़ने के लिए इतना खतरनाक तरीके से रोड के बीच में आना पड़ रहा है औरबस के बाद में जितनी जगह बच गयी, जहां से प्रधान जी की गाड़ी निकलनी है या मेरी गाड़ी निकलनी है तो ट्रैफिक तो जाम होना ही है। हालात रोज बद से बदतर हो रहे हैं और शायद माहौल एक ऐसा बनायाजा रहा है कि भई दिल्ली सरकार के पीडब्ल्यूडी के रोड हैं और देखिए उसके ऊपर ट्रैफिक खड़ा हुआ है तो कोई साफ नहीं कर पा

रहा है। अब या तो वो ट्रैफिक पुलिस करायेगी, जो रोड के हालात हैं और जो पटरियों की सफाई के काम हैं, वो एमसीडी करेगी। दुर्भाग्यवश दिल्ली सरकार उन दोनों कामों को नहीं कर पाती है। बार-बार हम बोलते हैं अभी प्रधान जी ने पूछा भी था कि कितनी बार हमने लिखा। मेरी विधाान सभा की तो टाईम्स आफ इंडिया के अंदर तक खबर आ चुकी है कि मुर्गा मार्केट के लिए इसके लिए मैं बार-बार इसबात को कहे जा रहा हूं कि वहां पर रात को ये हालात हो जाते हैं कि मंगलवार को छोड़कर किसी दिन न कोई एम्बुलेंस निकल सती है, न पुलिस की गाड़ी निकल सकती है और न फायर बिग्रेड निकल सकता है। अब बार-बार हर जगह हम बोल रहे हैं, लिख रहे हैं। डिस्ट्रिक्ट की मीटिंग्स में बोल रहे हैं। डीएम साहब के पास जाके बोल रहे हैं। डीसीपी साहब को बोला है कि प्लीज इसमें कुछ कीजिए। लेकिन उसमें कोई भी अभी तक काम नहीं हुए। सबसे कमाल की बात है कि आप देखिए की रोडों का ये हालात है। अगर वार्डवाईज थोड़ा सा कहूं संक्षिप्त में तो एक 68 नम्बर वार्ड जो पहले हुआ करता था जो अब 72 हो गया है। वहां पर फलों की इतनी बड़ी-बड़ी दुकानें लगवा दी हैं पार्षद साहब ने कि भई फल तो फ्री आ ही जायेंगे। उसके साथ में फल के साथ में और भी बड़े सारे फल आ रहे हैं। पूरे रोडों पर आप देखेंगे तो फल ही फल दिखे चले जा रहे हैं और रोज बढ़ रहा है। लोग हमारे पास आते हैं कि रोड हमारा है लेकिन हम उसमें कुछ नहीं कर पा रहे हैं। 65 नंबर वार्ड जो हुआ करता था...डीसी का दौरा हुआ। डीसी ने गायें और जो कबाड़ी का सामान घेरा हुआ था, उसको खाली कराया। तीन दिन बाद में फिर वो गाय वहां पे आके बंध ीं और उसके बाद में कबाड़ी के ही हालात थे और जब उस कबाड़ी को कहा गया तो उसने शोर मचा के गाय वाले ने कहा कि पचास हजार रूपए

देते हैं। फ्री में नहीं बैठे हुए हैं। ये एमसीडी के हालात हैं। 67 नंबर वार्ड में जहां से हमारे मेंबर रह चुके हैं एक्स एमएलए साहब। वहां का विरोध ा किसने करा? इन्हीं के साथी आरएसएस और बीएचपी वालों ने। क्योंकि मीर वहां का जो मंडल का महामंत्री है, वहां पर रेहड़ी-पटरी पर नॉनवेज बेचता था। उसको रोकने के लिए बकायदा डीसी की पूरी टीम आयी उसको उठाने के लिए और जो निगम पार्षदसाहब हैं जो हैं कि पहले विधाायक भी रह चुके हैं वो वहां रोड पे लेट गये। मेरे पास वीडियो भी है आप चाहेंगे तो मैं दिखा दूंगा कि इसको हटायेंगे। वहां पर मीट बचेता था साहब रोड के ऊपर। ताकि वहां पर शराब पीयें लोग आकर औ साथ में नॉनवेज खायें और जहां पर पूरी आबादी है, उसका बुरा हाल हो। वो रोड पर लेट गये और वो उठाके नहीं गये हालांकि वो फिर वहां पर वापस आके रखा गया है और स्थानीय लोगों के विरोधा की वजह से अभी तक वहां मीट तो नहीं दिख रहा है लेकिन खोखा वहां पे वापस आके रखा गया है और इसके साथ में मैं अगली बात जोड़ना चाहता हूं कि सर कि जो तहबाजारी के लिए लोग मांगते हैं। सालों हो गये, ये तो मुझे मालूम ही नहीं। इसमें 2004 शायद मेन्सन है लेकिन मुझे तो याद ही नही आखिरी बार तहबाजारी उन्होंने दी कब थी। पैसे ले लेते हैं, देते नहीं हैं। उस वजह से लोग रोड पर लगाते हैं और जो खाने-पीने वाले हैं। किसी मजबूरीवश उनसे सामान खरीदते हैं। उसी से इन्क्रोचमेंट होती।

अध्यक्ष महोदय : कनक्लूड करिये राजेश जी।

श्री राजेश गुप्ता : मेरा यही कहना है कि सर किसी तरीके से वैसे तो एक महीने बाद चुनाव है। चीजें अपने आप ही सही होने वाली हैं और मेरा मानना है कि लंदन का तो मुझे पता नहीं है लेकिन दिल्ली, दिल्ली जैसे

जरूर हो जायेगी एक महीने बाद में। लोगों ने मन बना लिया है। ये हैंडीकेप लोगों के बारे में नहीं सोच रहे हैं। उनको कोई भी तहबाजारी नहीं दे रहे हैं। हमने जरूर इस पेंशन को 2500 रूपये कर दिया है और सब लोग सब कुछ देख रहे हैं। मेरा इनसे निवेदन है कि चुनाव तो जब होंगे, लोगों ने मन बना लिया है।

मेरा आपके माधयम से आग्रह है कि कृपा कर इस एक महीने के अंदर ही उन सब चीजों को साफ कर दिया जाये। बहुत-बहुत धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमदत्त जी।

श्री सोमदत्त : धान्यवाद अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय मेरी विधाान सभा सदर बाजार जो कि डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल दरियागंज के अंदर आती है और एमएलए फंड से मेंने कई एजेंसियों से कई काम के प्रपोजल दिये थे इसमें, लेकिन कमाल की बात ये है कि वो प्रपोजल सेंक्शन होने के बाद भी अभी तक वो काम फाईनलाईज नहीं हो पा रहे हैं। 01-04-2016 से लेके और आज की डेट मार्च 2017 आ गया है। एक भी काम की कान्ट्रैक्टरों को पेमेंट नहीं की गई है अभी तक। उन कान्ट्रैक्टरों ने सारे काम हमारे रोक रखे हैं। चाहे वो कान्ट्रैक्टर किसी भी एजेंसी के तहत काम कर रहे हों। चाहे एमसीडी में कर रहे हों, चाहे या डूसिब में कर रहे हों या इरिगेशन या फ्लड में कर रहे हों। उनकी लाखों रूपए की पेमेंटें डीएम दरियागंज, डीएम सेंट्रल के पास पेंडिंग है। कई बार ये इश्यू उठा चुका हूं उनके पास। सारे बिल सबमिटेड हैं लेकिन उनके कान पर जूं नहीं रेंग रही है। वो पेमेंटस रिलीज नहीं कर रहे हैं और कान्ट्रैक्टरों ने सड़कें तोड़ के छोड़ी हुई हैं। कह रहे हें पहले पुराने पैसे दिलवाओ, तब ये सड़कें पूरी करेंगे। पब्लिक ह्रास हो रही है। बार-बार

हमारे पास आ रही है लेकिन वो पेमेंटस रिलीज नहीं हो पा रही हैं। इसलिए ये सारा काम पेंडिंग है। तो मेरी आपसे रिक्वेस्ट है कि जल्दी से जल्दी डीएम सेंट्रल को ये आदेश करें कि सारे कान्ट्रैक्ट, सारी एजेंसियों की फाईनल पेमेंट जल्द से जल्द रिलीज करें ताकि हमारे आने वाले काम भी जल्दी फाईनलाईज हो पायें। धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : सोमदत्त जी को जो लिखित में आया है। इसमें डेट 01.04.2017 डली है। इस पर 01.04.2016 करवा दें। हां 01.04.2016 करवा कदें। हां 01.04.2016 कर दें प्लीज। ठीक है। अजय दत्त जी।

श्री अजय दत्त : धान्यवाद अध्यक्ष महोदय, मैं दिल्ली में शिक्षा के क्षेत्र में जो विकास कार्य हुए हैं, सबसे पहले मैं शिक्षा मंत्री माननीय मनीष सिसौदिया जी का, उनके क्रांतिकारी व ऐतिहासिक कार्य करने की सराहना करता हूं और दिल्ली का नागरिक होने के नाते उनका धान्यवाद भी देना चाहता हूं कि दिल्ली में माननीय शिक्षा मंत्री जी ने जो कार्य किए हैं, वो एक इतिहास है। आज तक हमने ये नहीं सुना था कि किसी स्कूल में कोई पैरेंटस की और टीचर्स की मीटिंग बुलायी जाये। हमने आज तक ये नहीं सुना था कि किसी सरकार में दो साल के अंदर आठ हजार सरकारी स्कूल में कमरे बना दिये गये। ये कभी सुना नहीं गया। हमने कभी ये नहीं सुना था कि 14 स्कूलों को बनाने का कार्य पूरा हुआ दो साल में। पांच नये स्कूल खोले गये। पांच सरकारी स्कूलोंु को अपग्रेड करके ऐसा बनाया गया। जिसने प्राईवेट स्कूलों को भी आज फेल कर दिया गया है। 55 स्पोर्टस एकेडमी दी गयी और इतने सारे विकास कार्य हमारे माननीय शिक्षा मंत्री जी न ेकिए और उसमें एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य जो मुझे सबसे अच्छा लगा वो ये था कि एक सर्वे किया गया जिसमें

छठीं क्लास के बच्चे से लेके नौंवी लास के बच्चों का सर्व किया। उसमें पाय ागया कि 74 प्रतिशत बच्चे आज भी या तो बिल्कुल नहीं पढ़ पतो हैं या बहुत मुश्किल से पढ़ पाते हैं। तो उनके लिए एक अलग प्रोग्राम बनाया गया जिसे चुनौती का नाम दिया गया और तीन महीने के इस प्रोग्राम के बाद आज वो बच्चे पढ़ चुके। (2.50) मैं ये सब बात इसलिए कह रहा हूं कि मैं एक ऐसी विधाान सभा क्षेत्र से आता हूं जहां पर एससी/एसटी/ओबीसी और गरीब लोगों की तादाद करीबन 95-96 परसेंट है और मेरे क्षेत्र में भी 158 सरकारी स्कूल के कमरे बन चुके हैं। वहां पर मैंने देखा कि दो साल से करीबन 18 मर्डर मैं देख चुका हूं और चाकू-छुरी की जितनी भी लूटमार की प्रॉब्लमस हैं, उसमें यह देखा गया है कि बच्चे आधो से, ऑलमॉस्ट 90 परसेंट ड्रॉप आउट है और वो पढ़ नहीं सकते। अगर देखा जाये कि हमें समाज बनाना है तो उसमें सबसे पहले शिक्षा को बहुत महत्व देना है। मैं आपके माधयम से शिक्षा मंत्री को यह दरख्वास्त देना चाहता हूं कि मेरे क्षेत्र में छह स्कूल क्लस्टर टाइम के बने हुए हैं और उन छह स्कूलों में करीबन 11 टोटल मॉर्निंग, इवनिंग लगाकर 11 स्कूल चलते हैं। मैं आपके माधयम से शिक्षा मंत्री से यह रिक्वेस्ट करना चाहता हूं कि आप उन क्लस्टर स्कूलों में से कम से कम एक मॉडल स्कूल लें और वो मॉडल स्कूल बनायें जिससे कि मेरे खेत्र में, बाकी के जितने भी स्कूल हैं वो उससे प्रेरणा लें और उसे चुनौती लें और वहां की शिक्षा, अम्बेडकर नगर की शिक्षा में विकास हो। वहां के बच्चों को शिक्षा और अच्छी मिले, यही बात रखने के लिए आपको सारा ब्रेकग्राउंड मैंने बताया और मैं यह आपको दोबारा से कहना चाहता हूं कि अगर हमने शिक्षा को और अच्छा बना दिया जो हमारी सरकार का फर्स्ट फोकस है तो मुझे लगता है कि देश को एक अच्छा नागरिक भी मिलेगा और दिल्ली की तरक्की भी होगी।

अध्यक्ष महोदय : अब कन्क्लूड कीजिए।

श्री अजय दत्त : मैं इसी के साथ आपका धान्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया और हमारे शिक्षा मंत्री से दोबारा यह गुजारिश करता हूं कि अम्बेडकर नगर में और विकास शिक्षा के माधयम से किया जाये। धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : धान्यवाद। श्री अनिल बाजपेयी जी।

श्री अनिल बाजपेयी : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका धान्यवाद करना चाहता हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। अपनी विधाान सभा में करीब सवा करोड़ रूपये की एलईडी लाइट का काम मैंने शुरू कराया है। 700 एलईडी लाइट मेरे क्षेत्र में लग चुकी हैं। पहले भी एलईडी लाइट जो हमारी लग रही थीं, उसको रूकवाने का काम स्टेंडिंग कमेटी के चेयरमैन ईडीएमसी के और जो ईडीएमसी की वाइस चेयरमैन हैं, उन्होंने और सारे काउंलर्स ने फ्लोर पर बैठकर हमारा काम रूकवा दिया। हमने कमिश्नर साहब से बात की कि मैं एमएलए फंड से लगवा रहा हूं और दूसरी बात यह है कि एक तो सरकार की बचत भी हो रही है, रोशनी भी अच्छी हो रही है। उसके बाद उन्होंने कहा कि ठीक है, आप लोग लाइट लगवाइये, मेरा काम हो गया। आज से एक हफ्ते पहले जो दिल्ली की हमारी ईडीउमसी की मेयर साहिबा हैं, उन्होंने सारे अधिाकारियों को बुलाकर कहा कि तुरंत एलईडी लाइट लगाने का काम रोक दिया जाये। अगर कोई बीएसईएस का कर्मचारी एलईडी लाइट लगाने के लिए आता है तो उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज कर दी जाए। यह असंवैध ाानिक है। एमएलए का कोई फंड नहीं है और हम कोई गलत काम थोड़े ही न करने जा रहे हैं। सर, इसके लिए एक इंक्वायरी गठित करनी चाहिए

और जरूरत पड़े तो कमिश्नर को आप बुलाइये या सदन के अंदर बुलाहइये ताकि हम अगर एलईडी लाईट लगवा रहे हैं तो आप एरिया के अंदर लोग भी कह रहे हैं कि हम लोग अच्छा काम कहीं करने की कोशिश कर रहे हैं और अगर इस तरीके का दुर्व्यवहार किया गया और आज वो धारने पर बैठे हैं, कल को हम लोग भी धारने पर बैठ सकते हैं। वो अकेले फ्लोर पर बैठेंगे, मैं विधाान सभा से पांच हजार लोगों को मेयर के खिलाफ और उनके खिलाफ धारने पर बिठा दूंगा। मेरी आपसे प्रार्थना है कि यह संवैधाानिक किया है। एमएलए अपने फंड से लगवा रहा है और 600 लाइटें मेरे इलाके में और लग जाएंगी तो मेरे इलाका और जगमगायेगा। मेरा अनुराधा है माननीय अध्यक्ष महोदय कि कमिश्नर को इसमें तलब किया जाये, आपका बहुत-बहुत धान्यवाद, बहुत-बहुत शुक्रिया।

अध्यक्ष महोदय : धान्यवाद। विजेंद्र जी, मैं उसमें एक रूलिंग दे चुका हूं। मेरी बात एक बार सुन लीजिए।

श्री विजेंद्र गुप्ता : पहले तो 12वां नंबर मेरा है, पांच मिनट बाकी है। वो मुझे अलाउ किये जाए।

अध्यक्ष महोदय : हां, पांच मिनट है। ग्यारहवां किसका है?

श्री विजेंद्र गुप्ता : 12वां मेरा है।

अध्यक्ष महोदय : जगदीप सिंह जी। जगदीप जी उपस्थित हैं, नहीं हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : 11वें में तो वो बोल चुके।

अध्यक्ष महोदय : 11वें में नहीं बोलें, उनका पांचवां था। बीच में लेट हुए थे। आप बोलिए।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, मैं आपके माधयम से दिल्ली सरकार का धयान आम आदमी कैंटीन खोले जाने की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। दिल्ली सरकार लगातार....आम आदमी पार्टी ने चुनाव के समय भी दिल्ली की जनता से यह वायदा किया था कि हम आम आदमी पार्टी की ओर से चुनावी मुद्दा बनाकर कि लोगों को, मजदूरों को, मेहनतकश लोगों को, झुग्गी-झोंपड़ी बस्तियों के समीप, जहां-जहां लोगों की आवश्यकता है, उन-उन स्थानों पर हम आम आदमी कैंटीन खोलेंगे, जहां पांच रूपये से दस रूपये के बीच में उनको भरपेट भोजन मिलेगा और नाश्ता आदि मिलेगा। इसके लिए 60 करोड़ रूपये का बजट में प्रावधाान भी किया गया और इस संबंधा में मंत्री जी ने पिछली बार बजट में यह कहा भी कि औद्योगिक क्षेत्रों में, मार्किट स्थलों पर, शैक्षणिक स्थानों पर, रेलवे स्टेशन और स्लम बस्तियों आदि सार्वजनिक स्थानों पर ये कैंटीन बनाई जाएंगी और यह कहने के बाद जो जनाहार स्टूल चल रहे थे, उनको बंद कर दिया गया। लेकिन बहुत ही इस बात को खेद के साथ मुझे यहां पर उठाना पड़ रहा है कि एक भी आम आदमी कैंटीन दिल्ली की सड़क पर कहीं नजर नहीं आई। हां, अपनी पार्टी का नाम लगाकर, जोड़कर जरूर आपने उसको घोषित कर दिया, बहुत सारी योजनाओं में पार्टी का नाम लगाकर घोषित कर दिया। लेकिन गरीबों को मिलने वाला कम दाम पर भोजन, सब्सिडाइज्ड भोजन उसके मामले में सरकार पूरी तरह से विफल रही है। हम चाहते हैं कि कमजोर वर्ग के पास सार्वजनिक स्थानों पर सस्ती दरों पर खान-पीने की कोई व्यवस्था नहीं है, इसको तुरंत किया जाये क्योंकि एक मजदूर जो अपने घर से फैक्ट्री के लिए चलता है तो बारह-बारह घंटे,

दस-दस घंटे वो घर से बाहर रहता है और उसकी इतनी आय नही है कि वो इस महंगे समय में दिल्ली के रेस्टोरेंस से या बाकी स्थानों से कुछ खाने को ले सकें।

अध्यक्ष महोदय, सरकार यह भी बताये कि क्या कारण रहे कि दिल्ली सरकार ने अभी तक इस पर कोई ठोस कार्रवाई क्यों नहीं की? मैं अध्यक्ष महोदय से अनुरोधा करता हूं कि वह इस संबंधा में दिल्ली सरकार को निर्देश दें कि सरकार शीघ्रातिशीघ्र आम आदमी कैंटीन खोलने का जो प्रस्ताव है और लाखों गरीब लोगों को इस योजना का लाभ मिल सकें। एक रूपया भी उस 60 करोड़ मेमं से बजट प्रावधाानों में से खर्च नहीं हुआ है। इस पर मंत्री जी अपनी स्थिति को स्पष्ट करें कि क्या कारण हैं कि मजदूरों के लिए योजना थी, उसको लागू नहीं किया गया है।

अध्यक्ष महोदय : एक बार जगदीप जी अपना पढ़ दें। मैं नाम कॉल कर चुका था। फिर आप उत्तर दीजिएगा। जगदीप जी, शॉर्ट में पढ़ियेगा प्लीज, जो लिखा है।

श्री जगदीप सिंह : सर, सबसे पहला आपका धान्यवाद है, आपने मुझे बोलने का मौका दिया। यह एक बहुत ही सीरियस मैटर है जिसको मैं विध ाान सभा में रखना चाह रहा हूं कि अभी कुछ दिनों से एक संगीन अपराध ा किया जा रहा है जिससे देश में जितनी भी हमारी कम्युनिटीज हैं, उनको आपस में एक रेशनालइजेशन, एक डिफरेंस पैदा करने के लिए यह चीज हो रही है। हमारा जो साइबर सिस्टम है इनफोर्मेशन पेनिट्रेशन के लिए है लेकिन इसमें एक दुरूपयोग किया जा रहा है जिसमें कि सिखों के गुरूओं की तस्वीरों के ऊपर नीचे उनकी बॉडी का सिस्टम चेंज करके लेडीज की बॉडीज लगाकर,

हमारे शिव भगवान की फोटोज के साथ कुछ ऐसी छेड़खानियां करके कहीं न कहीं यह ऐसा लग रहा है कि एक सोशल टेरिरिज्म चल रहा है जो कि आपस में हमारी भावनाओं को भड़का रहा है, हमें लड़वाने की कोशिश की जा रही है। इसमें अभी रिसेंटली एक एफआईआर हुई है तिलक नगर थाने में 106/17 और इसमें पूरे प्रिंट आउट्स निकाले हैं एक लड़का भी उन्होंने पकड़ा है और मेरा आपसे यही आग्रह है कि अपने कमिश्नर को, हमारे आईटी सेल को और हमारी जितनी भी ऐसी एजेंसीज है जो इस सिस्टम को देखती हैं जो कि इस तरीके की भावनाओं को भड़काने की कोशिश की जा जाती है, उनको रोकें और कुछ साइबर सिस्टम में ऐसा सिस्टम बनाया जाये कि ऐसी कोई भी भावनाओं को भड़काने कोई चीज हो तो इमिजिएटली उसका ब्लॉक किया जाये, उसको एक मिनट भी चलने न दिया जाये, (3.00) क्योंकि हर धार्म में उनके गुरू उनके भगवान या जिस किसी को भी वो मानते हैं उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचती है तो मेरा आपसे यही आग्रह है कि इस पर सख्त से सख्त कार्रवाई करें और एक बार मंत्री जी उन सभी डिपार्टमेंट को बुलायें और अच्छे से इस पर काम करें, धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री सत्येंद्र जैन जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : आपके उसका उत्तर दे रहे हैं न वो।

श्री विजेंद्र गुप्ता : किसका?

अध्यक्ष महोदय : जो आपने अभी 280 में पढ़ा है।

शहरी विकास मंत्री (श्री सत्येंद्र जैन) : अध्यक्ष महोदय, पहले तो जगदीप जी ने जो विषय उठाया है।

बहुत ही गंभीर विषय है और किसी भी धार्म के गुरूओं का इस तरह से अपमान किया जाना, ये बहुत ही दुखद है और शर्मनाक भी है। मैं अपनी ओर से तथा सरकार की ओर से पुलिस कमिश्नर को और जितनी भी एजेंसीज हैं, सबसे बातचीत करेंगे और उनको लिखेंगे कि इसके ऊपर सख्त कारवाई की जाए और मुझे लगता है कि पूरा सदन इसकी भर्त्सना करता है इस तरह की कार्यवाही करने की और जो भी लोग हैं, उनको इससे बाज आना चाहिए और इस तरह के काम बिल्कुल नहीं करने चाहिए।

दूसरी बात विजेंद्र गुप्ता जी ने सदन के विपक्ष के नेता जो हैं उन्होंने आम आदमी कैंटीन का जो समर्थन किया, उसके लिए मैं उनका धान्यवाद करना चाहता हूं कि चलो देर आयद दुरूस्त आयद। उनको एक साल के बाद तो याद आया, तारीफ तो की। और मैं उनको विश्वास दिलाना चाहूंगा ठीक है मैं राजनीति में जाना नहीं चाहता काफी कोशिश करके उन्होंने बहुत सारी हमारी फाइलों पर कब्जा करवाया था जिसका पिछले सेशन्स में आपने देखा होगा कि बड़े जोर-शोर से उन्होंने कहा था कि सरकार को काम करने का अधि ाकार नहीं हैं और जी ये हैं, वो हैं। चलो वो बातें खत्म हो गई हैं। चार सौ फाइलों के ऊपर जो कब्जा किया गया था उसमें से इसकी फाइल भी थी, कैंटीन वाली फाइल भी थी और सर मैं तो आपका धान्यवाद कर रहा हूं, हंसने का फायदा नहीं है अगली बार काम हो जाएगा ये और जहां तक इन्होंने कहा कि एक भी कैंटीन नहीं खुली है और एक कैंटीन हम आलरेडी खोल चुके हैं पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर एलएनजेपी हास्पिटल के अंदर आलरेडी

काम कर रही हैं और जहां तक ये कह रहे हैं कि पार्टी के नाम पर काम किए गये हैं मुझे तो अपनी पार्टी के नाम से कोई भी योजना का नाम पार्टी के नाम पर नहीं रखा आज तक जो अगर इनकी नजर में कोई हो तो हमें बता दें, किसी भी पार्टी के नाम पर रखी गई होगी तो उसका नाम हम चेंज कर देंगे, धान्यवाद।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भाई राजेश जी, दो मिनट रूक जाओ प्लीज। माननीय मंत्री जी से मैं थोड़ा सा व्यक्तिगत तौर पर जानना चाह रहा हूं ये कैंटीन सड़कों के किनारे खुलेंगी? क्या एमसीडी से परमीशन मिल गई है? कभी वही हाल इनका भी न हो।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भई दो मिनट रूक जाइये। मोहल्ला क्लिनिक जैसा हाल इनका भी न हो। नहीं जो वास्तविकता है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : नहीं, अब तक आपने कोई तैयारी नहीं की मतलब।

अध्यक्ष महोदय : नहीं तैयारी है हमारी तो, तैयारी है पूरी सरकार की तैयारी है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : ....आपने बंद की तो क्यों बंद की? वो तो चल रही थी।

अध्यक्ष महोदय : भई अब उनको उत्तर देने दें। विजेंद्र जी, मैंने पूछा उनको उत्तर देने दीजिए।

शहरी विकास मंत्री : देखियेगा ऐसा है एमसीडी की ओर से....

विजेंद्र गुप्ता : पीडब्लूडी की सड़कों का मामला है।

शहरी विकास मंत्री : सर, बता देता हूं आपको पीडब्ल्यूडी की सड़कों का ही मामला है। पीडब्लूडी की सड़कों के ऊपर जितने मोहल्ला क्लिनिक बनाये गये हैं, उनको तोड़ने के नोटिस दिये गये हैं और पीडब्ल्यूडी की सड़क के ऊपर ही माननीय विजेंद्र गुप्ता जी ने दो मंजिला एक भवन बनाया है, पक्का ईंटों से बनाया है, मोहल्ला क्लिनिक तो अस्थाई हैं और पीडब्ल्यूडी की सड़क पर बनाया है और उसके ऊपर किसी अधिकारी को कोई आपत्ति नहीं है। हां, मैंने उनसे पूछा कि मुझे बताओ कि अभी तक जितनी भी बिल्डिंगें बन रही हैं, आपसे परमीशन लेकर बनती हैं या एमसीडी से लेकर बनती हैं? अभी तक जवाब नहीं दिया जा रहा है। एमसीडी इसके अंदर अतिरिक्त रूचि ले रही है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : ....बैठे हैं, आपको दिक्कत है?

शहरी विकास मंत्री : सर सुन लीजिये दिक्कत तो आपको है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : दिक्कत आपको है। उसमें पढ़ रहे हैं। उसमें बैठळकर आपको दिक्कत है क्या।

शहरी विकास मंत्री : सर जी, मैं क्या बता रहा....

....(व्यवधान)

शहरी विकास मंत्री : चलो, मैं उसका समर्थन करता हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : मैं दस और बनाऊंगा।

....(व्यवधान)

शहरी विकास मंत्री : अध्यक्ष महोदय, अभी देखो इन्होंने कहा है कि मैं एक बना रहा हूं दस और बनाऊंगा, हम दस का भी समर्थन करेंगे एक का भी समर्थन कर रहे हैं परंतु मुझे लगता है कि खड़े होकर अगर ये मोहल्ला क्लिनिक का समर्थन कर दें तो आज इनका....सर जी मोहल्ला क्लिनिक आप खड़े होकर उद्घाटन कर दीजियेगा आपकी जबान सबको पता लग जाएगी, दो भाषा में बोलते हैं जैसे सांप की दो जीभ होती हैं। एक साथ, एक ही साथ-साथ बोलते हैं। हां और एक साथ बोलते हैं न। अगर हिम्मत है तो आप करिए अब कि हम मोहल्ला क्लिनिक का समर्थन करते हैं। मैंने आपके उसका समर्थन किया है आप खड़े होकर के करिए समर्थन।

श्री विजेंद्र गुप्ता : सर जी अभी तक कैंटीन क्यों नहीं खुली, इस पर कोई संतोषजनक रिप्लाई नहीं आया है, आपके कहने के बाद भी नहीं आया है।

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, बैठिये दो मिनट। मैं इसका निर्णय कर देता हूं। आप, एमसीडी इनको तोड़ेंगे नहीं, ये आश्वासन दिलवाइये, मैं स्वयं आप और माननीय मंत्री जी एलजी साहब के पास चलेंगे और परमीशन लेकर आएंगे। आप निर्णय करवाइये एमसीडी से तीनों कमिश्नरों से मिलकर करवा दीजिये।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, विषय खत्म हो गया। आप छुपा नहीं सकते, आप इस चीज को छुपा नहीं सकते।

श्री विजेंद्र गुप्ता : ये सिर्फ एक्सक्यूजेज हैं और कुछ नहीं हैं। अध्यक्ष जी, मजदूरों के प्रति आपको जवाबदेही ही नहीं बनना था।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये आराम से अब। एक सेकेंड भई राजेश जी, मैंने आग्रह किया आप से, दिल्ली की जनता के हित में आग्रह किया है आप तीनों कमिश्नरों से ये हां करवा दीजिये।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, उन्होंने ये बात तो कहीं नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : कही है उन्होंने।

श्री विजेंद्र गुप्ता : कहां कही हैं दिखाइये?

अध्यक्ष महोदय : अभी कहा है। आप लिख के ले लीजिए।

श्री विजेंद्र गुप्ता : पूरी योजना जब कागजों को पटल पर रखिये। आप क्या है....आप समझे तो नहीं, हवा में मत तीर चलाइये न।

....(व्यवधान)...

अध्यक्ष महोदय : अब बैठिये, वास्तविकता है जो, वही हैं

श्री विजेंद्र गुप्ता : खैर चलिए अब आप मेरा वो....

अध्यक्ष महोदय : मैं उसपर आपको रूलिंग दे चुका हूं। मैं आपको उस पर रूलिंग दे चुका हूं और अभी देखिए, हां मैंने कहा है कि ये पूरा हो जाए। मैंने कहा है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : तो दिक्कत क्या है अगर लोग मर रहे हैं और वो जो सुधाार करने का स्कोप है तो इस पर चर्चा करने में क्या दिक्कत है?

अध्यक्ष महोदय : मैंने कहा न मेरी पूरी बात सुन लीजिए। बजट मेमं इस पर चर्चा होगी जब एलजी के प्रस्ताव पर....

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री सत्येंद्र जैन जी।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक सेकेंड जैन साहब।

श्री विजेंद्र गुप्ता : सदन में आपने कमिटमेंट किया था। आपने खुद कहा था कि धयानाकार्षण प्रस्ताव पर चर्चा करवाई जाएगी। मैं चाहता हूं कि ध यानाकर्षण प्रस्ताव पर मंत्री जी रिप्लाई करें।

अध्यक्ष महोदय : आप मोशन ऑफ थैंक्स में ले आईए न, धान्यवाद प्रस्ताव में लाइये सारा, सब कुछ।

....(व्यवधान)

सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात

अध्यक्ष महोदय : श्री सत्येंद्र जैन जी वर्ष 2016-17 हेतु दिल्ली की आर्थिक सर्वेक्षण की प्रति सदन पटल पर प्रस्तुत करें।

शहरी विकास मंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से माननीय वित्त मंत्री की ओर से वर्ष 2016-17 के हेतु दिल्ली के आर्थिक सर्वेक्षण की प्रति सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं।[1]

अध्यक्ष महोदय : श्री सत्येंद्र जैन जी माननीय परिवहन मंत्री अपने विभाग से संबंधित अधिसूचनाओं की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगे।

शहरी विकास मंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्य सूची के बिंदू क्रमांक 3 के उप बिंदु 2 में दर्शाई गई निम्नलिखित अधिसूचनाओं की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं,[2]

1. राष्ट्रीय राजधाानी क्षेत्र दिल्ली हेतु राज्य परिवहन अधिाकरण के पुनर्गठन से संबंधित अधिसूचना संख्या फा.21(60)/सचिव/एसटीए/2009/203 दिनांक 26.10.2016।

2. 31.01.2017 तक सामान ले जाने वाले वाहनों के चलाने तथा निष्प्रयोजन पार्किंग के परीविक्षा समय के संबंधा में जारी अधिसूचना संख्या फा. 19(96)/परि./सचि./2010/228 दिनांक 25.11.2016।

3. मोटर वाहन अधिानियम 1988 तथा इसके अंतर्गत बनाये गये नियमों के तहत अपराधाों के लिए समाधाान शुल्क निर्धारित करने के संबंध में जारी अधिसूचना संख्या फा. 19(95)/परि./सचि./10/257 दिनांक 20.12.2016।

4. 01.02.2017 से सामान ले जाने वाले वाहनों के चलाने तथा निष्प्रयोजन पार्किंग के परीविक्षा समय के संबंधा में जारी अधिसूचना संख्या फा. 19(96)/परि./सचि./2010/19 दिनांक 01.02.2017।

---

1. पुस्तकालय में संदर्भ सं. .....पर उपलब्धा।
2. पुस्तकालय में संदर्भ सं. .....पर उपलब्धा।

धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा

अध्यक्ष महोदय : अब श्री कपिल मिश्रा माननीय पर्यटन मंत्री द्वारा उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर दिनांक 6 मार्च, 2017 को प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा में सदस्य भाग लेंगे, श्री राजेश गुप्ता जी, भावना गौड जी। (3.10)

सुश्री भावना गौड़ : धान्यवाद अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो कल 8 मार्च है और वूमेन्स डे पर एक महिला विधायक होने के नाते समस्त दिल्ली में रह रही महिलाओं की तरफ से मैं दिल्ली सरकार को बहुत शुभकामनाएं दूंगी, बहुत बहुत धान्यवाद दूंगी। विशेष तौर पर महिला यात्रियों के लिए शाम की शिफ्ट में जो होम गार्ड वहां पर लगाये गये, मार्शल तैनात किये गये और उनके साथ-साथ महिलाओं के लिए जो दिल्ली सरकार ने महिला स्पेशल लेडीज स्पेशल बसें चलाने का जो काम किया है, मेरी सरकार इन कामों के लिए बधाई की पात्र है। इसके साथ-साथ महिलाओं के लिए नॉन-कॉलजिएट सात नये कालेजों में नॉन-कॉलजिए सेंटर शुरू करना, ये दोनों तीनों काम विशेष तौर पर क्योंकि महिलाओं के हैं। अतः एक महिला विधायक होने के नाते क्योंकि हम समस्त दिल्ली में रह रही महिलाओं को रिप्रजेंट कर रहे हैं, उन सब बहनों की तरफ से दिल्ली सरकार को, आदरणीय अरविंद जी को मैं बहुत बहुत धान्यवाद दूंगी क्योंकि आज मोका है दिल्ली सरकार के द्वारा किए गए कामों का धान्यवाद देने के लिए मैं, विशेष तौर पर आपने मुझे आमंत्रित किया यहां पर अध्यक्ष महोदय, देखिये मुझे तो लगता है कि प्रत्येक राज्य चाहे उसमें कोई भी सरकार चुन कर के आये, उसका नैतिक कर्तव्य बनता है कि क्षेत्र में रह रहे मतदाताओं को स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध

ा करवायें, शिक्षा सेवायें उपलब्धा करवायें, पीने के लिए अच्छा पानी मिले, घरों से बाहर जब वो निकलें तो साफ सुथरी सड़कें मिलें। ये कोई हम एहसान नहीं करते। एक चुनी हुई सरकार के तौर पर ये हमारा एक नैतिक फर्ज बनता है, उस नैतिक फर्ज को निभाने के लिए ईमानदारी से वो सब काम हों, उसक लिए मुझे लगता है कि कोई एक ईमानदार व्यक्ति ही इस काम को कर सकता है। ईमानदारी की कोई भी योजना ईमानदार व्यक्ति के द्वारा ही स्थापित की जाती है। मैं इस सदन की तरफ से, विशेष तौर पर आदरणीय अरविंद जी को और मनीष जी को धान्यवाद दूंगी जिनके मार्ग निर्देशन में ये सरकार हमारी इस सरकार में काम कर रहे हमारे सरकारी अधिाकारी इस सरकार का हिस्सा जो हम सब विधाायक यहां पर उपस्थित हैं, उनकी देख-रेख में उनके मार्ग निर्देशन में ये सरकार जितनी सरलता से अपने कामों को जो घोषणा पत्र के अंदर हम लोगों ने वादा किया इस दिल्ली के अंदर चुनाव लड़ते समय, उन योजनाओं को हम बहुत ईमानदारी से लागू कर हरे हैं इसक लिए स्वाभाविक तौर पर आदरणीय अरविंद जी, आदरणीय मनीष जी बधााई के पात्र हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं तो एक चीज जानती हूं दिल्ली के अंदर हम चुने हुए प्रतिनिधाि निगम के अंदर लगभग 282 प्रतिनिधाि दिल्ली के अंदर विधाानसभा के 70 प्रतिनिधाि और लोकसभा के अंदर 7 प्रतिनिधाि, सब की मिला जुलाकर के संख्या लगभग साढ़े तीन सौ की 349 की संख्या होती है। दिल्ली में कुल आबादी लगभग पौने दो करोड़ है। इसका मतलब सीधाा सीधाा तय है कि परमात्मा के द्वारा इन 349 लोगों को विशेष सम्मान, विशेष दायित्व, विशेष जिम्मेवारी अगर किसी ने सौंपी तो उस परम पिता परमात्मा ने भी सौंपी है। मैं तो एक चीज जानती हूं कि हमारी सरकार में काम कर रहे हमारे मंत्री,

हमारे विधाायक और जिस तरह की योजनाएं हमारी सरकार ला रही है उन योजनाओं को लागू करने के पीछे जो हमारी सरकार मजबूती से काम कर रही है, हम विधााय को ने कम से कम अपना आगा और पीछा दोनों संवारना है। आगा कैसे संवारा है? जब हम अच्छी योजनाएं लेकर के आ रहे हैं जहां पीने के लिए पानी नहीं था, वहां पानी पहुंचाया। स्वास्थ्य सेवाओं के रूप में आदरणीय सतेंद्र जी जो काम कर रहे हैं, मोहल्ला क्लीनिक चला रहे हैं। नि:शुल्क हमने स्वास्थ्य सेवाएं लोगों को कैसे प्रदान करनी है, उसके लिए जिस प्रकार से काम किया जा रहा है तो स्वाभाविक तौर पर दिल्ली में आने वाले समय के अंदर जब हम इतिहास बनेंगे, तो लोग हमें और हमारी सरकार के किए गये कामों को याद करेंगे। इस तरह से हमने अपना आगा संवारा और हमने अपना पीछा कैसे संवारा? ठीक उसी प्रकार से जब क्योंकि अमर कोई भी व्यक्ति नहीं है। जब परमात्मा के घर जायेंगे तो वहां भी हमें विशेष सम्मान मिलेगा कि ये वही लोग हैं, उसी सरकार के साथ हैं, जिन्हें मै।ने पूरी ईमानदारी के साथ में सम्मान देकर के इस सदन का एक आदरणीय विधाायक बनाया और उन्होंने पूरी कर्मठता से और पूरी नीति कानूनों के अंतर्गत रहकर के इन योजनाओं को लागू किया, स्थापित किया।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, अभी मैं कुछ नैतिक जिम्मेवारियों का जिक्र कर रही थी। देखिए, पहले हम लोग डरते थे दिल्ली वासी सड़क पर कोई दुर्घटना हुई, हम आंख बचाकर के निकल जाते थे। क्योंकि हमें लगता था कि अगर इसमें हमारी थोड़ी सी भी....मैंने जाकर के इस पेशेंट को बचाया या मैंने पुलिस को कोई सूचना दी तो सबसे पहले पुलिस मेरे से ही पूछेगी कि क्या कारण है? नैतिक जिम्मेवारियों को निभाते-निभाते एक व्यक्ति का सबसे पहले व्यक्ति

बनाने का काम, उसकी इंसानियत को जगाने का काम अगर किसी ने किया तो मेरी सरकार ने किया, आम आदमी पार्टी की सरकार ने किया। सड़क पर कोई व्यक्ति अगर दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। उस व्यक्ति को हस्तपाल तक पहुंचाने का काम अगर जिम्मेवारी के साथ कोई व्यक्ति करेगा, अपनी कर्तव्य परायणता को अगर वो निभायेगा तो मेरी सरकार उसको पुरस्कृत करेगी, वो मेरी सरकार ने किया। इसके साथ-साथ एक और अद्भुत काम, ऐसे लोग जिनके पास रहने के लिए छत नहीं है, उनके लिए 197 की संख्या में जो रैन बसेरे बसाये हैं उसके लिए हमारी सरकार धान्यवाद की पात्र है। अकुशल कर्मचारी और अर्द्धकुशल कर्मचारियों के लिए न्यूनतम वेतन बढ़ाने का काम जो मेरी सरकार ने किया, ये वास्तव में अद्भुत कार्य है। देखिए, महंगाई दिन रात बढ़ रही है। आज के समय में चार हजार और पांच हजार की नौकरी करने वाला व्यक्ति, जो स्वयं को पालेगा या अपने परिवार को पालेगा। ये अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह है। मैं आदरणीय गोपाल जी को बहुत बहुत धान्यवाद दूंगी आपके नेतृत्व में श्रमिकों के लिए विशेष तौर पर धयान रखा गया और ये न्यूनतम वेतन वृद्धि को जो बढ़ाया है, अपने आप में एक बहुत ही अद्भुत कार्य है।

अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के अंदर अनओथराइज कालोनियों की संख्या बहुत अधिाक है। अनओथराइज कालोनियों में जो 1456 करोड़ रूपए निर्धारित हमारी सरकार के द्वारा किए गये, वहां के विकास कार्यों के लिए, इन अनओथराईज कालोनी में रहने वाले निम्न परिवार के व्यक्ति, मधयम परिवार के व्यक्ति सदा हमारी सरकार के ऋणी रहेंगे। जहां चलने के लिए रोड नहीं थे, जहां पानी की निकासी के लिए नालियां नहीं थी, जहां पर पीने के लिए पानी नहीं था,

अपने बजट का एक विशेष तौर पर अनओथराइज कालोनियों में काम करने के लिए एक बजट का प्रावधाान आम आदमी पार्टी की सरकार के द्वारा किया गया। मैं दिल्ली सरकार को बधााई देने के साथ-साथ में एक और विषय पर आपसे चर्चा करूंगी। मैं स्वयं पालन की विधाायक हूं। एक ऐसी विधाायक जहां लगभग तीस साल से पानी नहीं था और अक्सर लोग इस बात की चर्चा करते थे कि यहां शायद कभी कोई दिल्ली में ऐसी सरकार आये जो घर-घर पानी पहुंचाने का काम करे। टैंकर माफिया पनप रहे थे। हमसे पहले जीतकर के आये गये प्रतिनिधिा चाहे वो किसी भी राजनैतिक दल से ताल्लुक रखते हों लेकिन उन्होंने कभी भी इस तरफ प्रयास नहीं किया। आदरणवीय कपिल जी के नेतृत्व में दिल्ली की अनओथराइज कालोनियों के अंदर जिस तरीके से पानी पहुंचाने का काम हमारी सरकार ने किया, अब लोग कहने लगे हैं कि धारती के ऊपर जल आया था तो गंगा जी लाई थी लेकिन पालम में अगर जल आया है तो भावना का नाम बदलकर भागीरथी हो गया पालन में कि अगर पालम में जल आया है तो भावना लाई है। धारती पर जल आया था तो भागीरथी की वजह से आया है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, एक और विशेष एक ऐसा काम जब किसी व्यक्ति को वृद्ध को हम देखते हैं तो अक्सर हमारे पास आकर कहता था कि मुझे हजार रूपये मिलते हैं, पंद्रह सौ रूपये मिलते हैं। मेरा गुजारा नहीं होता बड़ी उत्साही निगाहों से वो आने वाली सरकार की और ताकता था और मैं विशेष तौर पर बधााई दूंगी और इस सदन में उपस्थित अपने सभी साथियों को कहूंगी के एक बार मेज थपथपाकर के हम अरविंद जी का स्वागत करें, गोपाल जी का स्वागत करें जिस तरीके से उन्होंने पेंशन में जो वृद्धि की है।

हजार रूपये वाली पेंशन को दो हजार रूपया किया और पंद्रह सौ रूपया वाली पेंशन को ढाई हजार रूपये किया। आप वास्तव में प्रशंसा के पात्र हैं।

मैं अगर शिक्षा जगत की बात करूं तो ऐसी शिक्षा जिसकी चर्चा भारत के अनेक राज्यों में ही नहीं, विदेशों में भी होती है। देखिए, चाहे कोई नेता बने या अभिनेता बने, इंजीनियर बने या डाक्टर बने हम चाहे किसी भी विभिन्न विभिन्न विभागों में काम करने वाले हम आफिसर हों लेकिन अगर कुछ जड़ में है तो हमारी शिक्षा, अगर देश को सुधाारना है, समाज को सुधाारना है तो सबसे पहले चुनी हुई सरकार का दायित्व होता है कि उसकी शुरूआत करे तो शिक्षा से शुरूआत करे। (3.20) मनीज जी ने शिक्षा क्षेत्र में जो-जो कदम उठाए हैं, स्वाभाविक तौर पर बहु सराहनीय है। 2015-16 में बारहवीं का रिजल्ट 89.25% और टेन्थ का रिजल्ट 95.81% । इस बात में अपने आपको हम लोगों को शाबाशी देता है कि शिक्षागत जगत में जिस प्रकार से काम कर रहे हैं, वो अपने आप में कितने अद्‌भुत हैं! राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालयों का परिणाम 99.62% जो ये रिजल्ट है, ये सब जगह एक चर्चा का विषय बना हुआ है। स्वाभाविक तौर पर जैसे कल हमारे साथी भाई कह रहे थे कि दुबारा से सरकारी विद्यालयों में जाने का मन करता है। एक ऐसे विद्यालय, जो साफ सुथरे विद्यालय हैं, अच्छी शिक्षा प्रदान करेंगे। अभिभावकों को लगने लगा है कि अब हमारे बालकों का भविष्य ये सरकारी विद्यालय बनाने वाले हैं। इस तरह की सोच में परिवर्तन लाना, अपने आप में ये जाहिर करता है कि दिल्ली सरकार चाहे वो कोई भी क्षेत्र हों, नि:शुल्क इलाज का क्षेत्र हो, मौहल्ला क्लिनिक बनाने का क्षेत्र हो, पोलीक्लिनिक खोलने का क्षेत्र हो, नई एंबुलेंस बनाने का क्षेत्र हो और मुझे लगता है कि दिल्ली का चहुंमुखी विकास,

उसके किसी भी कोने में जाकर के काम करने का काम अगर किसी ने किया तो हमारी आम आदमी पार्टी ने किया। मैं एक बार पुनः अपनी सरकार को, इस सरकार में काम कर रहे अपने सभी अधिाकारियों को, अपने साथी विध ाायकों को बहुत-बहुत धान्यवाद दूंगी, धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री राजेश गुप्ता जी।

श्री राजेश गुप्ता : अध्यक्ष जी, आपका बहुत-बहुत धान्यवाद, आपने मुझे बोलने का मौका दिया और मैं बहुत-बहुत धान्यवाद देना चाहता हूं नये एलजी साहब का, ना सिर्फ उन्होंने कल बहुत सारी बातें रखीं, उसके अलावा बहुत सारी फाइलें जो हमारी रूकी हुई थीं, उन्होंने पास कराई। दिल्ली की जनता जो बहुत परेशान थी और बहुत सारे सवाल पूछती थी कि जब इतने सारे काम हम कर रहे हैं, जमीन पर दिखाई भी दे रहें है लेकिन कुछ ऐसे काम जिनके लिए हम बहुत जोरों-शोरों से लगे हुए थे, वो हो नहीं पा रहे थे, बहुत ध ान्यवाद देता हूं उनका, जो उन्होंने फाइलें पास करी।

अध्यक्ष जी, कुछ सालों पहले जब हम सोचते थे, तो हम सोचते थे कि सरकार होती क्या है? अक्सर लोगों से पूछा जाता है कि भई नेता के बारे में अगर कोई बताए, किसी बच्चे से पूछा जाए कि नेता क्या होता है? तो शायद कहेगा कि जो जाति धार्म पर बांटते हैं, वो नेता होते हैं। ऐसा नेता तो किसी ने सुना नहीं था जो बार-बार कहे कि 'इंसान का इंसान से हो भाईचारा'। लोग कहते हैं कि सरकार वो होती है जो सिर्फ टैक्स बढ़ाती है। अब ये कैसी सरकार है जो ना तो टैक्स बढ़ा रही है, ऊपर से कहीं अगर गलती बढ़ जाए और थोड़े से लोग समझाएं कि जी, ये गलती हो गई है

तो माफी मांगकर उसे वापस ले ले। कोई वो नहीं, जब कि केंद्र में एक सरकार है जिसने 2012 में एक आंदोलन करा कि हम तो किसी भी तरीके से एक्साइज नहीं बढ़ने देंगे ज्वैलरी पर। लेकिन आ गए तो बढ़ा दिया और कोई मिलकर भी राजी नहीं हुआ। अब ये कैसी सरकार है कि वो कसाब की परिभाषा बताती है सेंटर में और दिल्ली में एक ऐसी सरकार है जो विकास की नई-नई परिभाषा बता रही है और विकास की परिभाषा? अगर मैं अपने तौर पर रखूं तो शायद विकास से तो मैं पहला तो कहूंगा विश्वास। तो विश्वास के यहां के मंत्री, यहां के विधाायक, यहां के मुख्यमंत्री ईमानदार है, ट्रांसपेरेंट है और हमेशा मिलने के लिए उपलब्धा है। 'क' से मैं कहूं तो कर्मयोगी है। किसी और चीज में यकीन नहीं करते, मुझे याद है आज से 3-4 साल पहले हारून जी का एक होर्डिंग हमारे ऑफिस में लगा हुआ था कि मैं धार्म में तो यकीन करता हूं लेकिन मुझे वोटों के लिए धार्म की जरूश्रत नहीं है और विकास में जो 'स' है उसका मतलब है समानता कि हमने हर वर्ग को, अभी मेरी बहन ने जिसतरीके से बताया लगभग हर वर्ग को, कोई भी नहीं छोड़ा। अगर शिक्षा की बात करें तो स्कूल्स की जो बिल्डिंग्स हैं, वो देखने के बाद भी ऐसा महसूस होता है कि हां, एक गर्व महसूस होता है कि हम ऐसी सरकार से जुड़े हैं कि जो साथ में अगर प्राइवेट स्कूल हो कोई, मेरे यहां पर है साथ में प्राइवेट स्कूल है, उसके साथ में सरकारी है। उसकी बिल्डिंग ना सिर्फ उससे एक मंजिल ऊपर है बल्कि इतनी खुबसूरत है कि देखने के बाद में दिल खुश हो जाता है।

इससे पहले की सरकारें तो ये चाहती थी कि कोई पढ़े ही ना। पढ़ लेंगे तो इनमें समझ आ जाएगी और समझ आ जाएगी तो जाति धार्म पर बंटेंगे

कैसक? लेकिन नहीं, इस सरकार ने ना सिर्फ इन बच्चों के लिए स्कूल बनाएं बल्कि रीडिंग मेले लगाए। जो सरकार का दायित्व नहीं था इस तरीके से कि रीडिंग मेले लगा रहे हैं और बच्चों को बुला रहे हैं जो पढ़-लिख नहीं पा रहे हैं कि आइये, आप पढ़िए और हमारे वॉलेन्टियर्स, विधाायक, पार्टी के पदाधिाकारी वहां पर जाकर उन बच्चों को पढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। ये तो कभी किसी सरकार ने सुना ही नहीं। नेता ऐसा थोड़े ही करते हैं! नेता तो पहले साढ़े चार साल गायब हो जाते थे और आखिरी के छः महीने के अंदर रिश्तेदारियां गुढ़ते थे, गांव का बंदा ढूंढते थे जो हमारे गांव का है। फिर आखिरी के 2-3 दिन पैसे बंटते थे, शराब बंटती थी। तो पहले साल में इतना काम करना, दूसरे में इतना काम करना ये तो कभी किसी से नहीं देखा। जैसे अभी अनिल जी बता रहे थे कि डेढ़ करोड़ की लाईटें लगा दी। हम भी लगाये चले जा रहे हैं। अब वो लाईटें 2-3 साल में फयूज होंगी। पहले के नेता सोचते थे कि पांचवे साल लगाओ। वो चमकी रहेगी तो ये देखो कितना बढ़िया काम हो रहा है। सरकार कुछ अजीब से तरीके से काम कर रही है और बहुत सारी चीजें हैं जो इसके अंदर है नहीं, जो सरकार ने नहीं करा। कौन बताएंगा? सरकार ने ईडब्ल्यूएस के एडमिशंस को विधाायकों के हाथ से बिल्कुल निकाल दिया, टोटली कंपयूटराइज कर दिया। ये तो इसमें मेंशन नहीं है। प्राइवेट स्कूल में आप एडमिशन नहीं करा सकते। मैं भी नहीं करा सकता क्योंकि उस कोटे के लिए आदरणीय शिक्षा मंत्री जी खुद जा रहे हैं कोर्ट के अंदर कि ये कोटे खत्म करो। इसमें ये नहीं लिखा कि जो पेंशन लगने जा रही है, उसके अंदर सिर्फ विधाायकों को हाथ नहीं है, उसमें एमपी भी लगा सकते हैं, उसमें कॉउंसलर भी लगा सकते हैं। पैसे देगी दिल्ली सरकार, पेंशन देगी दिल्ली सरकार,

पैसा देगी वो लेकिन एक आम आदमी भी ऑनलाइन बैठकर उसका रजिस्ट्रेशन करा रहा है। इसमें ये नहीं लिखा कि जो मेडिकल के बिल्स थे जो पहले कोई विधाायक फोन कर देता तो छूट जाया करते थे। आज हमारा एक विध ाायक अपनी माताजी का इलाज करा ले, हमारे भाई अखिलेश पति त्रिपाठी जी ने कराया था और गलती से उनका नाम डिपेंडेंट में नहीं था माताजी का तो सरकार ने फोन करके वो पैसे भरवा लिए। इसमें ये नहीं लिखा। इसमें ये नहीं लिखा कि ट्रांसफर-पोस्टिंग जो विधाायकों का सबसे बड़ा पैसे कमाने का जरिया था, वो इस सरकारमें सवाल ही नहीं पैदा होता कि कोई कर ले। इसमें ये नहीं लिखा कि जो क्रिकेट के पासेज लोग बांट दिया करते थे, मैंने तो आज तक कोई मैच 2 साल के अंदर टीवी पर ही देखना मुश्किल हो गया, आजकल तो जनता में हम इतने बिजी हैं करते जो पहले जाकर के देख लिया करते थे, इसमें एलजी साहब ने शायद उस बारे में बात नहीं करी। लालबत्ती वगैरह की तो बात ही छोड़ दीजिए। वो तो शायद बहुत पीछे चली गई।

आज एमसीडी के चुनाव होने जा रहे हैं। जितने भी दूसरी पार्टियों के वो लोग होते हैं जो विधाायक होते हैं, वो अपने-अपने लोगों को लाते थे, टिकटें बेचा करते थे। जिस तरीके से यहां पर स्क्रीनिंग होती है, वो एक अलग ही तरीका है। ये सब चीजें इसमें नहीं हैं कि कितनी ट्रांसपेरेंट, कितनी ईमानदार ये सरकार किस तरीके से काम कर रही है और यहीं एक विश्वास हैं, यहीं विश्वास के लिए लोगों ने दिखाया, मीडिया ने उसको इस तरीके से चाहे ना दिखाया हो, पर लोगों ने जो बहुत पब्लिसिटी करी, वो फैलते-फैलते उसकी खुशबू पंजाब तक इतनी पहुंच गई कि 11 तारीख को शायद आप बधाइयां ही लेते रह जाएंगे।

ये सरकार ना टैक्स बढ़ाती है, ना लोगों को तंग करती है। लोगों को वो काम देती है कि जो लोगों की मूलभूत सुविधाएं हैं, जिसके ऊपर 70 साल से बात हुई चली जा रही है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी कहते हैं 70 साल से विकास नहीं हुआ। वो 6 साल तो हमारे आदरणीय वाजपेयी थे, उनके भी ले गए उसमें, अटल बिहारी जी के, ढाई साल अपने भी गिन गए उसक अंदर अब 3 हो गए और उसके अलावा जो शास्त्री जी थे जो इतने ईमानदार प्रध ानमंत्री कहलाते थे, सबको गिन गए। सभी बेईमानी हैं, उनके अलावा। किसी ने कुछ काम ही नहीं किया। जो भी हुआ है, वो उनके आने पर हो रहा है। ये बहुत सारी चीजें ऐसी हैं जो बीच-बीच में है जिनके बारे में बात हो रही है।

इससे पहले भी स्वास्थ्य के लिए एमआईआर की मशीनें जाती रहीं। मशीन लग गई, पहले तो आने से पहले ही मुहूर्त हो जाता था। उसके बाद में चालू होने के बाद भी मुहूर्त हो जाता था, 20 दिन बाद में जो लगाते थे, वो ही उसके पेंच खोल लिया करते थे और फिर मशीन ठप्प। अब ये कैसी सरकार है जिसने कहा नहीं भई आप एक काम करो, प्राइवेट सेंटर में जाओ और जाकर अपना इलाज करो लो। अगर एक महीना सरकारी में आपका नंबर नहीं आ रहा है तो आप जाकर प्राइवेट में करा लो। ये समझ से परे है, लोग अभी तक ये समझ रहे हैं पैसा आएगा कहां से? लेकिन आदरणीय मुख्यमंत्री जी बार-बार बताते हैं कि पैसा तो एक पुल में ही 100 करोड़ रूपए बचा लिए जाते हैं। पैसा यहां से आएंगा? पैसा नियत से आता है।

ये सरकार जिस तरीके से काम कर रही है कि गैस्ट टीचर्स की तनख्वाहें बढ़ा दो। घटा तो कुछ है ही नहीं जब से ये सरकार आई है। हर एक को

फायदा मिलता चला जा रहा है। बुर्जुकों के लिए अगर मैं अपनी विधाान सभा की इसमें थोड़ा सा डिटेल देने की कोशिश करूं, तो बुर्जुगों के लिए एक बहुत बड़ा चार मंजिला लिफ्ट वाला एक रिटायरिंग सेंटर बनाया जा रहा है। बच्चों के लिए स्कूल की बात सब कर ही रहे हैं। वो तो सबको दिखाई दे ही रहा है। मौहल्ला क्लिनिक्स बनते चले जा रहे हैं इतने रोकने के बावजूद वो मौहल्ला क्लिनिक चल रहे हैं और एक मौहल्ला क्लिनिक में तकरीबन 70-80 आदमी रोज आ रहे हैं, फ्री इलाज करा रहा है एसी के अंदर बैठकर, दवाइयां सारी फ्री मिलती चली जा रही हैं। पानी के 20,000 लीटर के लोग पूरे मजे लिए चले जा रहे हैं कि वो जीरो आ रहा है। बिजली पर 2 साल से पैसे नहीं बढ़ने दिए। बहुत सारी चीजें ऐसी हैं कि लोग ये सोच रहे हैं कि इतने काम इतने आराम से हो कैसे गए। (3.30) जबकि इतनी सारी पाबंदियां थी। नीचे हमारे पास में एमसीडी नहीं थी, ऊपर में हमारे पास में केंद्र सरकार नहीं थी। डीडीए के पास में इतना पैसा है, डीडीए अपने पार्क में लाईटस नहीं लगवा पा रहा और हमारे विधाायक अपने पैसों से जो एमएलए फंड है, उसी से करवाये चले जा रहे है। ये सरकार शायद वो सरकार है ही नहीं। जैसे हम पहले कहते थे, ''पार्टी, पार्टी नहीं है, एक आंदोलन है।'' ये सरकार सरकार नहीं है, ये पूरे तरीके से लोगों के लिए....अब ये विपक्ष के नेता बाहर चले गये। भाई साहब कह रहे थे कि आम आदमी लगा देते हैं, हर आदमी, हर चीज के पीछे। तो ये क्यों मानते हें कि आम आदमी पार्टी का मतलब आम आदमी हैं। हमारा पूरा का पूरा जो लक्ष्य है, इस सरकार का, जो भी धयान हे, वो इस बात से है कि मूलभूत बेसिकस क्या चाहिए? एक बच्चे को पढ़ाई के लिए क्या-क्या चीजों की जरूरत है। एक लेडीज को, जब वो निकलती

है, अपने काम पर जाती है, जब वो रात को वापस आती है तो उसको लाइट की जरूरत है, वो हमने लगाई है। जब वो अपनी बस के अंदर आती है तो रात को गार्डस दिये ताकि वो आराम से, इत्मीनान से, शांति से वापस आ सके। हर वो चीज जो एक बेसिक जरूरत है, उस पर हमने धयान दिया है, हमने कोई....अब कह रहे थे आगे हम एमसीडी में करने वाले हैं, जो दिल्ली की बेसिक प्रॉब्लम है, एन्क्रोचमेंट और सफाई, वो भी हम एक महीने के अंदर बहुत ज्यादा दूर चीजें नहीं हैं, दो महीने ही हैं, उसके अंदर हम वो भी करके दिखा देंगे और इसमें हम लोगों को कोई शक नहीं है। अब लोग ये नहीं कहते कि सिर्फ बातें हैं, जुमले हैं, कह के निकल जायेंगे, भाग जायेंगे, साढ़े चार साल गायब हो जायेंगे, ए3सा नह.ी है। क्योंकि जहां विधाायक यहां बैठे हुए हैं, आप भी उनमें से एक हैं जिन विधाायकों को सुबह सात बजे, आठ बजे आके मिलना मुश्किल नहीं है, रात को 12 बजे उस विधाायक को ढूंढो तो कहीं शादी-ब्याह में ही घूमता रहता है तो उन पार्षदों का क्या होगा? उन्हें भी 24 आवर्स अवेलेबल होना पड़ेगा, सफाई करनी पड़ेगी, डेंगू, मलेरिया, हमने उसकी फॉगिंग की। इसमें ये मेंशन नहीं है, वो फॉगिंग हमने करी है अपने हाथों पे, मारे कार्यकर्ताओं ने खुद अपने कंधाों पर वो फॉगिंग मशीनें उठा के फॉगिंग की है। वो डेंगी मेलेरिया हमारी जिम्मेदारी नहीं थी, वो लोग बीमार हो गये तो उनके इलाज की जिम्मेवारी जरूर हमारे कुछ होस्पिटलस ने, एमसीडी के भी होस्पीटलस हैं, आपके आसपास होंगे, यहीं पास में ही हैं। विधाान सभा के, आप देखिए क्या हालात है? और दिल्ली सरीकार के होस्पिटल चकाचक एकदम फर्स्ट क्लास। आप जाइये तरीके से काम हो जायेगा, दवाइयां फ्री मिल जायेंगे। ये कैसे संभव है? इसमें बहुत सारी चीजें ऐसी हैं

जो सरकार कह नहीं पाती, समझ नहीं पाती, उस चीजों को उस तरीके से मीडिया रखती नहीं है। लेकिन धान्यवाद शब्द किसे दूं, आदरणीय मुख्यमंत्री जी को दूं, उप मुख्यमंत्री जी को दूं, सरकार को दूं, पार्टी को दूं, शायद धान्यवाद मुझे जनता का देना चाहिये। क्योंकि जनता ने ये मौका दिया, ये विश्वास दिलाया कि यही वो लोग है, क्योंकि 28 दिनों की सरकार के बाद लोगों ने ये कहा कि इतना बड़ा मौका छोड़ दिया, कोई वापसी करता है क्या? कोई रिपीट होता है क्या? लेकिन 28 दिन के बाद में 67 और 67 के बाद में और स्टेटस के अंदर सरकार। मैं सबसे पहले धान्यवाद आज उसजनता को देता हूं जो हमेशा आदरणीय मुख्यमंत्री जी पर विश्वास बनाये रखती है, हमेशा ये कहती रहती है कि अगर हमारे लिए कोई काम करन ेवाला है तो यही सरकार है, यही मुख्यमंत्री है, ये हमेशा हमारे लिए काम करते रहेंगे, बार-बार टीवी वाले दिखाते हैं कि वो गुस्सा करते हैं और एक बार मुझे आज भी याद है एक बार इंटरव्यू में अमेरिका में मुझसे पूछा गया था कि वो बहुत गुस्सा कहते हें, मैंने सुना है। मैंने कहा, ''वो गुस्सा लाजमी है, अगर मैं काम नहीं करूंगा मुझे इतने वोट मिले 67 लोगों की सरकार है अगर कार्ई काम नहीं करेगा तो गुस्सा होना चाहिए, ये गुस्साजनता का है, उनका व्यक्तिगत नहीं है। व्यक्तिगत तौर पर तो होली को मिल लीजिएगा। देखिये, मुख्यमंत्री जी कब बैठते हैं ऐसे? कौन मुख्यमंत्री ऐसे बैठता है कि आओ, ओर जो मर्जी गालों पर रंग लगा लो।'' ये व्यक्तिगत गुस्सा नहीं है ये काम का गुस्सा है और ये गुस्सा जारी रहेगा, मेरे साथ भी, अधिाकारियों साथ भी, काम नहीं होगा तो। और जो काम करेगा, उसके लिए सरकार बांहें खोल के खड़ी हैं आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : माननीय नेता विपक्ष, विजेंद्र गुप्ता जी, मेरी आवाज सुन रहे हों, जहां भी कहीं हैं, आज इस चर्चा में भाग लेने के लिए वो सदन में आयें तो अच्छा रहेगा। धान्यवाद। राखी बिड़ला जी।

सुश्री राखी बिड़ला : धान्यवाद, अध्यक्ष जी कि आपने मुझे एलजी साहब के अभिभाषण पर बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, मुझसे पूर्व वक्ताओं ने दिल्ली सरकार ने पिछले दो साल में क्या काम किया, उस पर प्रकाश डाला और मुझसे पूव्र वजीर पुर से विधाायक भाई राजेश गुप्ता ने भी ये बताया कि अभिभाषण में वो चीजें नहीं हैं जो दिल्ली सरकार ने की हैं। कुछ मेन हैडलाईस दी हैं, लेकिन कुछ बेसिक चीजें हो इसमें लिखी नहीं गई और मैं धान्यवाद देती हूं हमारे नेता प्रतिपक्ष जी विजेंद्र गुप्ता जी को कि वो आकर सामने बैठे हैं और पूरे हमारे मैम्बर्स को और जनता को कि उन्होंने इतना ऐतिहासिक मैंडेट देकर इतना विश्वास जताकर हम लोगों को भेजा, लेकिन हर बार की तरह मैं इस बार भी कुछ ऐसे बेसिक मुद्दों पर प्रकाश डालना चाहती हूं जो लगता है कि ये सरकार का नहीं, बल्कि अलग सोच के लोगों का काम हो सकता है।

अध्यक्ष जी, मई, 2014 में केंद्र में सरकार बनी और फरवरी 2015 में दिल्ली में एक सरकार बनी। उस सरकार ने भी कुछ वायदे लेकर, कुछ घोषणाएं लेकर अपनी गद्दी सम्भाली और इस सरकार ने भी जनता के बीच में जाकर जो वायदे किए उसको स्वीकार करते हुए अपनी कुर्सी ली, लेकिन डिफ्रेंस क्या था, हम सिर्फ यहां पर धान्यवाद देकर चलें जायें, ये काफी नहीं है। इस सदन में आते हैं जनता की आवाज बनाकर और इस पवित्र स्थल पर हमें लगता है कि हमें तुलना भी करनी चाहिए कि केंद्र की सरकार जिसको पूरा देश

चलाने के लिए प्रचंड ऐतिहासिक बहुमत इस देश की जनता ने दिया और एक छोटा सा राज्य जिसके पास पूरी शक्ति नहीं है दिल्ली, वहां की भी जनता ने वहां पर एक साधाारनण सी सरकार को एक साधाारण से लोगों को प्रचंड बहुमत के साथ भेजा और इस ढाई-तीन साल के अंतराल के अंदर क्या दिल्ली सरकार ने किया और क्या केकंद्र सरकार ने किया, इस पर विचार करना बहुत जरूरी है। मीडिया के बंधाुओं के माधयम से, यहां पर बैठे लोगों के माध यम से बात जनता तक पहुंचनी बहुत जरूरी है कि जब केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार आई तो वो इस जुमले के साथ आइ कि जब हम लोग केंद्र में आयेंगे, हमें जिताकर आप भेजेंगे तो हर गरीब के अकाउंट में हम 15 लाख रूपये भेजेंगे और उसी पार्टी के अध्यक्ष ने एक डेढ़ साल बाद एक इंटरव्यूव के दौरान कहा कि जो है, चुनाव के दौरान इस तरह के जुमले, इस तरह के वायदे हो जाया करते हैं, लेकिन वहीं अरविन्द केजरीवाल की सरकार थी, अरविन्द केजरीवाल की पार्टी थी, वो इस वायदे के साथ दिल्ली के इस चुनाव में उतरी कि अगर आम हमें दिल्ली की सरकार में बिठाते हैं तो जीतने के तुरंत बाद हम बिजली के दाम आधो करेंगे और पानी माफ करेंगे। हमने करके दिखाया। 14 फरवरी 2015 को अरविंद की कैबिनेट ने शपथ ली और 19 फरवरी, 2015 को हमने बिजली के दाम आधो करके दिखाये। ये है अरविंद केजरीवाल की सरकार, ये नीयत कि हम क्या करना चाहते हैं, क्या हमारा प्लान है और किस तरह से हम जनता से जो वायदे करते आये हैं, उन्हें कैसे हमें पूरा करना है। सिर्फ बिजली के ही दाम हम लोगों ने आधो नहीं किये, हमने ये वायदा किया था कि 2014, नवम्बर तक जितने भी पानी के बिल हैं, चाहे किसी का एक हजार का पानी का बिल है या फिर किसी का एक

लाख का पानी का बिल है, वो सारे के सारे बिल हम माफ करेंगे और हमने करके दिखाया। ना सिर्फ हमने बिलों को माफ किया जो रूके हुए थे, बल्कि 20 हजार किलोमीटर तक पानी फ्री दिया जो कि आज जन-जन तक उसका फायदा ले रहे हैं। उसका जो है, जीरो बैलेंस का बिल आ रहा है। ये संभव तभी हो पाता है अध्यक्ष जी, जब नीयत साफ हो, ये तभी संभव हो पाता है, जब नेतृत्व आपका ईमानदार हो और ये संभव तभी हो पाता है, जब आपका कुछ कर गुजरने का सपना है। ये तब संभव नहीं हो पाता, जब आप देश को जाति, धार्म, मजहब में बांटने की इच्छा रखते हो, ये तब संभव नहीं हो पाता है, जब आप दंगे कराने का सपना देखते हो और सत्ता कुर्सी हथयाने का लालच हो।

अध्यक्ष जी, मई में जो सरकार बनी केंद्र की और जो फरवरी में दिल्ली की सरकार बनी, उसमें तमाम ऐतिहासिक काम करे वो कैसे ऐतिहासिक काम करे वो मैं आपको बताना चाहती हूं। एक तरफ हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि मैं ना खाऊंगा और ना खाने दूंगा और जो भी घोटाला होगा, जो भी कुछ होगा उस पर तुरंत लगाम लगाऊंगा लेकिन केंद्र में उनके आने के बाद मधयप्रदेश में जो 10 साल से लगातार उनकी सरकार है, वहां एक व्यापम घोटाला होता है, वहां पर आवाज नहीं उठाई जाती है। उसके मुख्यमंत्री के खिलाफ आवाज नहीं उठाई जाती है। जब कि खुलकर नाम आता है लेकिन हमारी एसीबी पर तुरंत जो है, कब्जा कर लिया जाता है ताकि हम लोग घोटाले बाजों के खिलाफ, भ्रष्टाचारी सेंटर के अधिाकारियों के खिलाफ आवाज ना बुलंद ना कर सकें। उनके खिलाफ हम केस ना दायर कर सकें। ये इनका असली चेहरा है। खुद कहते हैं ना खाएंगे और ना खाने देंगे और दूसरी ओर जब

भ्रष्टाचारियों पर काम करने के लिए तत्पर है दिली की सरकार, तो उनकी एसीबी को हथिया लिया जाता है ये इनका असली चेहरा है।

एक तरफ अध्यक्ष जी ये कहते हैं कि मैं देश का चौकीदार हूं, देश को बचाने का दायित्व देश की जनता ने मुझे सौंपा है, लेकिन दूसरी ओर यहां से 9 हजार करोड़ का विजय माल्या घोटाला कर कर जाता है, पैसे हजम करके जाता है, उस पर ये कोई एक्शन नहीं लेते हैं। लेकिन आम आदमी पार्टी का कोई विधाायक, कोई सरकारी काम कराने के लिए किसी बेटी के ऊपर हुए बलात्कार के खिलाफ आवाज उठा दे तो उसे तुरंत जेल में डाल दिया जाता है। सर जी, ये इनकी असली मानसिकता है और इनकी सोच का परिचय है।

एक ओर जहां पर बीजेपी के लोग कहते हैं कि हम लोग देशहित में काम करते हैं, देश को आगे बढ़ाने के लिए हिंदुत्व का काम करते हैं, (3.40) बेटियों का सम्मान करते हैं तो दिखता है कि जब एक बेटी अपना अधिाकार मांगती है, अभी चर्चित बहुत घटना है, गुरमेहर की। उन्हें खुले रेप करने की चुनौती दी जाती है। वहीं पर अरविंद केजरीवाल की सरकार है, जब आम आदमी की किसी बेटी के साथ जब ये घटना होती है, जब किसी बेटी पर अत्याचार होता है। आनंद पर्वत की घटना आपने सुनी होगी तो यही वो सत्र है, यही वो सरकार है, विशेष सेशन महिला सुरक्षा के मुद्दे पर बुलाती है और जो वहां पर चर्चा करके और उसके लिए एक कमीशन का गठन करके जिसको कि एलजी साहब ने पारित नहीं किया, निरस्त कर दिया कि जो मीनाक्षी का मर्डर केस हुआ था, उस पर इन्क्वायरी नहीं बैठेगी।

एक ओर ये महिलाओं को खुले आम रेप की धामकी देते हैं। अध्यक्ष जी प्रधानमंत्री का संसदीय क्षेत्र है, बनारस। बनारस में एक युनिवर्सिटी है बीएचयू। वहां की स्टूडैंट का पिछले दिनों इंटरव्यू आया था कि अगर वो होस्टल में हो रही अनियमितताओं का, होस्टल में हो रही खराबियों के खिलाफ आवाज उठाती है तो जो है उन्हें खुले आम रेप की धामकी दी जाती है। यहीं पर, रामजस कॉलेज में जो हुआ, वो हम सबके सामने है। एक तरह से ये बोलते हैं कि हम लोग देश को बढ़ाने के लिए देश भक्ति का नारा लगाते हैं, तमाम चीजें करते हैं लेकिन वही जब एक सैनिक अपने खाने के लिए जो कि एकदम जानवरों को भी ऐसा खाना नहीं दिया जाता, वह अपने अच्छे खाने के लिए अपने अधिकार के लिए आवाज उठाता है तो सैनिक को एक दम अंडर ग्राउंड गायब कर दिया जाता है, पता नहीं चलता है। कारगिल में शहीद एक बाप की बेटी जब आवाज उठाती है अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के लिए तो उन पर लाठीचार्ज की जाती है। ये है सर! और वहीं पर अरविंद केजरीवाल की सरकार बच्चों की शिक्षा पर बच्चों के स्वास्थ्य पर, महिलाओं के लिए, बुजुर्गों के लिए तमाम कार्य कर रही है और वहीं पर इनके मधय प्रदेश के एक बहुत ही बहुचर्चित नेता हैं कैलाश विजयवर्गीय जी। इनकी राज्यसभा की एक सांसद है रूपा गांगुली जी कोलकाता की एक नेता है, जूही चौधारी इन सब पर बच्चों की तस्करी के आरोप लगे हैं। अध्यक्ष जी, ये सब चीजें इस लिए बताना जरूरी है, मुझे पता है कि मुझे एलजी के अभिभाषण पर धान्यवाद देना है लेकिन साथ-साथ यहां बैठे लोगों की नजरें भी खोलनी है कि एक तरफ दिल्ली में जो सरकार है, वो इन्सानियत के काम कर रही है, मानवता के लिए काम कर रही है और एक केंद्र में बैठी भाजपा की सरकार है जिसने

आज चारों ओर त्राहि-त्राहि कर रखी है देश पर अत्याचार और देश के नागरिकों के ऊपर अत्याचार को रोक नहीं पा रहे हैं। इस तरह का जो है पूरा का पूरा परिवेश बना दिया है कि अगर भारत माता की जय बोलें तो मारा जाता है और अगर ना बोलें तो मारा जाताहै।

अध्यक्ष जी, एक ओर जहां पर दिल्ली सरकार तमाम तरीके के होर्डिंग्स, बैनैर्स एडवरटाईजमेंट के माधयम से लोगों को प्रेरित करती है कि वो टैक्स भरने के लिए हर सामान को खरीदते हुए बिल बनवाओ और इनाम पाओ योजना का हिस्सा बनें। एजुेकशन के लिए बताया जाता है कि कोई भी अगर एजुकेशन माफिया सरकारी स्कूल के बदले प्राईवेट स्कूल में अगर आप एडमिशन लेते हें, पैसा लेता है तो हमसे संपर्क करें। सरकाीर कार्यालयों में अगर आप कल काम कराते हें, उसके एवज में अगर कोई सरकार अफसर या हमारा खुद का काकेई विधाायक रिश्वत मांगता है तो आप हमें संपर्क करें। इस तरह के एडवरटाईजमेंट देरक लोगों को उनके हितों के लिए जागरूक करती है दिल्ली सरकार। वहीं पर इस देश में एक गुजरात की सरकार है जो गधाों काप्रचार करने के लिए पैसे देती है। टीवी पर, टीवी चैनल्स पर गुजरात के गधाों का प्रचार होता है और आज उन्हीं दो गधाों ने पूरे देश का सत्यानाश कर रखा है। जहां देखो, दंगें, जहां देखो, अमानवीय हरकतें, जहां देखो महिलाओं पर अत्याचार, जहां देखो भ्रष्टाचार। ये इस तरह की बीजेपी की शैली है। एक ओर जहां पर हमारी सरकार, आम आदमी पार्टी की सरकार अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व की सरकार चाहे फलाई ओवर्स का निर्माण हो, स्कूल की बिल्डिंग का निर्माण हो, किसी और अन्य काम का निर्माण हो, वहां पर जो अनुमानित बजट होता है, उससे कम बजट में और कम समय में कार्य करके देती है

और वहीं पर एमसीडी की बीजेपी की सरकार है जो कि पिछले दस सालों से ऊपर काबिज है। एक पुल पिछले 20 सालों से दिल्ली के अंदर बन रहा है, उसकी अनुमानित आय 37 करोड़ थी और उस पर 20 सालों में लगातार अनुमानित आंकड़ें बढ़कर 300 करोड़ के पार पहुंच चुके हैं। ये इनका असली चेहरा है। ठीक इस तरह से काम करते हैं। क्या रणनीति है और किस तरह की इनकी सोच है। इन्हें लगता है कि झूठे नारिय फुड़वाकर, काम को रोक कर लगातार हम वोट पाएंगे और सत्ता पर काबिज होंगे। लेकिन अब ऐसा नहीं होने वाला है। अब दुनिया जाग चकी है, जनता जाग चुकी है।

एक ओर जहां पर अध्यक्ष जी, हमारी एमसीडी की सरकार कहती है कि इनके पास पैसे नहीं है, सफाई कर्मचारियों की सैलरी देने के लिए। इनके पास पैसे नहीं है, तमाम जनहित की योजनाएं, बुजुर्गों की पेंशन देने के लिए, लेकिन समझ नहीं आता अध्यक्ष जी, हर दूसरे दिन देखते हैं हम रेडियो पर लगातार दो-दो मिनट के इनके एड होते हैं, उसके लिए इनके पास पैसा कहां से आ जाता है? एमसीडी के जो पोल्स हैं, जहां पर एक-एक महीने का रेंट ऐड का, एक से डेढ़ लाख रूपया जाता है। अभी जो निगम पार्षद नहीं बने हैं, उम्मीदवार जो कि प्रत्याशी बनने की उम्मीद रखते हैं, उनके जो है लगातार एडवरटाईजमेंट देखने को मिलते हैं। अध्यक्ष जी, ये सोचने की जरूरत है, समझने की जरूरत है कि देश का विकास कौन कर सकता है और देश में बैठे जो सेंटर के लोग हैं, वो देश को किस ओर लेकर जा रहे हैं।

अध्यक्ष जी, गांधी जी का सपना था, राम राज्य का। गांधाी जी चाहते थे कि आजादी के बाद जब ये भारत वर्ष आजादी की सुबह देखे तो देश

के हर कौने में राम राज्य आए। जहां पर आखिरी पंक्ति में खड़े हुए व्यक्ति के विकास के बारे में सोचते हुए सरकार योजना बनाए। बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है अध्यक्ष जी, आजादी से लेकर आज तक कोई भी ऐसी सरकार नहीं आई है कि जो कि गांधाी जी के सपने को पूरा कर सके। सब गांध ाी जी के नाम पर वोट तो मांगते हैं कोई गांधाी जी के हत्यारों की पूजा भी करते हैं लेकिन आज तक गांधाी जी के इस राम राज्य के सपने को कोई पूरा नहीं करपाया है और बीजीपी से हम उम्मीद भी नहीं कर सकते जो आज सैंटर में बैठी है कि वो गांधाी जी के इस राम राज्य के सपने को पूरा करेगी, लेकिन अरविंद केजरीवाल की सरकार ने इस रामराज्य का जो गांधाी जी का सपना हैउ से पूरा करके दिखाया है। इस सरकार की हरेक नीति, इस सरकार की हर एक कार्यशैली, उस चीज को धयान में रखकर बनाई जाती है कि आखिरी पंक्ति पर खड़े हुए व्यक्ति काइस पर क्या असर पड़ेगा, क्या प्रभाव उस पर पड़ेगा। उसका मानसिक विकास होगा या नहीं होगा। उस का आर्थिक विकास होगा या नहीं होगा। उसका शैक्षणिक विकास होगा या नहीं होगा और ये हमारी तमाम जो नीतियां हैं इस माधयम से साबित होता है कि राम राज्य का असली जो सपना पूरा कर रही है, वो आम आदमी पार्टी पूरा कर रही है।

अध्यक्ष जी, जो संघ के संस्थापक थे, पंडित दीन दयाल उपाधय जी, उनका खुद का सपना था और उन्होंने खुद कहा था कि सरकार अगर कोई भी योजना बनाती है तो सरकार को आखिरी पंक्ति में खड़े हुए व्यक्ति का धयान रखना चाहिए। लेकिन यहां पर पंडित दीन दयाल उपाधयाय के सपने पर भी पानी फिरता हुआ नजर आ रहा है क्योंकि केंद्र में बैठी हुई मोदी सरकार के लिए

आखिरी पंक्ति में खड़े हुए जो लोग हैं, वो अडानी और अम्बानी हैं। केंद्र सरकार की कोई भी योजना होती है, हाल ही में 8 नवम्बर को जो नोटबंदी का फैसला आया, वो भी अडानी और अम्बानी को धयान में रखते हुए ही लिया गया है और उसके कितने कुप्रभाव देश की जनता पर पड़े, कितने लोग बैंकों की लाईनों में खड़े हुए मरे, इससे इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। इन्हें इस बात से जरूर फर्क पड़ता है कि अडानी और अम्बानी का विकास होना चाहिए। अडानी और अम्बानी को जो लाभ मिलना चाहिए, उसके लिए इन्होंने देश की जनता के हित, देश की जनता के अधिाकार, देश की जनता का मैन्डेट सब कुछ दरकिनार करके सिर्फ और सिर्फ पूरा कर रहे हैं अडानी और अम्बानी की। लेकिन आम आदमी पार्टी की सरकार में इतनी हिम्मत है कि जब 49 दिन की हमारी सरकार आई थी तो यही अरविंद केजरीवाल था जिसने अडानी ओर अम्बानी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। क्योंकि ये लोग चुनाव लड़ते हैं, उसके अहसान के नीचे, ये लोग चुनाव लड़ते हैं, उनके पैसों से, लेकिन हम लोग चुनाव लड़ते हैं जनता के आशीर्वाद से। और जो-जो जनता के खिलाफ खड़ा होगा, हम उसके खिलाफ खड़े होंगे। अध्यक्ष जी, सिर्फ इतना ही नहीं, लगातार आए दिन जो नए ऐतिहासिक कदम दिल्ली सरकार उठा रही है, चाहे वो हमारे श्रमिकों के लिए हो, जो हमने वेजिज बढ़ाए, गेस्ट टीचर्स के लिए हों, जो हमने अभूतपूर्व उनकी सेलेरी में बढ़ोतरी की है, चाहे वो बुजुर्गों की पेंशन का मामला हो, चाहे वो हैल्थ सेक्टर में तमाम तरीके के टैस्ट आपरेशन फ्री करने का मामला हो, बेसिक एजुकेशन से लेकर हायर एजुकेशन में नए-नए इतिहास रचने का मामला हो। ये तभी संभव हो सकता है जब आपकी नेतृत्व क्षमता में ईमानदारी झलकती हो और यहां के नेतृत्व क्षमता जो कि केंद्र सरकार

की है, उसमें सिर्फ दंगों के अलावा सिर्फ तेरा मेरा के अलावा सिर्फ सांप्रदायिकता, धार्म, जाति के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता। यहां पर मौजूद तमाम लोगों के माधयम से मैं इस बात को कहना चाहती हूं कि सिर्फ दो साल हुए हैं दिल्ली सरकार को और इतने ऐतिहासिक काम किए हैं, हमने कभी नही सोचा था, न कभी देखा था कि कि झुग्गी वालों को जो सम्मानजनक जीवन जीने का अधिाकार मिलेगा। लेकिन कर के दिखाया, सपना पूरा किया। नारा लेकर आए थे कि जहां झुग्गी होगी वहीं मकान होंगे....

अध्यक्ष महोदय : राखी जी कन्कल्डू करिए, कन्कल्डू करिए प्लीज।

सुश्री राखी बिड़ला : ....और इस सपने को पूरा करते हुए हमने देखा कि सात हजार झुग्गीवासियों को अभी तक पक्के मकानप माननीय वित्त मंत्री जी के माधयम से मिल चुके हैं।

अध्यक्ष जी, दो बड़ी बात, एक तो ये कि इन्होंने लंदन वाला ब्यान बोला। मैं कहती हूं कि तीन साल पहले माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा था कि वो काशी को टोकियो बना देंगे। आज को ये नवभारत का लेख है कि क्या काशी बनता है टोकियो! आकर प्रश्न चिन्ह खड़ा होता है। एक प्रधान मंत्री पद की गरिमा को किस तरह से तार-तार किया है, बेहद दु:ख होता है कि वो जाकर बनारस में इस चीज के लिए रैली कर रहे हैं कि मुख्य मंत्री कौन बनेगा। शर्म आनी चाहिए। पिछले 72 घंटे से देश का प्रधान मंत्री, देश के सभी केंद्रीय मंत्री, देश के सभी सांसद बनारस में डेरा डालकर पड़े हैं और दिल्ली को सूना छोड़ा हुआ है, शर्म आनी चाहिए, शर्म आनी चाहिए अध्यक्ष जी इन लोगों को। ये क्या करते हैं? क्या करते हैं ये?

अध्यक्ष महोदय : राखी जी कन्कल्डू करिए। अब कन्कल्डू करिए राखी जी प्लीज।

सुश्री राखी बिड़ला : सरकार का ही काम बता रहे हैं। सरकार का ही। दोनों सरकारों के काम बता रहे हैं। मिर्ची क्यों लग रही है आपको? क्यों मिर्ची लग रही है? सच्चाई बर्दाग्श्त नहीं होती, सच्चाई बर्दाश्त नहीं होती। अपने कुकर्म सुने नहीं जा रहे आपसे, कुकर्म सुने नहीं जा रहे हैं केंद्र सरकार के किस तरह से कुकर्म कर रहे हैं, 3.50 सत्यानाश कर रखा है कि आज छात्र दुखी हैं, सारी महिलाएं पीड़ित हैं, किसान दुखी है, दलित दुखी है, मजदूर दुखी है। क्या करना क्या चाहते हैं आप? देश को बर्बाद करके छोड़ेंगे क्या आप? चाहते क्या हैं आप लोग? आपसे अपने काम तो संभलते नहीं हैं और दूसरों के काम में रोड़ा अड़ाएंगे। आप अड़ंगा अड़ाएंगे। आपने दक्या कर दिया तीन सालों में जरा बताइए न हम लोगों को और एमसीडी में 10 सालों में क्या कर दिया। देश का बेड़ा-गर्क कर दिया, दिल्ली की बेड़ागर्क कर दिया। अगर कोई सरकार काम करना चाहती है, स्वास्थ्य सेवाएं देना चाहती है, बेहतर शिक्षा देना चाहती है, बेहतर वातावरण देना चाहती है तो आप अड़ंगा अड़ाएंगे? शर्म नहीं आप लोगों को। चाहते क्या हैं आप लोग? जब दिल्ली के आम लोग जाए पंजाब में प्रचार करने तो दिल्ली से हम लोग भगोड़े हो गए और आज केंद्र के सभी मंत्री, केंद्र का प्रधानमंत्री भगोड़ा नहीं है। क्या आज प्रधानमंत्री भगोड़ा नहीं हुआ? वो तीन दिन से पड़ा है बनारस के अंदर। उसे शर्म नहीं आती है। वो बनारस में चुनाव लड़वाने गया है या उसे जनता ने दिया था देश सुधाारने का मेंडेट या उसे बनारस में चुनाव लड़ने का कॉन्ट्रेक्ट दिया था। तीन साल में अगर वो तीन काम भी कर देते न तो आज उन्हें इतना बड़ा, जो उन्हें आज इतना बड़ा।

श्री विजेंद्र गुप्ता : इनके पास बताने के लिए कोई काम नहीं है क्या? ये नहीं बताना चाहते।

अध्यक्ष महोदय : बहुत बहुत बताएं हैं, बहुत बताएं हैं बैठिए, बैठिए।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आपने क्या किया है दो साल में?

सुश्री राखी बिड़ला : हमने बताएं हैं न आपको बताया आप ये पढ़िए, आप पढ़िए इसको आप बैठ जाइए, बैठ जाइए। आप लोगों को बिल्कुल शर्म नहीं आती। जनवरी से लेके आज तक गैस के दाम 185 रूपए बढ़ गए। आप क्या करना चाहते हैं, इसी पर बोल रहे हैं। इसी पर बोल रहे हैं, इसी पर बोल रहे हैं लेकिन इसके साथ-साथ कि जनता ने मेंडेट केंद्र को भी दिया और जनता ने मेंडेट दिल्ली सरकार को भी दिया। दोनों का, दोनों के बारे में बात करने का हमारा अधिाकार है, दोनों के बारे में ात करने का अधि ाकार है। क्यों आपको जनता ने मेंडेट नहजीं दिया? महंगाई बढ़ाने के लिए जनता ने मेंडेट दिया था? खुले आम महिलाओं को रेप का चैलेंज देने के लिए महिलाओं ने मेंडेट दिया था? दलितों पे अत्याचार करने के लिए जनता ने मेंडेट दिया था? जाति, धार्म पे बांटने के लिए जनता ने मेंडेट दिया था या उस प्रधानमंत्री को परिधाानमंत्री बनाने के लिए जनता ने मेंडेट दिया था? विदेशों में घूमने के लिए उस प्रधानमंत्री को मेंडेट दिया था? शर्म आनी चाहिए आप बीजेपी को लोगों को। आप हर जगह राजनीत करते हैं। आपको एप्रिशिएट करना चाहिए दिल्ली सरकार को, दिल्ली के मुख्यमंत्री को कि पूरी शक्ति न होने के बावजूद भी, केंद्र सरकार के अड़ंगे होने के बावजूद भी ऐतिहासिक काम करे। लोगों के जीवन सुधाारने के काम करे, चाहे वो घर-घर पानी पहुंचाने

का मामला हो, बच्चों की शिक्षा का मामला हो, मुफ्त में स्वास्थ्य सुविधाएं देने का मामला हो। लेकिन मेरा अधिकार है केंद्र की सरकार में जो बैठे हुए काम कर रहे हैं, उस पर भी मेरा बोलने का पूरा अधिाकार है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : एक काम नहीं बताया आपने।

सुश्री राखी बिड़ला : क्या-क्या नहीं बताया! इतनी देर से काम तो बता रहे हैं, सुनने की इच्छाशक्ति तो रखो, सुनने की इच्छाशक्ति तो रखो।

अध्यक्ष महोदय : भाई विजेंद्र जी टोका टाकी मत करो, विजेंद्र जी, ये अच्छी बात नहीं है फिर बोलोगे तो टोका टाकी करेंगे सब लोग, आप बोलोगे तो टोका टाकी करेंगे। राखी जी।

सुश्री राखी बिड़ला : खुद से काम होता नहीं है। हां, तो किसने मना करा? अभी चर्चा नहीं हो रही है? किसने मना करा है? बैठे पहले चुप होके, पहले बैठके सुनना सीखो।

अध्यक्ष महोदय : राखी जी, पहले कन्क्लूड कीजिए, राखी जी।

सुश्री राखी बिड़ला : आपको भी और बीजेपी को भाषण प्रतियोगिता जीतनी है क्या? आपका प्रधानमंत्री से लेके छोटे से छोटा....मंडल अध्यक्ष भी भाषण देते हैं, भाषा प्रयियोगिता जीतने आए हैं आप बस।

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी बैठिए।

सुश्री राखी बिड़ला : आपकी प्रतियोगिता यहां नहीं हो रही है, आराम से बैठो। आज तक आपने रोहिणी का एक भी मुद्दा उठाया है? अपनी विधाान सभा का एक भी मुद्दा उठाया है? नेता बनने के लिए आप नहीं

हाए हैं यहां पर, जनता विकास के लिए और जनता के हक के काम के लिए आए है।

अध्यक्ष महोदय : राखी जी, अब कन्क्लुड करिए, राखी जी।

....(व्यवधान)

सुश्री राखी बिड़ला : आप बैठिए, आप बैठिए, आप बैठिए।

अध्यक्ष महोदय : राखी जी कन्क्लुड करिए प्लीज।

....(व्यवधान)

सुश्री राखी बिड़ला : आप बैठिए, आप बैठ जाइए। बीजेपी वालों कोशर्म आनी चाहिए किस पार्टी के हो आप? शर्म आनी चाहिए, शर्म आनी चाहिए! खुलेआम बेटियों को रेप की धामकी देते हो, शर्म आनी चाहिए! शर्म करो शर्म, शर्म करो, शर्म करो गुजरात नहीं बनने देंगे देश को। 2002 के दंगे दोबारा नहीं दोहराए जाएंगे, चुप होके बैठ जाओ, बैठ जाओ। मैं डरती नहीं। तुमसे तो बिल्कुल नहीं डरती। तुम धामकी दोगे? मुझे धामकी दोगे क्या? मुझे ध ामकी दोगे? तुम धामकी दोगे मुझे? नहीं, मुझे धामकी दोगे? नहीं, मुझे धामकी दोगे क्या? आप मुझे भी धामकी दोगे? आप मुझे भी धामकी दोगे? बैठ जाओ, आराम से।

अध्यक्ष महोदय : राखी जी, राखी जी।

सुश्री राखी बिड़ला : आराम से बैठ जाइए, आपने क्या कर दिया एमसीडी में 10 साल से? क्या कर दिया एमसीडी में? 10 साल से शोभा विजेंद्र गुप्ता ने बुजुर्गों की पेंशन खा ली हैं। एमसीडी का जो सामुदायिक भवन है, उस

पर कब्जा कर लिया शोभा जिवेंद्र गुप्ता नें शर्म नहीं आती। अनपार्लियपेंटरी भाषा नहीं है, सोचो, आप हमारे बारे में कुछ भी बोलोगे, आप हमारे बारे में कुछ भी नहीं बोल सकते। हमारे पास ऑन रिकॉर्ड है। आपके नेता, बच्चों की तस्करी में लिप्त पाए जाते हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की खबर है। 1 मार्च की खबर है। 1 मार्च की खबर है। आप बैठिए, आप बैठिए बैठिए। आप लोग शर्म कीजिए जो खुलेआम आपके मीडिया सेल में आईएसआई के एजेंट हैं, बीजेपी में मीडिया सेल के लोग आईएसआई के एजेंट हैं। बैठ जाइए आप, आप बैठिए आप उन्हें बैठाइए अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, नहीं कन्क्लुड करिए इसको प्लीज बहुत हो गया। बैठिए राखी जी, कन्क्लुड करिए आप।

सुश्री राखी बिड़ला : आपके विजय जौली पर अभी गुड़गांव में एक्स एमएलस पर लगा रेप का, केस क्या कर लिया आप लोगों ने? शर्म आनी चाहिए महिला विरोधाी, दलित विरोधाी, छात्र विरोधाी, किसान विरोधाी, मजदूर विरोधाी आप विरोधाी लोग हो। देश का सत्यानाश करने पर तुल गए हो। आपको शर्म आनी चाहिए देश आज माथा पीट पीट कर रो रहा है कि किनको बिठा दिया हमने! ये तो हमारा खून चूस लेंगे और अगर इनके हिसाब से काम नहीं करेंगे तो दंगे करवा देंगे। जैसे गुजरात में 2002 में करवाए थे। खुद का इनका अध्यक्ष तड़ी पार है और वो कहता है....ज्ञान बताओ महिलाओं के सम्मान पे। अध्यक्ष जी, बस मैं इतना ही कहना चाहती हूं कि इन्होंने मेरा बहुत टाइम खराब करा है इन्हें, अध्यक्ष जी बस मैं इतना ही कहना चाहती हूं कि मैं अपनी ओर से अपनी क्षेत्र की जनता की ओर से, जहां का मैं प्रतिनिधित्व करती हूं और सभी हमारे विधाायक साथियें की ओर से, हमीर जो दिल्ली

की सरकार है, जिसका नेतृत्व श्री अरविन्द केजरीवाल जी कर रहे हैं, उन्हें बहुत-बहुत दिल से धान्यवाद। शब्द कम हैं कि उन्होंने मानवता के लिए, पिछड़े हुए लोगों के लिए, जनहित के काम करे हैं, उसे हम लोग सलाम करते हैं और दिल्ली से धान्यवाद देते हें और ये नारा जो हम लेकर आए थे 5 साल केजरीवाल ये आज लग रहा है, सही दिशा में बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। लाख अड़ंगों के बाद, लाख दबाव के बाद, लाख सीबीआई की रेड़ों के बाद, हम रूके नहीं, हम थके नहीं। आगे बढ़ते गए, जनहित में काम करने के लिए। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत बहुत धान्यवाद, पुनः हमारी पूरी केबिनेट को, हमारे मुख्यमंत्री को, हमोर तमाम विधाायकों को आपके दो साल पूरे होने पर इतना शानदार काम करने पर बहुत बहुतज धान्यवाद, जय हिन्द, जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, आपकी ओर से नाम नहीं आया मेरे पास अभी कोई भी चर्चा में भाग लेना है या नहीं। मैंने बुलाया है। भाई, तो आपने नाम तो नहीं दिया अभी तक। आप भूल गए नाम देना। विजेंद्र गुप्ता जी। बस अब ज्यादा नहीं अब 4 बज गए हैं श्री विजेंद्र गुप्ता जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता जी : अध्यक्ष जी, उप-राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है और मैंने बहुत धयान से अभिभाषण को सुना जिसके बारे में बहुत कोशिश की समझने की कि सरकार इस अभिभाषण की, सरकार की कोई दूर दृष्टि नजर आएगी, सरकार का कोई रोडमेप समझ में आएगा। सरकार की संवेदनाएं....संवेदनशील है ये सरकार, इसके बारे में कुछ जानकारियां मिलेंगी। मैं उप-राज्यपाल महोदय के इस अभिभाषण को केई बार मैंने खंगालने की कोशिश की कि इसमें कहीं दिल्ली के दो करोड़ लोगों को ये विश्वास हो सके कि ये सरकार वास्तविक रूप में दिल्ली के लिए कोई ठोस योजनाओं

के साथ काम कर रही है। (4.00) वो उस प्रकार से चीजों को आगे बढ़ा रही है, ठोस तरीके से समस्याओं का समाधाान कर रही है। लेकिन बहुत दुख के साथ मुझे ये सूचित करते हुए सदन को निराशाजनक....इस अभिभाषण से एक निराशा दिल्ली की जनता को हुई है। ऐसा महसूस होता है कि दिल्ली के अंदर सरकार का मानो कोई एजेंडा प्रत्यक्ष रूप से सामने नहीं हे। सरकार कहीं न कहीं अपने मार्ग से भटक गई है। सरकार ने जिन योजनाओं की बात की थी, आज सरकार अपनी ही योजनाओं की बात करने परग ुस्से में आ जाती है, सरकार को लगता है कि हमसे ये सवाल क्यों पूछे जा रहे हैं। सरकार को लगता है कि हमारे सामने ये प्रश्न क्यों खड़े किए जा रहे हैं। मैं समझता हूं कि ये समय है एक बार सरकार में बैठे हुए लोगों को आत्ममंथन करने की जरूरत है। सरकार ने बहुत प्रचार-प्रसार कर खर्चा किया है। पिछले दिनों उन विद्यार्थियों को भी मैंने देखा तो ऐसा लगा कि विज्ञापनों में जो कहा जा रहा है, उसी का एक समावेश करके ये एक चुनावी भाषण की तरह इस अभिभाषण को बना दिया गया है। शिक्षा और स्वास्थ्य पर सरकार बार-बार दावे करती रही, सहभागिता पर सरकार बार-बार बात करती रही, सहभागिता का अर्थ ये है पार्टिसिपेशन का अर्थी ये है मौहल्ला सभाओं के बारे में सरकार बार-बार दो साल तक लगातार बात करती रही उसके लिए बजट के अंदर पिछले वर्श 350 करोड़ रूपये का प्रावधाान भी किया गया उससे पूर्व 220 करोड़ रूपये का प्रावधाान किया गया और कहा गया कि 11 विधाानसभाओं में एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में काम करेंगे। लेकिन बहुत निराशा के साथ मुझे ये कहना पड़ रहा है कि अब अगर मैं मौहल्ला सभाओं के बारे में कोई बात यहां करता हूं तो सत्तारूढ़ दल को ये लगता है कि हमें चिढ़ाने का काम हो रहा है। हमारे विरूद्ध बोलने की बात हो रही है। जो एजेंडा आपने

तय किया जो रूल्स आपने बनाए जो मापदंड आपने बनाए जो योजनाएं आपने रखी, अब अगर हम उसके बारे में पूछते हैं तो आपको बुरा लगता है। ये इस बात का प्रतीक है कि सरकार एक प्रकार से अपने कार्य को करने में असफल सिद्ध हो रही हे। यहां पर मैंने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य की बात है, शिक्षा के आमूल-चूल परिवर्तन पर बार-बार यहां पर बड़े-बड़े दावे किए गए, लेकिन मैं जानना चाहता हूं, बहुत सरल है एक बात को पूछना क्योंकि बार-बार मैं पूछता हूं, बार-बार बाकी लोग पूते हैं, मीडिया पूछता है, आपने कहा था कि हम 500 स्कूल खोलेंगे, नए स्कूल। दिल्ली की अनाधि ाकृत बस्तियों में रहने वाले लोगों को एक उम्मीद जगी, एक आशा हुई क्योंकि वास्तव में विद्यालयों की कमी कहां है, आप देखेंगे 60 लाख दिल्ली की जनता जो दिल्ली की 2000 अनाधिाकृत बस्तियों में रहती है, वहां पर विद्यालय नहीं हैं, ना के बराबर हैं। कहीं है तो एकाधा है और मैुं आपकी जानकारी में डालना चाहता हूं, अध्यक्ष जी, आपके माधयम से सरकार के कि छोटे-छोटै बच्चों को हाई-वे क्रास करके विद्यालय जाना पड़ता है। विद्यालयों में प्रॉपर सिविक एमिनिटीज नहीं हैं। जो बच्चियां है टीनएजर्स वो विद्यालय जाना छोड़ देती हैं। इस प्रकार की रिपोर्ट्स हमारे सामने आ रही है। जब वो बड़ी होने जा रही है क्योंकि टॉयलेट्स नहीं है।

अध्यक्ष जी, एक भी अनाधिाकृत बस्ती में सरकार बताएं कि क्या आपने एक भी नया विद्यालय खोला? क्या खुद मैंने तजय किया कि मैं एक-एक अनाधिाकृत बस्ती में जाऊंगा वहां से सर्वे करके लाऊंगा, उन लोगों के विचार लाकर के आपको, मुख्यमंत्री जी को दूंगा। लोग बतायेंगे कि हमारा बच्चा कितनी दूर पढ़ने जाता है और किस वहज से हमारे बच्चे ने पढ़ना छोड़ दिया। क्योंकि

स्कूल यहां से 5 किलोमीटर पर है, 7 किलोमीटर पर है, 8 किलोमीटर पर हैं या जो विद्यालय है भी नजदीक में कहीं, उसमें स्थान नहीं बैठने का। तो इस प्रकार की स्थितियां सरकार के सामने हैं। सरकार ने शिक्षा पर बड़े-बड़े दावे किए सरकार ने कहा कि हमने शिक्षा व्यवस्था को चुस्त-दुरूस्त कर दिया है लेकिन आपके पास 29 हजार 623 अधयापकों के रिक्त स्थान पड़े हैं, उनमें से आपने एक भी रिक्त स्थान को दिल्ली सर्बोडिनेट सर्विसिज सेलेक्शन बोर्ड की तरफ से, क्या भरने की कोशिश की या भरे गए और अगर भरे गए तो 29 हजार 623 पद अभी भी खाली क्यों पड़े हैं? यानि जब विद्यालय में अधयापक नहीं है तो आप किस आधाार पर ये कह रहे हैं कि हमने विद्यालयों को अच्छा बना दिया? ये तो मैंने पहली बार सुना है कि बिना शिक्षक के विद्यालय बहीुत अच्छे चल सकते हैं! ऐसा कौन सा फार्मूला आपने दिया है कि कक्षा में शिक्षक नहीं है और वो विद्यार्थी बहुत अच्छा पढ़ रहे हैं? आपने एक कार्यक्रम प्रारंभ किया जब सत्ता आप में आए थे तो सरकार ने कहा था कि हम नवीं कक्षा में जो बच्चे फेल होते थे, एक लाख के करीब संख्या होती थी। हमने कहा कि आमूलचल परिवर्तन किया लेकिन बहुत दु:ख की बात है कि गए वर्ष में भी नवीं कक्षा में फेल होने वाले बच्चों की संख्या लगभग एक लाख थी। आपने कहा कि हमने 'चुनौती' कार्यक्रम शुरू किया है। 'चुनौती' कार्यक्रम के माधयम से हम बच्चों को पढ़ना सिखायेंगें। तीन महीने का ये कार्यक्रम होगा। मैं चुनौती देता हूं अध्यक्ष जी, आपके माधयम से सरकार को कि वो एक श्वेत पत्र जारी करे कि कितने बच्चे जिनको पढ़ना नहीं आता था, आपके 'चुनौती' कार्यक्रम से उनको पढ़ना आ गया। अगर आपने उस पर कोई श्वेत पत्र जारी नहीं किया, उसको कोई कनक्लूड नहीं किया। उसकी

जानकारी देने से अगर आप बच रहे हैं तो मुख्यमंत्री जी मैं यही कहूंगा कि एक बार आपको आत्ममंथन करने की जरूरत है। आपने दिल्ली में 20 नए डिग्री कालेज खोलने की मैं शिक्षा के विषय पर विशेष रूप से आपका ध यान इसलिए आकर्षित कर रहा हूं क्योंकि आपने शिक्षा के मामले में बार-बार ये कहा था और लगातार कहा था, आपने कहा कि एक कालेज....क्या आपने कोई शुरूआत भी की है? क्या आपने ब्लू प्रिंट तक बनाया है? क्या आपने कोई योजना बनाई है? एक योजना आपके द्वारा नहीं बनाई गई। आपने कहा था हम शिक्षा का व्यवसायीकरण रोकेंगे, शिक्षा का दाखिला नीति को हम ठीक करेंगे। मैं जानना चाहता हूं कि आपने कौन-सी दाखिला नीति ऐसी बनाई है जिससे आज विद्यार्थियों को आसानी से दाखिला मिल जाए। आप कहेंगे कि हाई कोर्ट ने उसको रोक दिया, आप कहेंगे कि सुप्रीम कोर्ट ने उसको रोक दिया, आप कहेंगे डबल बेंच ने उसको रोक दिया। ये सदन किसलिए है? ये सदन यहां सिर्फ राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप करने के लिए नहीं हैं। ये सदन गरिमा से नीचे की बात करने के लिए नहीं है और मुख्यमंत्री जी के सामने जब सदन के अंदर एक गरिमा के नीचे गिरी हुई बात यहां होती है और मुख्यमंत्री जी को ऐसा महसूस होता है कि जैसे कहीं न कहीं उनकी शह पर ये सब हो रहा है तो दु:ख होता है कि अरविंद केजरीवाल जी, जिनसे लोगों को बड़ी उम्मीद थी, वो अगर इस सदन के अंदर अपने सदस्यों को इस चीज के लिए उकसा रहे हैं कि दूसरे की बेइज्जती करो, दूसरों के लिए अपशब्द कहो और शाबाशी मिलेगी और सदस्यों के मन में ये आ जाए कि अगर मुख्यमंत्री जी बैठे हैं तो मैं नंबर प्राप्त कर लूं अपशब्द बोल के, तो मैं मुख्यमंत्री जी को कहूंगा इस बारे में भी जरूर आप आत्ममंथन करें। क्योंकि

आपकी मौजूदगी में अगर यहां अपशब्द कहे जाते हैं तो विपक्ष को भी इस पर दु:ख होता है कि हम आपसे ये अपेक्षा नहीं करते। आप एक नेता हैं। आपने एक नई राह दिखाने की कोशिश की है। टापने नए रास्ते बनाने की कोशिश की है। आपसे दिल्ली की जनता ये उम्मीद नहीं करती कि आपके सदस्य इस तरह की हल्की भाषा का प्रयोग करें और आप उस पर सिर्फ मुस्कराकर ऐसा महसूस कराए कि हां, बहुत अच्छा कर रहे हो। आप डिबेट करें, आप वाद-विवाद करें, आप अपने तरीके से जो क्रिटिसिजम करना है, करें। हम उसका हमेशा स्वागत करेंगे क्योंकि हम जानते हैं कि लोकतंत्र में क्रिसिटसिजम का एक विशेष स्थान है, वो होना भी चाहिए। लेकिन अगर उसमें गिरावट आ जाए इसहद तक कि जिस पर ये लोग कि कहीं ना कहीं दाल में काला नहीं है, पूरी दाल काली है तो फिर इस पर सोचना पड़ेगा।

अध्यक्ष जी, मैं इसमें इतना कहूंगा कि आपने कहा था....मैं सदन की बात कर रहा था। ये सदन....हाई कोर्ट में आपका मामला क्यों रूका? क्या आपने इस पर कभी सोचने की कोशिश की? आपने सदन में बिल लाकर इस सदन में भी, इस सत्र में भी, अभी तक कोई सूचना नहीं है कोई बिल यहां पर पेश होगा, लगातार पिछले एक साल से मैं देख रहा हूं कि सदन की बैठकें होती हैं, कोई नया बिल सदन के पटल पर नहीं आ रहा है। सरकार क्या. ...सरकार जो काम कर रही है, वो किस बात के दोव कर रही है कि दो वर्ष के इस कार्यालय में आपने एक कानून नहीं बनाया। आपने एक कानून पारित नहीं करा। आपने कानून को लागू नहीं करा। आप कहते हैं हमने पारित किए थे। अगर आप लोकपाल जैसे विधोयक पास करके ये दावा करें (410) कि हमको लागू नहीं करने दिया, तो जनता सब समझती है। जनता सब जानती

हैं और जनता माकूल जवाब देती है। जब समय आता है। इसलिए अभी तक आपको सब सकारात्मक नजर आता है लेकिन जब नकारात्म्क सामने आना प्रारंभ होगा तो शायद आप भी उसको संभाल नहीं पायेंगे। इसलिए मैं आपको एक मित्र के रूप में भी, चाहे मैं आपका क्रिटिक हूं आपका विरोधाी हूं, विरोध ाी पक्ष का हूं। मैं आपको एक सलाह देता हूं। एक सकारात्मक दृष्टिकोण से सोचना शुरू कीजिए और जो-जो, जहों-जहां कमियां हैं, उनको पूरा करने के लिए आप निश्चत रूप से इस बात को एडमिट करते हुए आगे का कोई नया रास्ता दिखायेंगे। ऐसी हम उम्मीद करते हैं सदन के सामने।

अध्यक्ष जी, आपने स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में बात की। आपने यहां पर, मैं आपको सिर्फ एक इंगित करके बात खत्म कर दूंगा। आईटीआई खोलने की बात की थी। पालिटेक्निक खोलने की बात की थी। नये तरह के शिक्षा का एक वातावरण तैयार करने की बात की थी। युवाओं को नौकरी मिल सके। उसके लिए आपने बातें की थी लेकिन अभी तक हमको उसका एक अंशमात्र भी कहीं पर नजर नहीं आ रहा है।

अध्यक्ष जी, एक बात स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर के आपने कहा था कि हम दिल्ली के जो प्राईमरी हेल्थ सेंटर्स हैं, उनको नौ प्राईमरी हेल्थ सेंटर आप खोलेंगे। आपने एक प्राईमरी हेल्थ सेंटर, पिछले वर्ष आपको याद होगा डेंगू के समय में किस तरह से पूरे दिल्ली के लोगों के हाथ-पैर फूल गये थे और यहां तक कि दिल्ली की सरकार के हाथ-पैर फूल गये थे क्योंकि जो डेंगू का प्रकोप था, उसको सरकार संभाल पाने में अपने आप को विफल महसूस कर रही थी। लेकिन मैं ये जानना चाहता हूं कि इस बार भी इस अभिभाषण में दिल्ली की जो बेसिक रिक्वायरमेंट है; प्राईमरी हेल्थ, उसको ले करके कोई

कमिटमेंट इस सरकार के द्वारा पेश नहीं किया जा रहा है। आप मोहल्ला क्लिनिक जो है, आम आदमी क्लीनिक जो है, उसको एक राजनीतिक रंग देने की कोशिश कर रहे हैं। बहुत दु:ख की बात है। वो राजनीति का विषय नहीं है। आपके अस्पतालों की स्थिति क्या है? आपके पॉली क्लीनिक की स्थिति क्या है? वास्तविकता में किस तरह लाखों के बिल बन रहे हैं, उस पर ध यान देने की जरूरत है। अगर आप चीजों को माईक्रो लेवल पर देखना प्रारंभ नहीं करेंगे तो फिर लोग एक दिन आपसे सवाल करेंगे। आपके सामने उनके जवाब नहीं होंगे।

आपने दिल्ली में सफाई व्यवस्था की बात की। आपने कहा था कि हम एक टेक्नीकल तरीके से, मैकेनिकल स्वीपिंग हम करायेंगे लेकिन मैकेनिकल स्वीपिंग क्या सिर्फ एक फोटो हब था। क्या फोटो हब के लिए आपके मंत्री जाते हैं और फोटो हब देते हैं। कितनी बार आप फोटो हब से....फोटो हब भी जरूरी है। लोगों तक संदेश जाने के लिए की योजना प्रारंभ की गई है लेकिन अगर वो योजना सिर्फ फोटो हब तक है तो फिर अध्यक्ष जी, मैं मुख्यमंत्री जी को सलाह दूंगा कि उस पर जरूर गहराई से विचार करें। क्योंकि फोटो हब या एडवर्टिजमेंट मेमं छपने वाले फोटो से लोगों की तसल्ली नहीं होगी जब तक कि लोग महसूस नहीं करेंगे। एक बस में झगड़ा हो रहा था। कन्डेक्टर को पैसेंजर ने कहा कि पांच रूपये में टिकट दीजिए। उन्होंने कहा, टिकट 15 रूपये की है। उसने कहा, नहीं पांच रूपये में दीजिए। सरकार ने अखबार में. ...पढ़ के आया हूं मैं। सरकार ने कहा है कि 5 रूपये में बस की टिकट मिलेगी तो कन्डेक्टर ने कहा, ''जा के अखबार से ले ले पांच रूपये की टिकट। यहां तो 15 रूपये की टिकट मिलेगी।'' तो इससे निगेटिव इम्पैक्ट जाता है।

जब लोग पढ़ के जाते हैं। जब अच्छी चीज तस्वीर देखकर जाते हैं और वहां पर स्थिति दूसरी मिलती है तो सरकार का एक निगेटिव अस्पेक्ट सामने आता है। आपने यूनिफाईड ट्रांसपोर्ट अथार्टी की बात की थी। उस पर सरकार ने कोई अभिभाषण में क्योंकि मैं ये मानता हूं कि ये विजनरी डाक्यूमेंट है, ये विजन है। लेकिन कहीं न कहीं विजन नजर आना चाहिए कि आप दिल्ली की पब्लिक ट्रांसपोर्ट को लेकर के लास्ट माईल कनेक्टिविटी को लेकर के आपके मन में कुछ योजनाएं हैं।

महिलाओं की सुरक्षा की बात आपने की। लेकिन इसमें जो अब कहा गया, महिलाओं की सुरक्षा कोइ तने संक्षिप्त में समाप्त कर दिया गया। महिला सुरक्षा एक बड़ा विषय है। महिला सुरक्षा हम सबके सामने एक चुनौती है। लेकिन आप शाम को कुछ गार्ड लगाने की बात कहके ये मानते हैं कि बसों में महिलाओं की सुरक्षा हो गयी या हो जायेगी तो शायद आप स्वयं भी अंध ोरे में हैं और बाकियों को भी अंधोरे में रखना चाहते हैं।

आपने अस्पतालों की स्थिति....आप बार-बार मोहल्ला क्लीनिक की बात करते हैं लेकिन आपने तीस हजार....आपको याद होगा। सरकार ने कहा था कि तीस हजार अतिरिक्त बेड लगायेंगे हम अस्पतालों में। ये संख्या बढ़ेगी, इस प्रकार की व्यवस्था बढ़ेगी लेकिन मुणे इस बात को कहने में फिर तकलीफ होती है कि सरकार ने कहीं और किसी भी प्रकार से तीस हजार...आपने टॉयलेट बनाने की बात की थीं

अभी तो सैंकड़ों इश्यू हैं लेकिन मैं सिर्फ कुछ अंश, वही अभिभाषण में जिनको मैं देखने की उम्मीद कर रहा था, उसका जिक्र तक नहीं है। उसकी

भावना तक नहीं है। सफाई व्यवस्था पर आपने कहा था कि दिल्ली में महिलाओं के लिए टॉयलेट बनेंगे, जनरल टॉयलेट बनेंगे, दो लाख टॉयलेट बनेंगे लेकिन कहां गयी वो योजना? आपने, मैंने जैसा अभी आपकी इजाजत से 280 में आम आदमी कैंटीन की जो बात आप करते थे। मजदूरों को सस्ती दर पर भोजन मिलेगा लेकिन उस कैंटीन की जो बात आप करते थे। मजदूरों को सस्ती दर पर भोजन मिलेगा लेकिन उस कैंटीन के मामले में भी बड़ा निराशाजनक जवाब मंत्री जी की ओर से आया। मुझे लगता है अध्यक्ष जी, इस सदन के अंदर जो चर्चाएं होती हैं, उसका कोई कन्टेन्ट जो है वो कोई एक डाईरेक्शन में जाना चाहिए लेकिन यहां पर सदस्य सिर्फ और सिर्फ समय व्यतीत करने के लिए यहां पर शायद चर्चा में भाग लेते हैं। इसलिए मेरा अनुरोधा है कि इस सारे मामले में, आपने बात की थी कि हम कॉन्ट्रैक्ट के तमाम लोगों को रेगुलर करेंगे। आप डीएसएसबी की स्थिति को देखिये। दिल्ली सबआर्डिनेट सलेक्शन बोर्डै की रोज शिकायतें आती हैं। दिल्ली सबआर्डिनेट सलेक्शन बोर्ड अगर ठीक प्रकार से काम नहीं कर रहा है तो सरकार की क्या मजबूरी है, उसी व्यवस्था को रखने की? उसको भंग क्यों नहीं कर देती सरकार? दूसरी व्यवस्था खड़ी क्यों नहीं करती है? अगर आपके मन में जज्बा है कि हमें कुछ चीजों को सुधाारना है और आप कहते हैं हम लीक से हटकर बात करने का दम रखते हैं तो आपने अभी तक उस लीक पर कहीं कोई चोट करके दिखायी हो, किसी व्यवस्था को बदलने की कोशिश की हो, क कहीं पर आपने ये कोशिश की हो कि आप लीक से हटकर कुछ नई चीज करने में सफल हो रहे हैं तो हम भी आपी खुशी में जरूर शामिल होते। लेकिन मुझे लगता है कि ये तमाम चीजें, चाहे वो एक तरफ इस सदन में केंद्र के बारे में अपशब्द कहें

जाते हैं और दूसरी तरफ इसी अभिभाषण में केंद्र की योजनाओं पर सरकार ने....चलिए, मैं तो कहता हूं आप ले लीजिए क्रेडिट, करिये आप। आपने कहा कि हमने नई दिल्ली म्यूनिसिपल जो एरिया है, उसको हमने 'खुले में शौच से मुक्त क्षेत्र' बना दिया है। आप लीजिए, मुझे खुशी होगी आप क्रेडिट लीजिए लेकिन सवाल ये है कि एक बार सोचिए। आपने इसी सदन में कहा कि हमने 93 रूपये में चार बल्ब देकर 65 लाख लोगों के घरों तक एलईडी पहुंचाया है। आप लीजिए क्रेडिट। हम तो कहते हैं आप लीजिए क्रेडिट। लेकिन आपको इसको सोचना पड़ेगा कि इस योजना के साथ अगर केंद्र जो इन योजनाओं को मूल आधाार है, मेट्रो का मूल आधाार है, उसको भी अगर आप भाईचारे के तरीके से यहां पर बात करें तो मुझे लगता है कि एक नये अधयाय की शुरूआत दिल्ली में हो सकती है।

अध्यक्ष जी, मैं इतना जरूर कहूंगा कि सरकार को एक बार, अब पंजाब के चुनाव भी हो गये हैं। पंजाब के चुनाव तक आपके मन में हो सकता है कोई स्ट्रेटजी ऐसी हो, कोई कार्ड ऐसा हो जिसको आप खेलने के लिए दिल्ली के इस मंच को रंगमंच की तरह इस्तेमाल कर रहे थे। मैं ये मान सकता हूं कि दिल्ली की जनता की भावनाओं के कंधो पर आप बंदूक रखकर चलाने की कोशिश कर रहे थे। मैं ये भी मान सकता हूं। लेकिन अगर सुबह को भूला शाम को घर वापस आ जाये तो उसको भूला नहीं कहते। हम इसको भी एडमिट करने के लिए तैयार हैं। आप एक नई शुरूआत कीजिए। अब चुनाव भी हो गये हैं लेकिन क्या एक चुनाव के बाद, एक चुनाव का आप इंतजार करेंगे। अपनी कार्यशैली को आप बदलने को तैयार नहीं हैं तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं आप दिली वालों के विश्वास को तोड़ नहीं रहे हैं, आप दिल्ली

वालों के साथ विश्वासघात कर रहे हैं और ये विश्वासघात अगर आप इसी तरह करेंगे तो लोग जब विश्वास टूटता है, दिल जब टूटता है तो आह निकलती है। दुनिया में अगर किसी व्यक्ति को, अध्यक्ष जी, दुनिया में किसी व्यक्ति को अगर सबसे ज्यादा तकलीफ होती है...कब होती है? जब वो किसी पर पूरा विश्वास करे। पूरा विश्वास करे, चाहे वो, अध्यक्ष जी पूरा विश्वास करे। दुनिया में सबसे तकलीफ का क्षण कौन-सा होता है? वो क्षण कौन सा होता है. ...सब अपने दिल पर हाथ रखकर बैठो। जरूर आपने कभी न कभी दिल दिया होगा। ये मानकर के चलिए आप। सुनिये, अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : अब कनक्लूड करिये विजेंद्र जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : ये दिल टूटता है जब। जब विश्वास टूटता है।

अध्यक्ष महोदय : अब कनक्लूड करिये विजेंद्र जी प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ता : तो उसे कहते हैं विश्वासघात और वो क्षण व्यक्ति कभी नहीं भूलता। आज दिल्ली के लोगों के मन में ये भाव आ रहा है कि हमने दिल दिया था। हमने विश्वास किया था लेकिन आज हमारे साथ विश्वासघात हो रहा है। (4.20) लेकिन आज हमारे साथ विश्वासघात हो रहा है, फिर आप यह मत कहिये, ये मोदी-मोदी के नारे लगाने वाले कहां से आ गये। यह जनता है और यह जनता सब जानती है।

अध्यक्ष महोदय : आप कन्क्लूड करिये।

श्री विजेंद्र गुप्ता : इसलिए आप कहां तक कहोगे, ये मोदी-मोदी के नारे लगाने वाले कहां से आ गये। ये तो आएंगे और बढ़ेंगे। आपने अगर अपनी

कार्य शैली को परिवर्तित नहीं कया। अभी मुख्यमंत्री जी, आप थे नहीं। अध्यक्ष जी, आपके माधयम से मैं कहना चाहता हूं कि आपने दिल्ली फायर सर्विस, मैं भी गया था स्व. हरिओम जी के घर, आप भी गये थे, आपने भी पूरी स्थिति को जाना, आपने भी समझा, आज उस पर हमने धयानाकर्षण प्रस्ताव लगाया, हम चाहते थे सदन में एक सकारात्मक चर्चा हो, दिल्ली फायर सर्विस की स्थिति में सुधाार होना चाहिए, बदलाव होना चाहिए, उसका क्रेडिट आपको मिले, हम उसके लिए भी आपके साथ खड़े हैं लेकिन आज 1800 कर्मचारी हैं दिल्ली फायर सर्विस के जिनके मन टूट गये हैं, जिनका हौसला टूट गया है क्योंकि हर दूसरे साल ऐसी घटनाएं दिल्ली में हो रही है जिसमें डिप्टी सीएफओ की मृत्यु हुई, सात फायरमैन उनके साथ मरे, पब्लिक के लोग मरे, उसके बाद नरेला में घटना हुई दो फायरमैनप मरे, फिर अभी पिछले हफ्ते विकासपुरी में घटना हुई, दो फायरमैन मरे, उनके पास मामूली चीजें फावड़े तक नहीं हैं, उनके पास कुदाल तक नहीं हैं, उनके पास हुक तक नहीं हैं। गाड़ियों में पंप नहीं लगे हुए हैं जिससे वो पानी खींच सके। क्या यह चर्चा आवश्यक नहीं थी? क्या यह चर्चा मिलकर के हम सकारात्मक रूप से नहीं कर सकते थे? ठीक है, विपक्ष आरोप लगायेगा, सरकार को खींचेगा, सरकार का धयान आकर्षित करेगा लेकिन सरकार को यह समझना चाहिए कि विपक्ष अपनी भूमिका कर रहा है। फर्ज यह बनता है सरकार का कि आप यहां पर आज रिपोर्ट पेश करते, आपने जो कहा था पिछले दिनों में, जो न्यूज के माधयम से कहा, जो आपने वहां जाकर के कहा, आप यहां कहते कि जो लाग मरे हैं, उनके बारे में सोच कर के और इस फायर सर्विस के पूरे सिस्टम को बदलने के लिए, आमूल-चूल परिवर्तन के लिए यह सरकार सामने आई है।

लेकिन बड़ा ही दुख का विषय है, बहुत ही हैरानी का विषय है कि चर्चा तक नहीं होनी दी गई। धयानाकर्षण प्रस्ताव यहां लाया गया, उस पर मंत्री जवाब देने को तैयार नहीं है। क्या दिल्ली फायर सर्विस, जो सौ प्रतिशत आपके अधिाकार क्षेत्र का मामला है आपने, सिर्फ इसलिए चर्चा नहीं करवाई कि इस परह मारे पास कोई बहाना नहीं है, हमारे पास इसमें कोई एक्सक्यूज नहीं है। अरे! एक्सक्यूज होना जरूरी नहीं है लेकिन एक नई शुरूआत करिये और नई शुरूआत के साथ दिल्ली की जनता का भला करिये।

अध्यक्ष महोदय : आप कन्क्लूउ करिये।

श्री विजेंद्र गुप्ता : मैं इतना कहकर अपनी बात को समाप्त करूंगा। धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : धान्यवाद।

श्री जगदीप सिंह : अध्यक्ष जी, एक सूचना देनी थी। अभी विजेंद्र गुप्ता जी ने बताया कि, सर, बहुत जरूरी है।

अध्यक्ष महोदय : जगदीप जी, नहीं प्लीज।

श्री जगदीप सिंह : एक छोटी सी बात है।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये प्लीज।

श्री जगदीप सिंह : सिर्फ 20 सेकेंड में। सर, अभी इन्होंने बताया कि वां पांच रूपये वाला जो स वाला मिला था, वो बस वाला मुझे भी मिला, फिर मैंने उससे बात की कि यहां पर पंद्रह रूपये क्यों ले रहे हैं, मैंने कहा

आप गलती से हरियाणा रोडवेज की बस में चढ़ गये हैं। यह दिल्ली में किराये कम हुए हैं, हरियाणा में नहीं है। बहुत-बहुत धान्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : माननीय मुख्यमंत्री जी चर्चा का उत्तर देंगे।

मुख्यमंत्री (श्री अरविंद केजरीवाल) : अध्यक्ष महोदय, मैं पहले दो शब्द माननीय लीडर ऑफ अपोजिशन ने जो अभी बातें कहीं, उस पर बोलना चाहूंगा, फिर अपनी बात रखूंगा। मुझे बहुत खुशी है कि लीडर ऑफ अपोजिशन ने पूरी मेहनत करके एलजी साहब के अभिभाषण को, कल पूरी रात उन्होंने बिताई उसके ऊपर, बहुत मेहनत की ओर उसक बाद उनको केवल ये कमियां नजर आईं कि जो हमने मेनिफेस्टो बनाया था और उसमें हमने जो-जो वायदे किये थे, वो दो साल में पूरे क्यों नहीं किए। जैसे हमने कहा था कि इतने स्कूल बनायेंगे, इतने कॉलेज बनायेंगे, इतने ये बनायेंगे, उसको छोड़कर जैसे जितनी देश भर में बीजेपी की सरकारें हैं, उनके ऊपर रोज भ्रष्टाचार के आरोप लगते हैं, रोज उनके मंत्रियों पर बलात्कार के आरोप लगते हैं, बच्चों की तस्करी के आरोप लगते हैं, मुझे बेहद खुशी है कि आज दो साल के बाद लीडर ऑम्फ अपोजिशन के पास भी एक शब्द नहीं है हमारे ऊपर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने के लिए। पूरी मेहनत के बाद उनको यह नजर आया। मैं उनको कहना चाहता हूं कि जैसे अमित शाह जी ने कहा था कि मेनिफेस्टो तो चुनाव के पहले जुमला होता है। हम मेनिफेस्टो को जुमला नहीं मानते, हम उसको गीता, बाइबिल मानते हैं और मेनिफेस्टो में लिखी हुई एक-एक बात पांच साल के अंदर पूरी करके दिखायेंगे। यह मैं आपको आश्वासन देता हूं, दिल्ली की जनता को आश्वासन देता हूं। एलजी साहब ने कल अपने अभिभाषण में सरकार द्वारा दो साल में किए गए सारे कामों का ब्यूरा दिया। कोई भी सरकार अपने कामों

की बड़ी अच्छी प्रशंसा कर लेती है। एलजी साहब ने अपनी तारीफ की, हम भी अपनी तारीफ खूब-खूब कर सकते हैं लेकिन असली तारीफ तब होती है जब सड़क पर चलता हुआ आदमी कहे कि इस सरकार से मेरे को फायदा हो गया। आज मैं चैलेंज करता हूं यहां से बाहर निकलते हैं और जो पहले 100 आदमी मिलें, उनसे पूछ लेना जी, दिली की आम आदमी पार्टी सरकार ने क्या-क्या काम किए और दिल्ली में दस साल में एमसीडी ने क्या-क्या काम किए। दिल्ली का बच्चा-बच्चा कह रहा है कि बिजली के रेट आधो हो गये। हमारे बिजली के बिल कम हो गये। मेरे ख्याल से 83 परसेंट लोगों को बिजली की सब्सिडी का फायदा हुआ है। बच्चा-बच्चा कह रहा है कि हमारे पानी के बिल जीरो हो गये, साढ़े बारह लाख लोगों के पानी के बिल जीरो हो गये। दिल्ली का बच्चा-बच्चा कह रहा है कि अस्पतालों में जाते थे, पहले दवाइयां नहीं मिलती थीं, अब अस्पतालों में जाते हैं फ्री में सारी दवाइयां मिलने लग गई हैं। दिल्ली का बच्चा-बच्चा कह रहा है कि मोहल्ला क्लीनिक बहुत अच्छे बन गये। कल मैं नजफगढ़ से वापस आ रहा था, एक जगह ट्रैफिक जाम में फंस गया तो वहां पर कई सारे आस-पास के दुकान वालों ने मेरे को देखा, उन्होंने चारों तरफ से गाड़ी घेर ली, मैंने शीशा नीचे करा, एक लड़का कहता है कि आपने स्कूलों का तो कायापलट कर दिया! वो असली सर्टिफिकेट है हमारा। मैं एक पिक्चर देखने गया कुछ दिन पहले, जब हॉल में घुस रहा था, एक सिक्योरिटी है हमारा। मैं एक पिक्चर देखने गया कुछ दिन पहले, जब हॉल में घुस रहा था, एक सिक्योरिटी गार्ड ने रोक लिया मेरे को, कहता है कि मेरा बच्चा सरकारी स्कूल में पढ़ता है। आप लोगों ने एक काम तो बड़ा अच्छा किया, सरकारी स्कूलों की कायापलट कर दी। जब वो सड़क के

ऊपर, मौहल्ले के अंदर खड़ा हुआ आदमी कहता है कि मेरी जिंदगी में बदलाव आ गया, वो असली सर्टिफिकेट है। तो दिल्ली सरकार ने जो काम किए हैं, उसकी तारीफ आज अगर आप जनता से पूछें, जनता उसकी तारीफ कर रही है। हमारे माननीय लीडर ऑफ अपोजिशन सामने बैठे हैं। मधय प्रदेश में कितने साल से बीजेपी की सरकार हैं, दस-बारह साल हो गये। बारह साल में मध य प्रदेश की सरकार के पांच काम गिना दो, जो करें हों। मैं चैलेंज करता हूं। व्यायाम छोड़कर, वो तो बहुत बड़ा काम है। पांच काम गिना दो, आपको भी याद नहीं होंगे लेकिन आपको हमारे काम याद हैं। छत्तीसगढ़ की सरकार ने पांच काम करे हो, गिना दो मेरे को। मैं चैलेंज करता हूं। राजस्थान की सरकार ने पांच काम करे हो, मेरे को गिना दो। मैं चैलेंज करता हूं। चलिए, सारे छोड़ो, मोदी सरकार ने पांच काम करे हो, मेरे को गिना दो। मैं चैलेंज करता हूं। चलिए, सारे छोड़ो, मोदी सरकार ने पांच काम करे हो, गिना दो मेरे को। उत्तर प्रदेश में अभी ये हैं जितने भाषण उन्होंने करे हैं, मैंने सारे उनके भाषण सुने हैं। एक भी काम उन्होंने नहीं गिनाया कि मैंने तीन साल में यह काम करा, यह काम करा, इसलिए मेरे को वोट दो। एक काम नहीं गिनाया। मैं भी पंजाब गया था अभी, मैंने भी पंजाब के अंदर वोट मों थे। मैंने कहा था दिल्ली में हमने यह काम करे, पंजाब में भी यह काम करके दिखायेंगे। हमने काम के आधाार पर वोट मांगे। प्रधानमंत्री जी ने श्मशानघाट के नाम पर वोट मांगे। एमसीडी में दस साल हो गये आपको, एमसीडी में एक काम बता दो जो आपने करा हो। पिछले दस साल के अंदर, एक काम करा हो जो जनता कह दे कि काम करा है एमसीडी ने।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप मुझसे पूछ रहे हो?....(व्यवधान)

मुख्यमंत्री : आप नोट कर लो, उसक बाद बता देना। अब मैं आपको थोड़ा सा कम्पेयर करके बताना चाहता हूं। दिल्ली में लगभग हमने सबसे सस्ती बिजली करके दिखा दी, आपको याद होगा शीला दीक्षित का जमाना। हर साल बिजली के रेट बढ़ा करते थे। हर साल बिजली के रेट बढ़ा करते थे, लोग कितने दुखी थे। दो साल के अंदर हमने बिजली के रेट नहीं बढ़ने दिये। आज अगर आप 400 यूनिट बिजली की खपत करते हो, दिल्ली में अपने घर में तो दिल्ली में बिजली का बिल आता है 1370 रूपये और अगर आप गुजरात में, (4.30) गुजरात में बीजेपी की सरकार है, कब से? 89 से है। कितजने साल हो गये 28 साल। 28 साल से बीजेपी की सरकार है। गुजरात में अगर आप 400 यूनिट बिजली की खपत करते हो अपने घर में तो बिल आता है 2700 रूपये, दिल्ली में कितना आता है। 1370 और बीजेपी के गुजरात में आता है 2700 रूपये। महाराष्ट्र में किसकी सरकार है? बीजेपी की। मुम्बई में अगर आप 400 युनिट बिजली इस्तेमाल करते हो तो आपका बिल आता है 4000 रूपये। दिल्ली में कितना आता है 1370, बंबई में आता है 4000 रूपये। तो दिल्ली वालों ने काम तो करके दिखाया है दिल्ली की सरकार ने। कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है। बैंगलोर में अगर आप 400 युनिट बिजली इस्तेमाल करते हो तो आपको बिजली का बिल आता है 2600 रूपये, पूरे देशम ें सबसे सस्ती बिजली करके दिखा दी हम लोगों ने।

पहले कहा करते थे इनको गवर्नेन्स नहीं आती। गवर्नेन्स हमसे सीखो अब। आठ हजार नये क्लासरूम्स बनवाये। एक स्कूल के अंदर लगभग 40 के करीब क्लासरूम होते हैं उस हिसाब से देखो तो 200 नये सरकारी स्कूल बन गये दिल्ली के अंदर। मैं चेलेंज करता हूं 15 साल में छत्तीसगढ़ के अंदर डॉक्टर

रमन सिंह ने अगर 200 स्कूल बना दिये हों तो और मैं चेलेंज करता हूं एमसीडी वालों ने 5 स्कूल बना दिये हों तो। दस साल के अंदर एक भी स्कूल नहीं बनाया उन्होंने। हमने 200 नये सरकारी स्कूलों के बराबर का इन्फ्रास्ट्रक्चर 2 साल के अंदर खड़ा करके दिखा दिया और एक हमारे स्कूल में चलो, अब जो नये सरकारी स्कूल न रहे हैं, लिफ्टें लग रही हैं, स्वीमिंग पुल बन रहे हैं और एक एमसीडी का सरकारी स्कूल कंपेयर करके देख लो। जमीन आसमान का अंतर है! जनता को खुद ही दिखाई दे रहा है।

पिछले एक किस्म की राजनीति है जब प्रधानमंत्री जी, उनका हवाई जहाज बताते हैं, बड़ा फन्नेखां है। वो एयरफोर्स-वन क्या कहे हैं उसको? क्या नाम है उसका? कुछ नाम है उसका एयरफोर्स-वन और बड़ा शानदार है बताते हैं अंदर से सारी सुविधाएं हैं नहाने की और फलाना ढिमका सारा सब कुछ है। वो लेकर घूमते रहते हैं सारी दुनियां में और मतलब एक वो राजनीति है जहां प्रधानमंत्री पूरी दुनियां के अंदर हवाई जहाज से पूरी दुनियां का दौरा कर लिया। पिछले दो साल के अंदर मैं केवल एक विदेश यात्रा पर गया था। इटली गया था मदर टेरेसा के बेनेडिक्शन के मौके ऊपर। दिल्ली की आम आदमी पार्टी का मुख्यमंत्री विदेश नहीं जाता, दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार के प्रिंसिपल विदेश जाते हैं, हॉवर्ड जाते हैं, कैंब्रिज जाते हैं, ट्रेनिंग करने के लिए जाते है। मैं विदेशों में नहीं घूमता अपने प्रिंसिपलों को भेजता हूं ट्रेनिंग करने के लिए विदेशों के अंदर और इतनी सारी प्रधानमंत्री जी ने विदेश यात्राएं करी और पूरी दुनियां के अंदर आज देश की थू-थू हो रही नोटबंदी के बाद। सारे लोग, पूरी दुनियां के लोग कह रहे हैं कि क्या प्रधानमंत्री है, क्या इसने नोटबंदी करी! पूरी दुनियां में थू-थू हो रही है और आज मैं एक भी देश में नहीं

गया और पूरी दुनियां के अंदर आम आदमी पार्टी के कामों की चर्चा हो रही है।

कोफी अन्नान इतने बड़े आदमी हैं कोफी अन्नान युनाइटेड नेशन्स के फार्मर सेक्रेटरी जो उन्होंने बोला है, चिट्ठी लिखी है मेमरे को। उन्होंने बोला है कि जो मोहल्ला क्लिनिक दिल्ली सरकार ने बनाये हैं, वो पूरी दुनियां के अंदर बनने चाहिए ऐसे। अभी सिंगापुर में आप गये थे, सिककी कान्फ्रेंस थी? हेल्थ। पूरी दुनियां के हेल्थ मिनिस्टर आये थे सारे देशों के और वहां पर दूसरे हेल्थ मिनिस्टर्स को बोलने का मौका नहीं मिला, दिल्ली के हेल्थ मिनिस्टर को वहां पर अपनी बात रखने का मौका मिला सिंगापुर की कान्फ्रेंस में और पूरी दुनियां के हेल्थ मिनिस्टर्स ने तारीफ करी कि दिल्ली के अंदर, वो वीडियो देखना नेट के ऊपर है, पूरी दुनियां के हेल्थ मिनिस्टर्स ने एक के बाद एक तारीफ करी कि दिल्ली में जो मोहल्ला क्लिनिक बन रहे हैं! ऑड ईवन हमने करा, पूरी दुनियां में जहां जहां ऑड ईवन किया गया, वहां फेल हो गया पहली बार पूरी दुनियां के अंदर ऑड ईवन दिल्ली में हमने सक्सेसफुल करके दिखाया था, आज पूरी दुनियां के अंदर उसकी तारीफ हो रही है।

106 डिस्पेंसरी आप बता रहे थे प्राइमरी हेल्थ सेंटर या मोहल्ला क्लिनिक को एक तरह से उसी का वो है, 106 मोहल्ला क्लिनिक बना चुके जिसकी पूरी दुनियां में तारीफ है। मैं चेलेंज करता हूं छत्तीसगढ़ में 106 डिस्पेंसरी अगर डॉक्टर रमन सिंह ने 15 साल में बनाकर दिखा दी हों। मैं चेलेंज करता हूं मधयप्रदेश में उन्होंने 106 डिस्पेंसरी 10 साल में बनाकर दिखा दी हों, एक डिस्पेंसरी उन्होंने नहीं बनाई हमने 2 साल के अंदर इतनी डिस्पेंसरी बनाकर दिखा दी।

अब मैं आपको दो पुलों की कहानी, दो फ्लाईओवर की कहानी सुनाना चाहता हूं। एक आम आदमी पार्टी की सरकार ने बनाया फ्लाईओवर और एक भारतीय जनता पार्टी की एमसीडी फ्लाईओवर बनाने की कोशिश कर रही है, प्रयासरत है। डेढ़ साल के अंदर हमने पांच फ्लाईओवर बना दिये हैं, डेढ़ साल में। एक फ्लाईओवर जो मैं अक्सर उदाहरण देता हूं सवा तीन सौ करोड़ का बनना था समय से पहले पूरा कर दिया, 200 करोड़ में पूरा कर दिया सवा सौ करोड़ बचा रूपये बचा लिए क्योंकि नीयत साफ थी। बीजेपी की एमसीडी 2006 से एक रानी झांसी फ्लाईओवर बनाने की कोशिश कर रही है 177 करोड़ रूपये का बनना था 724 करोड़ रूपये खर्च हो चुके और अभी भी आध ाा भी नहीं बना वो दूर-दूर तक क्यों, क्योंकि नीयत खराब थी। दोस्तों जैसा मैंने कहा कि पिछले डेढ़ साल में बहुत सारे काम किए लेकिन इन लोगों ने बहुत सारी अड़चनें अड़ानें की कोशिश करी। जब हम राजनीति में आये थे, हमें लगता था कि राजनीति खराब है। लेकिन अंदर घुसने के बादपता चला कि राजनीति कितनी ज्यादा खराब है! इतनी ज्यादा खराब है कि देश लुट जाए, लोग मर जाएं, सब कुछ बर्बाद हो जाए लेकिन सत्ता और पैसे के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

दिल्ली के लोगों ने 70 में से 67 सीट दीं, 70 में से 67 सीट भारत के इतिहास में तो कभी किसी पार्टी को मिली नहीं। 70 में से 67 सीट का काम मतलब क्या था? 70 में से 67 सीट का मतलब यही था कि दिल्ली की जनता कही रही है इनको 3 दी, कांग्रेस को जीरो दी कि दिल्ली की जनता कह रही है कि तुम चुपचाप रहना अब आम आदमी पार्टी को काम करने देना। पूरा जमकर ठप्पा लगाया दिल्ली की जनता ने की भई, अब जो

आम आदमी पार्टी 5 साल अब जो ये सरकार कहेगी, वही होगा, अब कुछ नहीं होगा दिल्ली में। लेकिन मोदी जी हार गए और हारने के बाद उन्होंने दिल्ली की जनता से जो बदला लेना चालू किया, जो बदला लेना चालू किया वो बता नहीं सकता। हमने 49 दिन की सरकार में एक चीज जो आज सारी दिल्ली की तो छोड़ो, सारे देश के लोग याद करते हैं वो क्या है कि जी, पैसा देना बंद कर दिया था सबने। पुलिस वालों ने पैसा लेना, ट्रैफिक लाईट पर पैसा लेना बंद कर दिया था। खौफ था अफसरों के अंदर कि अब ये ऐसी सरकार आई है, छोड़ेगी नहीं। जो सरकार मुकेश अंबानी के खिलाफ एफआईआर करने की हिम्मत रखती है, वो हमको नहीं छोड़ने वाली। सारे अफसरों ने पैसा लेना बंद कर दिया था। इतना जबरदस्त माहौल था दिल्ली के अंदर! जैसे ही हमारी दोबारा सरकार बनी, मोदी जी ने एंटी करप्शन ब्रांच कपर कब्जा कर लिया, अच्छा भई तुम ले लो पर तुम कुछ करके तो दिखाओ। अगर वो ही कुछ कर देते तो हमें कोई तकलीफ नहीं थी। भई, तुम करो हम तो पहले भी कहते थे कि हम राजनीति में आते ही नहीं अगर तुम सुध ार जाते, तुम नहीं सुधारे, इसीलिए हमें राजनीति में आना पड़ा। आज भी सुध ार जाओ, हम राजनीति से सन्यास ले लेंगे। अभी भी नहीं सुधार रहे आप लोग। तो खुद ही कर देते, एसीबी वो ठीक कर देते, अगर भ्रष्टाचार दूर कर देते, हमें क्या जरूरत थी? लेकिन खुद भी नहीं करा। आज सबसे ज्यादा तकलीफ इसी बात की होती है कि लोग जब याद करते हैं 49 दिन की सरकार में, आज भी अगर ये दे दें, दिल्ली के अइंदर भ्रष्टाचार जीरो करके दिखा देंगे, जीरो भ्रष्टाचार करके दिखा देंगे। बिना एसीबी के इतना कंट्रोल कर रखा है। एसीबी अगर आ जाती, हम क्या करके दिखा देते। लेकिन दोस्तो, मेरे को बड़ा दुख हुआ, अभी पंजाब में चुनाव में गया, वहां मोदी जी भाषण देने आये,

भाषण में कहते हैं केजरीवाल चुनाव के पहले कहा करता था शीला दीक्षित को गिरफ्तार करूंगा लेकिन चुनाव के बाद किया नहीं। केजरीवाल ने झूठ बोला। मुझे बहुत तकलीफ हुई कि प्रधानमंत्री को तो कम से कम झूठ नहीं बोलना चाहिए। उन्होंने ये नहीं बतायाकि एंटी करप्शन ब्रांच मैंने छीन रखी है। उन्होंने ये नहीं बताया कि शीला दीक्षित की फाइलें सारी अब मेरी अलमारी में हैं। उनकी अलमारी में हैं सारी फाइलें और पंजाब की जनता को जाकर कहते हैं केजरीवाल ने शीला दीक्षित को गिरफ्तार नहीं किया। अरे! शीला दीक्षित को तुमने गिरफ्तार नहीं किया। तुमको गिरफ्तार करना है अब, तुम मेरे को देकर देखो और फिर देखो, तुम्हारा मुकेश अंबानी भी नहीं बचेगा और तुम्हारी शीला दीक्षित भी नहीं बचेगी। तुम्हारे में हिम्मत नहीं है जो। तुम्हारे में हिम्मत तो यही है कभी सत्येंद्र जैन को पकड़ लेते हो, कभी हमारे एमएलए को पकड़ लेते हो। कभी इनको पकड़ लेते हो विजय माल्या को पकड़ने की हिम्मत नहीं है। राबर्ट वाड्रा की तरफ नरेंद्र मोदी अंगुली उठा कर दिखा दें, मान जाऊंगा नरेंद्र मोदी में 56 इंच का सीना है, हिम्मत है। हिम्मत नहीं है नरेंद्र मोदी के अंदर कि यूं अंगुली उठाकर दिखा दें। राबर्ट वाड्रा खा जाएगा राबर्ट वाड्रा कच्चा चबा जाएगा नरेंद्र मोदी को। मिनिमम वेजेज की फाइल कितनी महत्वपूर्ण फाइल थी, अगस्त के अंदर ये हो गया होता, अगस्त में आ गया था निर्णय। क्या करा? नजीब जंग साहब को फोन किया मोदी जी ने कोई भी इनका काम मत होने दो। नजीब जंग साहब ने फाइल में क्या लिखा सिलेक्शन हम लोगों ने मिनिमम वेज बोर्ड एक कमेटी बनती है, वो कमेटी में 15 सदस्य होते हैं। कानून में लिखा है 5 सदस्य ट्रेड यूनियन के होते हैं, 5 सदस्य इंडस्ट्री वालों के होते हैं, 5 सदस्य सरकार के होते हैं। इमने उसी हिसाब से बनाई थी फाइल। पर लिखा, आपने मेरी अप्रूवल नहीं ली। (4.40) इसलिए मैं इस पूरी की पूरी

प्रोसिडिंग्स को बेचारी कमेटी ने सात मीटिंग करी, पूरा मार्किट का सर्वे कराया। छह महीने तक उन्होंने अपना खून पसीना बहाया उसके बाद रिपोर्ट दी। उस पूरी रिपोर्ट को ये कह के खारिज कर दिया कि भई, उस कमेटी की एप्रूवल नहीं ली थी। अरे! अप्रूवल लेनी नहीं थी हमारे हिसाब से, पर मान लो लेनी भी थी तो दे देते। बाद में दे देते। कोई किसी का कुछ घिस जाता, अगर बाद में दे देते? कोई नजीब जंग साहब की इज्जत कम हो जाती, मोदी जी की इज्जत कम हो जाती? अगर जनता का फायदा हो जाता क्या हो जाता? दे देते। खारिज कर दी। वो जनता से दुश्मनी ले रहे हैं। जो आदमी जनता से दुश्मनी लेता है, वो कभी भी आगे तरक्की नहीं कर सकता। ये सोच लेना लेकिन सर हम लोगों ने भी इसको इज्जत का सवाल नहीं बनाया। हमने कहा कि चलो वो कहते हैं दोबारा कमेटी बनाओ वही मेंबर दोबरा बना दिये। वही फिर सात मीटिाग की। वही फिर सर्वे कराया। किसका फायदा हुआ, बताओ? इस पूरी मशक्कत से किसी का फायदा हुआ? आठ महीने खराब हो गये बस। यही हुआ। कोई मोदी जी की इज्जत में चार चांद लग गये हों तोबता दो। भई मिनिमम वेज आठ महीने जनता को बेचारी जनता को और ज्यादा मिल जाते इतना उन लोगों से लड़-लड़ के अनओथराईजड कालोनीज की बात कर रहे थे, यही करा दो अनओथराईड कालानीज को रेगुलराईज करने के लिए, कच्ची कालोनियों को पक्का बनाने के लिए डेढ़ साल पहले फाईल भेजी थी केंद्र में, अभी तक नहीं करके दी। कुंडली मार के बैठे हैं मोदी जी। क्यों, दिल्ली की जनता से बदला लेना है? किस किस से बदला लोगे? सारे देश से बदला लोगे क्या? बिहार में भी हार गये, दिल्ली में भी हार गये, पंजाब में भी हारोगे, उत्तर प्रदेश में भी हारोगे। सब जगह! किस किस से बदला लोगे? काम करो। काम के बेसिस पर जनता वोट देती है। डेढ़ साल हो गये। अब

हाई कोर्ट ने फटकार लगाई है मोदी सरकार को कि क्यों बैठे हो डेढ़ साल से? इसके ऊपर निर्णय लो। मैं आपको ये काम सौंपता हूं। आहज पूरा सदन हाथखड़ा करके बता दो सारे। मंजूर है? सारे आज विजेंद्र गुप्ता जी को ये काम सौंपते हैं कि अनओथराईज कालोनी कच्ची कालोनीज को पक्का कराने की फाईल क्लीयर करा कर ला दो केंद्र सरकार से। ये तो करा सकते हो?. ...(व्यवधान) ऐसी बहुत सारी चीजें हैं जी, जिसके ऊपर केंद्र सरकार की सारी अड़चनों के बावजूद हम लोगों ने काम करा है। मैं तो चैलेंज करता हूं जो इनकी सरकारें हैं, उनके ऊपर कोई अड़चन नहीं है। फिर भी वो काम नहीं करती हैं। इतनी अड़चनों के बावजूद मुझे नहीं लगता कि आज अगर दिल्ली का मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी भी होता तो एक काम इसमें से करके दिखा सकता था। वो बिल्कुल नहीं कर सकता था। कोई नहीं कर सकता था। ये इसी आम आदमी पार्टी की सरकार की संघर्ष, लड़लड़ के, लड़लड़ के, लड़लड़ के इन लोगों से करवाया है काम।

एक चीज आप लोगों के समक्ष रखना चाहता हूं जो बहुत सारे लोगों को पता नहीं है, आपको याद होगा, हमारी सरकार बनने के पहले कैसे हर साल बिजली के रेट बढ़ाये जाते थे। दिल्ली की सारी जनता कहती थी कि ये बिजली कंपनियों ने खूब घपला कर रखा है। हम सारे कहा करते थे कि बिजली कंपनियों का ऑडिट होना चाहिए। शीला दीक्षित कहती थी, ''ऑडिट नहीं हो सकता, सीएजी का ऑडिट नहीं हो सकता।'' हम पूछते थे, ''क्यों नहीं हो सकता था? कहती थी कि कोर्ट ने स्टे लगा रखा है। जब मैं मुख्यमंत्री बना, मैंने फाईल मंगाई, पता चला कोर्ट का कोर्ट स्टे नहीं था। झूठ बोल रही थी। हमने तुरंत सीएजी का ऑडिट आ ऑर्डर करा। डेढ़ साल के बादसीएजी के ऑडिट की रिपोर्ट आ गई, आठ हजार करोड़ रूपये का उसमें घपला निकला।

आठ हजार करोड़ का। लेकिन दुख की बात ये है कि ये सारी बिजली कंपनियों ने हाई कोर्ट से उस रिपोर्ट को उन्होंने खारिज करा दिया। ऑर्डर बिल्कुल गलत है हाई कोर्ट का। दिल्ली सरकार उसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में गई सुप्रीम कोर्ट में बिजली कंपनियों को बचाने के लिए कांग्रेस ने अपेन तीन सबसे बड़े वकील खड़े कर दिये बिजली कंपनियों के फेवर में पी चिदंबरम, अभिषेक मनुसिंघवी औरकपिल सिब्बल। बड़ी दोस्ती है जी बिजली कंपनियेां से। इतनी तकलीफ हो रही है कांग्रेस को। हम क्या कह रहे हैं सुप्रीम कोर्ट में? हम सुप्रीम कोर्ट में कह रहे हैं।

....(व्यवधान)

मुख्यमंत्री : हमने भी करे हैं।

....(व्यवधान)

मुख्यमंत्री : नहीं हमने भी बहुत बड़े करे हैं लेकिन कांग्रेस को क्या जरूरत थी देखो कितनी तकलीफ हुई कांग्रेस के नाम से। बिजली कंपनियेां के नाम से कितनी तकलीफ हुई।

....(व्यवधान)

मुख्यमंत्री : हां कांग्रेस में मिले हुए हो ना आप। हम क्या कह रहे हैं सुप्रीम कोर्ट में हम सुप्रीम कोर्ट में कह रहे हैं, ''भई, ये आठ हजार करोड़ रूपये का घपला हुआ है। इस ऑडिट रिपोर्ट को लागू किया जाये। आठ हजार करोड़ रूपये की बिजली कंपनियों से रिकवरी की जाये और दिल्ली के अंदर बिजली के दाम और कम किय जायें।'' और कांग्रेस जा के क्याकह रही है कि ये ऑडिट रिपोर्ट खारिज की जाये। बिजली कंपनियों ने कोई घपला नहीं

किया है और दिल्ली में बिजली के दाम और बढ़ाये जायें। हम सुप्रीम कोर्ट में बिजली के दाम घटाने के लिए गये हैं और कांग्रेस पार्टी सुप्रीम कोर्ट के अंदर बिजली के दाम बढ़ाने के लिए गई है। दोस्तो, हम तो बहुत छोटे हैं। राजनीति में नये आये हैं। दो ही साल हुए हैं, हमको तो राजनीति में आये हुए। हमको क्या पता, राजनीति क्या होती है लेकिन जो थोड़ा बहु पता चला है ये सारे मिले हुए है जी, अंदर। ये बीजेपी, कांग्रेस सारा घालमेल है और मैं ये कई बार सोचता हूं, ''भई, रोबर्ट वाड्रा को पान पी पी के गालियां दी मोदी जी ने चुनाव के पहले। दामाद फलाना, डिमका, आऊंगा तो जेल भेज दूंगा। आज तीन साल तो हो गये उसको एफआईआर भी नहीं हुई उनके खिलापु एफआईआर भी नहीं हुई।'' इनको सबको तकलीफ ये है कि ये अच्छा खासा इनका परिवार था, बीजेपी, कांग्रेस, एसपी, बीएसपी, ये शरद पवार फलाना डिमका सबका अच्छा खासा हंसता खेलता परिवार था, ये कहां से आ गये? ये बाहर वाल्े तकलीफ यही है। तकलीफ इनको ये है कि अगर ये बने रहे तो हमको जीने नहीं देंगे ये, तो सारे के सारे, सारी पार्टियां हजम लोगों को बर्बाद करने में तुली हुई हैं। पिछले तीन साल के अंदर मोदी जी ने कांग्रेस के एक राबर्ट वाड्रा तो खैर! बहुत उनसे भी बहुत ऊंची चीज है, मोंद जी से भी। कांग्रेस के एक सरपंच को भी गिरफ्तार नहीं किया। पूरे देश के अंदर एक सरपंच गिरफ्तार किया हो कांग्रेस का और हमारे बीस एमएलए गिरफ्तार के लिए! इनको तकलीफ तोह मसे ये है। सबकी फाइलें खोल रखी हैं मोदी जी ने और जब कांग्रेस थी, उन्होंने खोल रखी थी एक दूसरे की फाइलें खोल रखी हैं सब की फाईलें। मेरे ऊपर सीबीआई की रेड भी इसी वजह से कराई थी। कुछ तो मिलेगा। दो फाईलें इसकी भी, मेरी भी दो फाइलें खोल देते। मैं भी उनके कब्जे में आजाता। कुछ मिला ही नहीं मेरे खिलाफ। मफलर मिले, वो कह

रहे हैं, ''चार मफलर मिले।'' कुछ नहीं मिला मेरे खिलाफ। ये सारा इन्कम टैक्स के अंदर हमारी पार्टी के रोज हमारे सममन कर कर के....मैं भी इन्कम टैक्स काम करता था, इस तरह से इन्कम टैक्स विभाग का राजीनतिकरण मैंने अपनी जिंदगी में कभी नीं देखा। जिस बेशर्मी के साथ इन्कम टैक्स आफिसर आम आदमी पार्टी के ऑडिटर को बुलाता है, स्टेटमेंट रिकार्ड करने के लिए और उसको धामकी देता है कि आप आम आदमी पार्टी के साथ संबंधा तोड़ दो। इस तरह से राजनीति करोगे, राजनीति करनी है, चुनाव लड़ो। इन्कम टैक्स, हमारे जितने डोनर हैं जितने हमें चंदा देते हैं, उनके घर जा जा के धामकियां दे रहे हैं इन्कम टैक्स वाले कि आप आम आदमी पार्टी को चंदा देना बंद कर दो नहीं तो बर्बाद कर देंगे। आम आदमी पार्टी को छोड़ दो। ये राजनीति है आप लोगों की! हम इनके कंट्रोल में ही नहीं आ रहे, इसलिए इन लोगों को सबसे ज्यादा तकलीफ हो रही है लेकिन इस देश की जनता बड़ी सयानी है। सारे मीडिया पर भी आप लोगों ने कब्जा कर रखा है। मीडिया केवल आपको ही आपको दिखाता है। मैं आज तक चैनल के ऊपर देख रहा था आधो घंटे का प्रोग्राम उसमें दिखा रहे थे कि मोदी जी कितना काम करते हैं। चौबीस घंटे काम करते हैं। पांच बजे उठते हैं, क्याकाम करते हैं, ये नहीं दिखा रहे थे। लगे रहते हैं, लगे रहते हैं। या तो काम नहीं करना आता है।

....(व्यवधान)

मुख्यमंत्री : आज तक वालों ने ने ये नहीं दिखाया क्या काम करते हैं। काम कितना करते हैं बहुत ही इनऐफिशियेंट हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैं इस मोशन का पूरी तरह से समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : श्री कपिल मिश्रा माननीय पर्यटन मंत्री द्वारा दिनांक 6 मार्च 2017 को माननीय उपराज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत धान्यवाद प्रस्ताव सदन के सामने है कि :

''यह सदन उपराज्यपाल द्वारा दिनांक 6 मार्च 2017 को विधाानसभा में दिये गये अभिभाषण के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता है।''

यह प्रस्ताव सदन के सामने है;

जो इसके पक्ष में है वो हां कहें;

जो इसके विरोधा में वो ना कहें;

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

माननीय उपराज्यपाल महोदय को इसकी सूचना भिजवा दी जायेगी।

अल्पकालिक चर्चा (नियम - 55)

सुश्री अलका लांबा जी रामजस कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय में एबीवीपी के कार्यकर्ताओं द्वारा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कथित प्रहार विषय पर विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों तथा पत्रकारों पर कथित हमले के संबंधा में चर्चा आरंभ करेंगी अलका लांबा जी। (4.50)

सुश्री अलका लांबा : धान्यवाद अध्यक्ष जी, आपने नियम-55 के तहत मुझे अपनी बात रखने का मौका दिया।

अध्यक्ष जी, दिल्ली विश्वविद्यालय में रामजस कॉलेज में जो हिंसा ये हुई, अपने आप में अध्यक्ष जी पहली हिंसा नहीं है। हम सबको याद है हैदराबाद विश्वविद्यालय, सेंट्रल यूनिवर्सिटी में रोहित वेमुला का किस्सा हम भी भूले भी नहीं थे....

अध्यक्ष महोदय : एक सैकेंड, माननीय सदस्य बैठे सदन में, बहुत जरूरी विषय है प्लीज।

सुश्री अलका लांबा : अध्यक्ष जी, दिल्ली विश्वविद्यालय में अभी हुई हिंसा अपने आप में पहली हिंसा नहीं हे। अभी वो ही मैं बात कर रही थी कि हैदराबाद विश्वविद्यालय, सैंट्रल यूनिवर्सिटी में एबीपीवी की गुंडागर्दी का सबसे बड़ा उदाहरण रहा, एक दलित छात्र रोहित वेमुला को इस तरीके से प्रताड़ित किया जिसमें 2 केंद्रीय मंत्रियों का भी नाम आया और अंत में हुआ क्या कि रोहित वेमुला को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। वो वाकया अभी खत्म ही नहीं हुआ था, दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में फिर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जो बीजेपी का छात्र संगठन है, उनसे संबंधा रखता है, उनकी गुंडागर्दी का दूसरा उदाहरण हमारे सामने आया।

अध्यक्ष जी, जेएनयू में भी वही हुआ कि एक लेफ्ट छात्र विंग है जो अपनी बात को रख रहा थाव हां पर, उन पर आरोप लगे जिसमें उमर खालिद, जो वहां के छात्र हैं और कन्हैया कुमार इन पर आरोप लगाए गए कि इन्होंने विश्वविद्यालय में देश विरोधाी नारे लगाए हैं। जिसमें उन लोगों के ऊपर देश विरोधाी नारे लगाने के आरोप लगे, केस दर्ज हुआ लेकिन सबसे बड़ी बात अध्यक्ष जी कि आज एक साल से ऊपर हो गया है, चार्जशीट दिल्ली पुलिस कोर्ट में दाखिल करने में पूरी तरह अभी तक नाकामयाब रही है और सबसे

बड़ी बात है कि जिस कन्हैया कुमार को देश द्रोही एक साल भर कहा जाता रहा, वो वहीं छात्र है जो बिहार के एक गांव से, एक गरीब परिवार से आता है, वो इन्हें चुनौती दे रहा था। इनकी सोच जो आरएसएस, बीजेपी की सोच है, जो कट्टर इनकी सोच है, उसको चुनौती दे रहा था, उस पर चर्चा हो रही थी। लेकिन उसे देशद्रोही कहा गया। उसके ऊपर झूठा केस डाला गया और अभी की जांच में आया है कि कन्हैया कुमार के मामले में जो फोरेंसिक जांच हुई उस विडियो की, ऑडियो जांच में आया कि कन्हैया कुमार को बिल्कुल बरी कर दिया गया है। उसका किसी भी तरह के देश द्रोही नारों में कोई भी किसी तरह का हाथ नहीं था। अब ये बात उठती है कि दिल्ली पुलिस एक साल के बावजूद भी, अगर सारे सबूत हैं तो चार्जशीट करने में नाकामयाब क्यों है? क्यों दिल्ली पुलिस चार्जशीट नहीं करती है? वो सब वीडियो है कि कौन लोग थे जो देशद्रोह के नारे लगा रहे थे। उनको आज तक क्यों गिरफ्तार नही किया? उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की गई?

अब अध्यक्ष जी, बात आती है दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस में 21 फरवरी को क्या हुआ। 21 फरवरी को यहीं लेफ्ट स्टूडेंट यूनियन जो जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से संबंधा रखते हैं, रामजस कॉलेज में उमर खालिद, इन्हें बुलाया गया और इनका जो, जिस विषय पर ये पीएचडी कर रहे हैं, उस विषयपर जो आदिवासियों के ऊपर है, उनके संघर्ष के ऊपर है, उसके ऊपर उन्हें बोलने के लिए उमर खालिद को बुलाया गया। होना ये थाकि उसके ऊपर उन्हें बोलने के लिए उमर खालिद को बुलाया गया। होना ये था कि उसके ऊपर बात हो, उससे पहले ही एक गुट जो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से संबंधा रखता है, उन्होंने कॉलेज के बाहर आकर कनारेबाजी शुरू

कर दी और उन्होंने ये कहा कि उमर खालिद को कॉलेज से बाहर किया जाए। ये देशद्रोही है, ये देश राष्ट्रविरोधाी है। हम इन्हें बर्दाश्त नहीं करेंगे। खूब नारेबाजी हुई और जब कॉलेज प्रशासन ने जो रामजस का है, उन्होंने व्यक्ति की आजादी और जिस मुद्दे पर उमर खालिद को बुलाया गया था; आदिवासियों के मुद्दे पर बोलने से उन्हें रोकने से मना कर दिया है कि नहीं, ये बहस होगी, चच्रा होगी और उमर खालिद इस विषय पर, जो विषय था, उस पर अपनी बात को रखेंगे तो इतनी देर में पथराव शुरू हो गया। उस पथराव मे पूरे कॉलेज के शीशे, खिड़कियां सब तोड़ दी गई और कुछ गुंडा तत्व मैं कहती हूं धाक्का-मुक्की करके उसे डिबेट रूम के अंदर भी दाखिल हो गए और पूरी तरीके से डिबेट को उन्होंने नहीं होने दिया और उसमें काफी लोग घायल भी हुए। दिल्ली विश्वविद्यालय के इंग्लिश के प्रोफेसर उसमें बहुत बुरी तरह घायल हुए और उनकी तो जांच रिपोर्ट में ये आ रहा है कि वो अभी कुछ दिनों तक विश्वविद्यालय में अपने पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए भी बच्चों के लिए आ नहीं सकते है। उनको इतनी बुरी तरह से इंटरनल-एक्सटर्नल चोटें आई।

अध्यक्ष जी, एक साजिश के तहत, मैं साहिश का एक-एक करके खुलासा करूंगी कि किस तरीके से हैदराबाद सैंट्रल यूनिवर्सिटी में एक दलित छात्र रोहित वेमुला को टारगेट किया गया, जिसे जान से हाथ धाोना पड़ा किस तरीके से जवाहरल लाल नेहरू विश्वविद्यालय में कन्हैया कुमार को टारगेट किया गया। आज वो बिल्कुल बेकसूर साबित हुए हैं, पुलिस की जांच में। आज इसी तरह दिल्ली विश्वविद्यालय में एक छात्रा जिसका नाम है गुरमेहर, उसे टारगेट किया गया है। गुरमेहर का कसूर क्या था? गुरमेहर ने अध्यक्ष जी, सिर्फ इतना ही कहा कि जो पथराव हुआ है, जो गुंडागर्दी हुई है, जो व्यक्ति की आजादी,

बोलने की आजादी पर पाबंदी लगी है कि अगर आप उनकी बात नहीं सुनेंगे तो वो हिंसा पर उतर आएंगे और उन्होंने पथराव तक किए। उन्होंने हिंसा का रास्ता अपनाया। गुरमेहर ने सिर्फ अध्यक्ष जी, अकेली नहीं है पूरे दिल्ली विश्वविद्यालय के सभी छात्र जिन्होंने इस पथराव को होते हुए देखा, इस हिंसा के होते हुए देखा, उन्होंने एक प्ले कार्ड पूरे सोशल मीडिया पर हाथ में पकड़कर फोटो अपनी डाली जिसमें गुरमेहर अकेली नहीं थी। उसमें लिखा क्या था, उसमें ये लिखा था, ''I am a student from Delhi University, I did not afraid of ABVP. I am not alone. Every student of India is with me." इसके साथ कौन इत्तेफाक नहीं रखेगा। गुरमेहर की तरह बहुत स्टूडेंटस न कहा कि हम विश्वविद्यालय में हुई अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की गुंडागर्दी के खिलाफ आवाज उळठाते हैं औरह म इस तरह की हिंसा का समर्थन नहीं करते हैं। अध्यक्ष जी, उसके बाद क्या हुआ, गुरमेहर कौर का एक प्ले कार्ड पकड़ा हुआ, जो ये नहीं था। जिसमें वो एबीवीपी की गुंडागर्दी के खिलाफ बोल रही है। एक ओर उसके हाथ में प्लेकार्ड था जिसमें लिखा हुआ था, ''IPakistan did not kill my dad, War killed him." यानि क मेरे पिता को पाकिस्तान ने नहीं, युद्ध ने मारा है। ये अभी का नहीं, ये एक साल पुराना है। एक स्लाइड शो है अध्यक्ष जी, अगर आप मुझे इजाजत दें, मैं इस सदन में उस स्लाइड को चलाना चाहती हूं। उस स्लाइड में आप देखेंगे कुल जो है इस तरह के 36 प्लेकार्ड गुरमेहर ने दिखाए हैं लेकिन 36 पे बात नहीं होती है। सिर्फ एक पे बात होती है और वो प्लेकार्ड यही है जिसमें वो कहती है, "Pakistan did not kill my dad, War killed him." और इस प्लेकार्ड के दिखाने की एवज में होता क्या है, कुछ फर्जी

राष्ट्रवाद जो देशभक्ति की दुहाइयां देते हैं अध्यक्ष जी, उन्होंने गुरमेहर को इस वाकये के लिए जो एक साल पहले उसने अपनी बात को रखा है, उस पर बलात्कार की धामकियां तक मिलनी शुरू हो गई। गुरमेहर का कसूर क्या था कि उसने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की गुंडागर्दी के खिलाफ पथराव जो उन्होंने किया है, उसके खिलाफ उसने आवाज उठाई अन्य छात्राओं की तरह लेकिन आपने गुरमेहर को ही टारगेट क्यों किया और ये एक साल पुराना प्लेकार्ड अध्यक्ष जी, मैं आपसे निवेदन करूंगी इस हाउस के सामने मैंने पैन ड्राइव में पूरी, सिर्फ 4 मिनट का एक स्लाइड शो है, अगर आप चलाएंगे तो गुरमेहर का सिर्फ वो शांति चाहती है। अध्यक्ष जी, मैं इस हाउस में जितने मेरे साथी बैठे हैं, मैं पूछना चाहूंगी कौन आप में से युद्ध चाहता है और कौन देश और विश्व में शांति चाहता है? अगर हम पूछेंगे तो हम सभी चाहते हैं और खासतौर से हिंदुस्तान तो चाहता ही है, जो बापू को देश है, जिस बापू ने हमें सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर इस देश को आजादी तक हमें दिलवाई। आज वो ही बापू का देश सत्य और अहिंसा का, पूरे विश्व में शांति चाहता है। हम चाहते हें कि हमारे पड़ोसी देशों के साथ हमारा भाईचारा हो। मैं पूछना चाहती हूं देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जब शपथ ली तो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को क्यों हिंदुस्तान में बुलाया अपनी शपथ में? कहीं न कहीं हमें भी ये लग रहा था कि देश का प्रधानमंत्री भी शांति के रास्ते से सुलह और समझौता चाहते हैं। देश ने पूरा समर्थन किया। उसके बाद कुछ हासिल नहीं हुआ। देश के प्रधानमंत्री को किसी ने देशद्रोही नहीं कहा। देश के प्रधानमंत्री को किसी ने धामकियां नहीं दीं। लेकिन दूसरी बार देश के प्रधानमंत्री नाकाम होते हैं तो वहां पर पहुंच जाते हैं। उनके धार की एक शादी पर, उनके जन्मदिन

पर केक खाने के लिए। हमें फिर एक बार महसूस होता है कि देश के प्रध ानमंत्री सुलह शांति के रास्ते से हिंदुस्तान-पाकिस्तान के बीच में जो कुछ भी हो रहा है, उसका रास्ता निकलाना चाहते हैं। हमने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को गद्दार, देशद्रोही नहीं कहा। आपने उसके बाद साड़ियां और शॉलों का बदलाव किया, हमने तब भी आपको देशद्रोही नहीं कहा। आपने पठानकोट आतंकी हमले में देश के प्रधानमंत्री, पाकिस्तान की जांच एजेंसी को सरहद से हमारे देश में ले आते हैं और पठानकोट के हमारे ऐयरबेस के अंदर तक जाने की इजाजत दे दते हैं और उनको कहते हैं कि आप जांच करिए। हमने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, तब भी आप पर यकीन किया कि ये सब प्रयास आपके युद्ध से हटाकर शांति के रास्ते से देश के अंदर एक माहौल पैदा करने की कोशिश है। आतंकवाद से शांति के रासते से एक होकर लड़ने की कोशिश है। तो मैं ये पूछना चाहूंगी कि अगर देश के प्रधानमंत्री इन सब चीजों के बावजूद देशद्रोही, गद्दार नहीं है, तो गुरमेहर कौर अगर ये बात करती है कि हमें युद्ध नहीं चाहिए, हमें विश्व में जो युद्ध की स्थिति है, हमें नहीं चाहिए, हमें शांति चाहिए, हमें भाईचारा चाहिए औरअ गर आतंकवाद भी है तो दोनों देश बैठे, बातचीत के रास्ते से इनको आगे बढ़ाएं।

(सदन में गुरमेहर कौर की वीडियो सीडी दिखाई गई)

मैं इस सीडी में आपका धयान दिलाना चाहूंगी जो गुरमेहर कौर की है, जिस पर बवाल हुआ जिसमें गुरमोहर कौर, उसमें वो कहती है (5.00) हाय, मेरा नाम गुरमेहर कौर है। मैं जालंधार की रहने वाली हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : यहां हाउस में ये सीडी कैसे चल सकती है?

अध्यक्ष महोदय : मैंने इजाजत दी है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : रूल में साफ लिखा है।

अध्यक्ष महोदय : कौन से रूल में है?

श्री विजेंद्र गुप्ता : रोकिये इसको, रोकिये इसको।

अध्यक्ष महोदय : कौन से रूल में है? पहले आप बताओ तो भईया। विजेंद्र जी बताइये तो सही कौन से रूल में है?

सुश्री अलका लांबा : मैं जब दो साल की थी। मेरी अधिाकतर यादें यही है कि पिता का ना होना कैसा होता है। मुझे यह भी याद है कि मैं पाकिस्तान और पाकिस्तानियों से कितनी नफरत करती थी। क्योंकि उन्होंने मेरे पापा को मारा था। मैं मुसलमानों से भी नफरत करती थी क्योंकि मुझे लगता था कि सभी मुसलमान पाकिस्तानी होते हैं। मैं जब 6 साल की थी मैंने बुर्के पहने एक औरत पर हमला करने की कोशिश की थी।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप बताइये ना, मैं सुन रहा हूं।

सुश्री अलका लांबा : क्योंकि कुछ अजीब कारणों के चलते मुझे लगा कि मेरे पापा की मौत के वही जिम्मेदार है तब मेरी मां ने मुझे संभाला और मुझे समझाया कि पाकिस्तान ने नहीं, ये स्लाईड देखियेगा कि पाकिस्तान ने मेरे पापा को नहीं मारा, जंग ने उन्हें मारा है ये वो स्लाईड है। आगे ये कहती है समझाने में, मुझे ये समझने में मुझे समय लगा लेकिन अब मैंने अपनी नफरत

को त्यागना सीख लिया है। यह आसान नहीं था, लेकिन यह मुश्किल भी नहीं है। अगर मैं ये कर सकती हूं तो आप ये क्यों नहीं कर सकते हैं। मैं हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच शांति स्थापित करने के लिए लड़ रही हूं, क्योंकि अगर हमारे बीच जंग नहीं होती तो मेरे पापा आज यहां होते। मैं ये वीडियो इसलिए बना रही हूं क्योंकि मैं चाहती हूं कि दोनों देशों की सरकारें अब दिखावा बंद करें और समस्याओं को सुलझाएं।

अध्यक्ष महोदय : मैं वीडियो देख चुका हूं।

....(व्यवधान)

सुश्री अलका लांबा : अगर फ्रांस और जर्मनी दो विश्व युद्ध लड़ने के बाद भी दोस्त बन सकते हैं, अगर जापान, अमेरिका इतिहास पीछे छोड़ते हुए एक साथ प्रगति के लिए काम कर सकते हैं तो फिर हम क्यों नहीं कर सकते? अधिाकतर हिंदुस्तानी और पाकिस्तानी चाहते हैं युद्ध नहीं हो। मैं दोनों देशों की नेतृत्व क्षमताओं पर सवाल कर रही हूं। हम थर्ड वर्ल्ड का नेतृत्व लेकर, फस्ट वर्ल्ड मनाने का सपना नहीं देख सकते हैं, प्लीज अपने प्रयासों में सुधाार लाएं एक दूसरे से बात करें, काम करें, शांति के रास्ते पर आएं। राष्ट्र द्वारा प्रायोजित आतंकवाद बहुत हो चुका, राष्ट्र द्वारा प्रायोजित जासूस बहुत हो चुके, राष्ट्र द्वारा प्रायोजित नफरत बहुत हो चुकी, बार्डर के दोनों तरफ बहुत लोग मारे जा चुके हैं, अब बहुत हो चुका! मैं एक ऐसी दुनिया मेंर हना चाहती हूं जहां कोई गुरमेहर कौर ना हो जो अपने पापा का मिस कर रही हो। मैं अकेली नही हूं। मेरे जैसे कई ऐसे लोग हैं जो विश्व में यद्ध नहीं, श्यांति चाहते हैं। ये संदेश गुरमेहर कौर देना चाहती है।

(श्री विजेंद्र गुप्ता वैल में आये)

अध्यक्ष महोदय : कन्कलुड करिये, कन्कलुड करिये प्लीज।

सुश्री अलका लांबा : अध्यक्ष जी, ये जो गद्दार कह रहे हैं उस छात्रा को जो बीस साल की है जो विश्व शांति का संदेश दे रही है मैं इनसे पूछना चाहती हूं ध्रुव सक्सेना कौन है? ध्रुव सक्सेना भाजपा का कार्यकर्ता है, मध यप्रदेश में आईएसआई के एजेंट के तौरपर पकड़ा गया है। देशद्रोही कौन है? मैं ये कहूंगी कि ये नफरत की राजनीति बंद करें। अमेरिका में दो भारतीय आज इसलिए मौत का शिकार हो गये क्योंकि वहां पर नफरत की राजनीति का आगाज हुआ है। अध्यक्ष जी, ये बिल्कुल आज विपक्ष के नेता द्वारा एक बार फिर प्रयास किया गया है कि गुरमेहर की जो सच्चाई है, देश के सामने आने से उसे रोका जाए। आज सच्चाई ये है कि आरएसएस का एक नेता खड़े होकर इस बात को स्वीकार करता है, आरएसएस के कुंदन चंद्रवाल जी कहते हैं कि गौधारा में तीन हजार को काट, मारा! केरला के मुख्यमंत्री।

अध्यक्ष महोदय : कन्कलुड करिये, कन्कलुड करिये।

सुश्री अलका लांबा : कन्कलुड करूंगी पर ये जो नफरत और घृणा की राजनीति है अध्यक्ष जी, हम पूछना चहाते हैं 3 पुलिस वालों को सस्पैंड किया गया है क्यों? क्योंकि उनके खिलाफ सबूत है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के गुंडों को उन्होंने संरक्षण दिया। दिल्ली महिला आयोग की स्वाति मालीवाल अगर दिल्ली पुलिस कमिश्नर के पास ना जाती तो ये एफआईआर भी नहीं होती जो आज हुई है। हम महिला विधाायक दिल्ली पुलिस कमिश्नर से मिलने गये, समय देने के बावजूद दिल्ली पुलिस का कमिश्नर ने हम महिला

विधाायकों को मिलने से मना कर दिया। कहीं ना कहीं पूरे तरीक से इन्हें संरक्षण मिला हुआ है और एक बाद एक विश्वविद्यालयों में नफरत और जहरीला राजनीति घोलने का ये काम कर रहे हैं। अध्यक्ष जी, ये नहीं चलेगा और सबसे बड़ी बात रखने पर, अपने देश के प्रधानमंत्री सोशल मीडिया पर फोलो करते हैं। अध्यक्ष जी, ये किस तरफ संदेश जाता है? मैं आपसे कहूंगी ये बात जितनी आपको हल्की लग रही है, उतनी हल्की नहीं है। ये आईएसआई के एजेंट कौन हैं? ये भाजपा के कार्यालयों में बैठे हुए हैं। उनके मीडिया का हेड है मधयप्रदेश का, जिनकी गुरमेहर कौर से जो 20 साल की, एक शहीद की बेटी है जो एक छात्र है। जो सिर्फ एक ललकार लगाकर विश्व शांति की बात करती है, उससे खतरा होता है लेकिन उन प्रधानमंत्री जी ने बात साफ कर दी है। वो पाकिस्तान की गोद में जाकर बैठ जाते हैं। अपने पठानकोट की जांच के लिए पाकिस्तानी जांच एजेंसियों से जांच करवाते हैं। खतरा उनसे है या खतरा सोशल मीडिया से है? मैं कहूंगी अध्यक्ष जी, बहुत बड़ी साजिशइस देश में चल रही है। अगर आप इनकी विचारधाारा से सहमत हैं तो ठीक है। अगर आप इनकी विचारधाारा के खिलाफ जाते हैं तो देशद्रोही हो गये। आपको देश से बाहर निकाल देना चाहिए। आपको बलात्कार तक की धामकियां दी जाती हैं और दुख की बात है गुरमेहर कौर के खिलाफ जिन्होंने बलात्कार की धामकी दी। एक को भी अब तक पकड़ा नहीं गया है। वहीं जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में जिन्होंने देशद्रोही नारे लगाये। एक भी पकड़ा नहीं गया। और अध्यक्ष जी, अगर पकड़े जाएंगे तो क्या सच्चाई सामने आएगी? मुम्बई में भाजपा की बहुत बड़ी नेता हैं साईना एनसी। उसने कहा कि मेरे मोबाईल पर, मुझे रेप की, बलात्कार की वर्गल धामकियां आ रही हैं। अध्यक्ष जी, जब

उसकी जांच हो गई तो पता लगा वो कोई और नही भाजपा का ही एक कार्यकर्ता निकला। तो इन्हें भी मालूम है कि जो जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में जो देशद्रोही नारे लगा रहे थे, ये गुरमेहर को जो बलात्कार की धामकी दे रहे थे अगर जांच हो गई तो बिल्कुल जांच में सामने आएगा कि ये वही लोग हैं जिन्हें सोशल मीडिया पर देश के प्रधानमंत्री फोलो कर रहे हैं। जिनके ऊपर, खुद मैं कहूंगी कि अगर इनका नेतृत्व भी ऐसा हो जिनके ऊपर खुद लड़कयों का पीछा करने, जासूसी करने के आरोप लगते हों, तो आप सोच सकते हैं उनके नीचे भी वही की वही सोच और वही तरीके जो हैं, उनके नीचे जड़ें जो हैं, वो अपना रही है। अध्यक्ष जी, मुझे शर्म आती है जिनका मैं जिक्र करना चाहती हूं, दिल्ली के गृह मंत्री, केंद्रीय गृह मंत्री किरण रिजूजी ने ट्वीट किया गुलमेहर को बलात्कार की धामकी के बाद ट्वीट करते हैं कि हमें नहीं मालूम इस 20 साल की लड़की का दिमाग कौन प्रदूषित कर रहा है। यानि कि कहीं ना कहीं आप अपने इस वाकये के बाद आप सभी को समर्थन और ताकत दे रहे हैं जो गुरमेहर कौर को बलात्कार की धामकियां दे रहे हैं। 'आई सपोर्ट मोदी, आई सपोर्ट नमो' की एक वैबसाईट के माधयम से गुरमेहर कौर के खिलाफ षड्यंत्र रचा जा रहा है, उसे पूरी तरह बदनाम किया जा रहा है, झूठे वीडियो शेयर किए जा रहे हैं और ये किसी और की बेवसाईट से नहीं हो रहा है, 'आईसपोर्टनमो' की बेवसाईट से हो रहा है सोचने की बात ये है अध्यक्ष जी, आप इसे हल्के में मत लीजिये। अध्यक्ष जी, ऐसे में मैं बस ये कहूंगी कि इस देश में हर एक को अपनी बात रखने की आजादी है और अगर कोई अपनी आजादी का दुरूपयोग करता है अध्यक्ष जी, हम बिल्कुल कहते हें कानून के दायरों में उसके खिलाफ जो

सख्त से सख्त कार्रवाई हो सकती है, वो होनी चाहिए। लेकिन आप कानून को अपने हाथ में नहीं लेंगे। अध्यक्ष जी, ये पहली बार नहीं हुआ है इसी सदन के भाजपा के एक सदस्य ने किस तरीके से कानून अपने हाथ में, पटियाला कोर्ट में जब जेएनयू के छात्रों की सुनवाई चल रही थी, यही भाजपा के एक लॉ मेकर अब जो हमारे बीच से सस्पैंड आपने किया हुआ हैं किस तरीके से छात्रों को पीटते हुए, वो सड़क पर दिखे, यही प्रवृत्ति एबीवीपी की हैदराबाद सैंट्रल यूनिवर्सिटी, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी और आज दिल्ली यूनिवर्सिटी में दिख रही हैं ये ऊपर से नीचे तक एक षड्यंत्र और साजिशें चल रही है। आज क्यों आरएसएस के नेता को इस समय तक गिरफ्तार कर जेल में डाल देना चाहिए था। जो केरला के मुख्यमंत्री की गर्दन काट के लाने की बात करते हैं। हम तो किरण रिजूजी आपसे पूछना चाहेंगे, इनका दिमाग कौन प्रदूषित कर रहा हे? ये वो शख्स है आरएसएस के नेता चंद्रवाल जी, जिनके पिता खुद मधयप्रदेश में भूखमरी की कगार में हैं। उन्हें लकवा है। वो कहते हैं, मेरा बेटे, अगर एक करोड़ है। (5.10) तो किसी की गर्दन काटने के लिए नहीं, मुझे दो वक्त की रोटी खिलाने में इस्तेमाल करते हैं। ये हम आपसे पूछते हैं कि कौन इनका दिमाग प्रदूषित कर रहा है? अध्यक्ष जी, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर को पीटा गया। मीडिया के लोगों को, छात्रों को, और आज भी बलात्कार की धामकियां दी जा रही हैं।

अध्यक्ष जी, मैं हाथ जोड़ कर कहूंगी, दिल्ली पुलिस पूरी तरह से गुंडागर्दी के साथ मिलकर इन्हें बचाने का काम कर रही है और इससे ज्यादा घातक जो है, वह कुछ नहीं हो सकता। अध्यक्ष जी, बातें और भी बहुत हैं, सबूत और तथ्ये थे, लेकिन आप मुझे अपनी बात को समाप्त करने को कह रहे

हैं, इसलिए मैं कर रही हूं। लेकिन हम सच्चाई को दबने नहीं देंगे और इस देश में जो अभिव्यक्ति की आजादी है, बात रखने की आजादी है, हमें हमारे दायरे ना समझाएं, तो बेहतर है। अपने दायरों में रहिए। आईएसआई के एजेंट आपकी पार्टियों में घूम रहे हैं। कौन गद्दार है, कौन शॉल ओढ़ रहे हैं, किसने शहीदों के कफन चुराए हैं, ये देश जानता है। जय हिंद।

अध्यक्ष महोदय : धान्यवाद! राजेंद्र पाल गौतम जी।

श्री राजेंद्र पाल गौतम : धान्यवाद अध्यक्ष जी, इतने महत्वपूर्ण विष्ज्ञय पर आपने मुझे चर्चा के लिए अवसर दिया। अध्यक्ष जी, जब ये खबर मैंने अखबार में पढ़ी कि रामजस कॉलेज के अंदर चर्चा नहीं होने दी गई और वहां एबीवीपी के लोगों ने और पुलिस के लोगों ने मिलकर छात्र व छात्राओं के साथ-साथ प्रोफेसर्स को बहुत बुरी तरीके से पीटा तो मेरा दिल भर आया। इसलिए भर आया कि क्योंकि 1985 में जब मैंने रामजस कॉलेज में एडमिशन लिया था तब रामजस कालेज में ही नहीं, बल्कि दिल्ली यूनिवर्सिटी के सभी कालेजेज में विभिन्न मुद्दों पर राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर चर्चाएं हुआ करती थी और कॉलेज में चर्चा का होना बेहद जरूरी है। चर्चा से ज्ञान से बढ़ता है। चर्चा होने से, चर्चा में भाग लेने से तर्क शक्ति बढ़ती है और अगर चर्चाओं को परिचर्चाओं को सेनिमार्स में बंद कर दिया जाएगा तो छात्रों का सामूहिक विकास लगभग बंद हो जाएगा। हमारे देश का संविधाान हमें बोलने की आजादी देता है। Article 19 of Indian Constitution गारंटी देता है "Freedom of Speech and Experssion" की। ये ठीक है कि जहां Constitution सभी नागरिकों को भाषण व अभिव्यक्ति की आजादी देता है, वहीं कुछ रीजनेबल रेस्ट्रीकशन्स हैं और इस पूरे प्रकरण में कहीं भी ऐसा नहीं लगा कि रीजनेबल

रेस्ट्रीकशन्स Constitution of India ने लगाए हुए हैं, उससे कहीं बाहर जाकर कोई स्पीच हुई हो।

उपाधयक्ष महोदया (सुश्री राखी बिड़ला) पीठासीन हुई।

माननीय अध्यक्षा जी, ये मैं आपको दिखाना चाहता हूं किस तरह लड़कियों के साथ, प्रोफेसर्स के साथ बुरी तरीके से मारपीट की गई। इंगलिश के प्रोफेसर की रिब्स टूट गई है। उनको महीनों लगेंगे सम्भलने में। हमारे लॉ फैकेल्टी, जहां से मैंने लॉ किया, वहां एक प्रोफेसर है, प्रोफेसर वेद कुमारी, किस तरह उनको धामकी दी गई! वो आज भी सदमे में हैं। ये केवल धामकी....केवल मुझे नहीं, हर उस न्याय पसंद को, हर उस अमन पसंद को, जो युद्ध नहीं बुद्ध चाहता है, जो लड़ाई नहीं शांति चाहता है, जो तरक्की चाहता है, जो अमन चैन चाहता है, हर ऐसे रास्ते को भारतीय जनता पार्टी उसकी छात्र ईकाई रोकने का प्रयत्न कर रही है और जब से लगभग तीन साल होने को हैं, जब से केंद्र में मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है, तब से लगातार एक के बाद एक यूनिवर्सिटीज पर हमले हो रहे हैं। यूनिवर्सिटीज के अंदर परिचर्चाओं को रोका जा रहा है। चाहे वो मद्रास सैंट्रल युनिवर्सिटी में रोहित वेमुला का मामला हो, चाहे वो जेएनयू के अंदर का मामला हो,चाहे दिल्ली युनिवर्सिटी के रामजस कॉलेज का मामला हो। ये सारे के सारे मामले इंगित करते हैं कि पुलिस को भारतीय जनता पार्टी की केंद्रीय सरकार ने एक टूल के रूप में इस्तेमाल किया है। मैं समझता हूं कि पुलिस को स्वतंत्र होना चाहिए। पुलिस की जिम्मेदारी लॉ एंड आर्डर मैन्टेन करने की है। पुलिस की जिम्मेदारी किसी राजनैतिक पार्टी का हथियार बनने की नहीं है। लेकिन

लगभग पिछले तीन सालों से, हम लगातार देख रहे हें कि जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है, मई में पूरे तीन साल हो जाएंगे, तब से लगातार एक के बाद एक स्टेट गवर्नमेंटस को, स्टेट पुलिस को और दिल्ली पुलिस को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। एक छात्र कई तरीके से सीखता हैं। एक तरफ क्लास में जो प्रोफेसर्स, लैक्चरर्स पढ़ाते हैं, उससे सीखते हैं, दूसरा जो कॉलेजेज के अंदर जो परिचर्या होती हे, डिबेटस होती है, डिबेटस में छात्र पार्टिसिपेट करते हैं, अलग-अलग कालेजेज के छात्र आते हैं, वो तैयारी करते हैं सब्जेक्टों पर। नेशनल इंटरनेशनल इश्यूज पर डिबेटस होती हैं उन डिबेटस को सुनकर छात्र सीखते हैं। ज्ञान बढ़ता है। तर्क शक्ति बढ़ती है। आखिरकिस दिशा में मोदी जी, उनकी सरकार, भारतीय जनता पार्टी, एबीवीपी, आखिर देश को किस दिशा में ले जा रहे हैं? मैं समझता हूं, समय आ गया है जो लोग अमन पसंद है, जो लोग देश को तरक्की के रास्ते पर देखना चाहते हैं, उन लोगों को एक जुट हो जाना चाहिए। इकट्ठा होकर अपने देश के संविधाान की रक्षा के लिए, ख्हर नागरिक के मान-सम्मान की रक्षा के लिए, सभी के जीवन की रक्षा के लिए, सब को एक जुट होकर भारतीय जनता पार्टी का, मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार का, एबीवीपी का, आरएसएस का पुरजोर विरोधा करना चाहिए। उनको सही रास्ते पर लाना बहुत जरूरी है। चूंकि ये देश को एकजुट रखने के लिए बहुत जरूरी है। किसी राजनीतिक पार्टी को या किसी संस्था को कोई कानूनी अधिाकार नहीं है, कानूनी तो छोड़िए मोरल राईट भी नहीं है कि वो किसी को देश भक्त होने या देश विरोधाी होने का सर्टिफिकेट बांटे। यह हक इनको किसने दे दिया। मैं समझता हूं ऐसे लोग देश विरोधाी है जो देश के अमन के खिलाफ हैं, ऐसे लोग देश विरोधाी है जो

जातीयता फैलात हैं, क्षेत्रवाद फैलाते हैं, भाषावाद फैलाते हैं। ऐसे लोग देश विरोधी है जो भाई-भाई में नफरत पैदा करते हैं। मैं समझता हूं इंसान-इंसान के रूप में पैदा हुआ है। ये जाति और धार्म तो चालाक इंसानों की देन है। अब समय आ गया है कि लोगों को समझना पड़ेगा कि कौन देश का अपना है और कौन देश का पराया है। अभी अलका जी ने अपनी बात में विस्तृत रूप से बताया कि कौन-कौन से भारतीय जनता पार्टी, आरएसएस से जुड़े लोग देश विरोधी गतिविधियों में शामिल है। जिनका अभी-अभी लेटेस्ट पकड़े गए हैं, जिनके सबूत सामने आए हैं। मैं समझता हूं। कि अब पुनर्विचार हमारी केंद्र की सरकार को करना चाहिए। अपने उन लोगों के खिलाफ सोचना चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि अंदर ही अंदर उनके बीच में बैठे लोग देश को तोड़ने की साजिश रच रहे हैं। बाकी जांच बाद में करें, पहले कम से कम अपने अंदर बैठे उन लोगों की जांच करें। ऐसे लोगों को जेल भेंजें। सच सामने आना चाहिए। देश से बड़ा व्यक्ति नहीं हो सकता। देश सबसे बड़ा है। मैं इस बातको मानता हूं और आशा करता हूं कि जो लोग अमन पसंद हैं, जो देश भक्त हैं, वो लोग एक जुट होंगे और देश तोड़ने वालों को पहचानेंगे और उन्हें आने वो समय में सत्ता से बाहर करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। बहुत-बहुत धान्यवाद शुक्रिया। (5.20)

अध्यक्ष महोदया : सरिता सिंह जी।

श्रीमती सरिता सिंह : धान्यवाद अध्यक्ष महोदय। मैं एक नारे से शुरूआत करूंगी और वो नारा आज मुझे देशभक्त साबित कर देगा मोदी, मोदी, मोदी,

मोदी, मोदी, मोदी, मोदी। आज पूरे देश में एक ही नारा है जो किसी भी हिंदुस्तानी को देशभक्त साबित करसकता है वो है मोदी और चाहे वो आईएसआई का एजेंट लगा दे, चाहे वो पाकिस्तानी जासूस लगा दे या कोई भी कर दे। आज आरएसएस और बीजेपी का बस एक ही एजेंडा है कि जिन्होंने मोदी की जय जयकार की, वो हिंदुस्तानी है, वो राष्टष्ठवादी है और जिन्होंने उनके विचारों के खिलाफ आवाज उठाई, वो देशद्रोही है। आज देश को बस इन्हीं दो पैमानों में देख जा रहा है आज बस यही देखा जाना बच बया है हमारे देश में, लोगों को राष्ट्रवादी और देशद्रोही साबित करने का। जब मैं आंदोलन में थी तब छात्र संगठन में थे और छात्र संगठन में जब हम नारे लगाते थे तो हम यह कहते थे महिलाएं क्या चाहती? आजादी! छात्र क्या चाहते? आजादी! मैं रिपोर्टर्स की बात करूंगी। रिपोर्टर्स क्या चहाते हैं? आजादी! गरीब क्या चाहते हैं? आजादी! समझना ये पड़ेगा कि वो आजादी किस चीज से चाहते हैं? जब जेनयू में ये नारा लगा था तो इसको आरएसएस और एबीवीपी के गुंडों ने ये बता दिया कि जब देश आजाद है तो देश में किस चीज की आजादी है। तो हम अपनी देश की आजादी पे सवाल नहीं उठा रहे हैं पर हमारा सवाल देश के गरीबी में है, हमारा सवाल आज देश में महिला सुरक्षा पे है, हमारा सवाल आज मीडिया का सवाल है कि क्या मीडिया जिसको चौथा स्थान.. ..फोर्थ पिलर ऑफ डेमोक्रेसी बोला जाता है, क्या उन्हें खुल के पत्रकारिता करने का मौका दिया जा रहा है? तो आज इस चीज से आजादी की मांग कर है हमारा देश? अभी अलका जी और राजेंद्र पाल गौतम जी ने पूरा विवरण रखा रामजस कॉलेज का। रामजस कॉलेज का जो एक बहुत छोटा से इंसीडेंट है। मैं ये बोलूंगी पिछले तीन साल में कैसी घमंडी सरकार आई है, ऐसी अहंकारी

सरकार आई है! मैं ये कहना चाहूंगी कि रावण का भी घमंड नहीं रूका था लंका जली थी! तो मोदी जी ये लंका जरूर जलेगी। जो तीन साल में घमंड इनके अंदर आया है जो तीन साल में ये दिखाना चाह रहे हैं कि अगर इन्होंने बोला रात हो तो रात हो। अगर इन्होंने बोला दिन हो तो दिन हो। अगर आपने ये पूछ लिया कि दिन को रात, रात को दिन क्यूं कह रहे हैं तो आप देशद्रोही हो गए और जहां जेनयू में हुआ, यही कन्हैया कुमार के साथ हुआ और यही उस दिन रामजस में हुआ, यही रोहित वेमुल्ला के साथ हुआ। मैं तो रोहित वेमुल्ला को शहीद मानूंगी। आज क्यूं वो वो हमारे बीच में नहीं है? क्योंकि वो केवल और केवल उनकी एक गलती थी कि वो दलित थे। वो एक ऐसे समुदाय से आते थे जिसका पुरजोर विरोधा करती है मोदी सरकार। हमारे कॉन्स्टीट्यूशन में लिखा हुआ है आर्टिकल 19(2) फ्रीडम ऑफ स्पीच एंड एक्सप्रेशन, इन्होंने फ्रीडम ऑफ स्पीच एंड एक्सप्रेशन की तो बात की थी! इन्होंने यही तो बोला था कि हमें बोलने का अधिकार है। हम इस देश में रहते हैं। यहां पर राइट टू इक्वैलिटी है। उनसे ये बोला नहीं कि तुम दलित हो, तुम उस समाज के लोग हो जिन्हें बोलने का अधिकार नहीं है, जिन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं है, तो आप बोल नहीं सकते और इसीलिए आपको जीने का भी अधिकार नहीं है। तो रोहित वेमुल्ला ने देश में एक लड़ाई का आगाज किया था और उसी आगाज को गुरमेहर कौर ने आगे बढ़ाया है। रामजस में क्या हुआ था? वाद-विवाद एक डिबेट कॉम्पीटिशन था। वहां पे जनरली यूनिवर्सिटीज में ये होता है। कोई वहां बड़ी चीज नहीं है। मैं खुद दिल्ली यूनिवर्सिटी से 5 साल पहले पढ़ के निकली हूं। बहुत सारे विषयों पे चर्चा होती है। कई सारे टॉपिक्स पे चर्चा होती है। तो उस दिन भी चर्चा रामजस

कॉलेज में की गई थी। उसका ऑर्गेनाइजेशन किया गया था, पर एबीवीपी को क्या समझ में आया, उनके दिमाग में ऐसा क्या आया? अगर उनको सच में विरोधा करना था तो उस वाद-विवाद में हिस्सा बन के विरोधा करते। वो अपनी फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन का यूज करते, वो अपनी बातों को रखकर वो अपने आप को सही साबित करत परएबीपी के गुंडों को मैं आज उनको एएसआई एजेंट बोलूंगी, मैं उन्हें आतंकवादी बोलूंगी जिन्होंने देश के अंदर आतंक का माहौल बना के रखा हुआ है एबीवीपी के गुंडों ने। उन्होंने उस दिन क्या किया? उनको पता था कि वो बोल ही नहीं सकते। उनके पास तर्क नहीं है, उनके पास लोजिक नहीं है, उनके पास समझदारी नहीं है। सतेंद्र अवाना को केवल लठ चलाने के पैसे मिलते हैं और उस दिन उसने वही किया। उस दिन रामजेस कॉलेज के बाद बाहर वही हुआ। जो बच्चे वहां पे वाद-विवाद प्रतियोगिता में पार्टिसिपेट करने आए थे, उनको रोका गया और हम सबने शायद वो वीडियो देखी होगी जिसमें दिल्ली पुलिस हाथ जोड़ के एबीवीपी के गुंडों के सामने खड़ी है और ये बोल रही है कि आज शांत हो जाओ, आप शांत हो जाओ और वहीं आम आदमी पार्टी का विधाायक निर्दोष है, कोई गलती नहीं, उसको घसीटते हुए लेकर जाती है और वही एबीवीपी के गुंडों पर कोई कार्रवाई नहीं। उनके सामने गिड़ गिड़ा रही है दिल्ली पुलिस। इतनी बेबस हो गई है दिल्ली पुलिस। मैं जिवेंद्र गुप्ता जी से भी पूछना चाहूंगी, अभी उन्होंने ये पूछा था कि आम विधाायकों को किसका श्रेय प्राप्त है। मैं ये पूछना चाहती हूं कि एबीवीपी के गुंडों को किसका शह प्राप्त है, कौन उनको शह दे रहा है इस पूरे देश में एक नाकारात्मक समाज बनाने का, एक नकारात्मक राजनीति करने की? हमारा देश कभी ऐसा नहीं था। हमारा देश हमेशा से अमन पसंद देश

था। हमेशा हम अपने देश को सोने की चिड़िया कहते थे। हम आज भी ये कहते हैं कि वो वांट पीस, वी वांट पीस, वॉन्ट पीस। हममें से कोई ऐसा नहीं है। गुरमेहर कौर ने अगर पीस और शांति की बात की तो क्यों एक शहीद की बेटी से हम उसके राष्ट्रभक्त होने का दस्तावेज मांग रहे हैं कि तुम राष्ट्रभक्त हो, तुम हमें बताओ? ये किसने इन्हें सर्टिफिकेट दे दिया कि हर भारतवासी से ये पूछेंगे कि तुम राष्ट्रभक्त हो कि तुम बताओ। ये एक ऐसी राजनीति इस देश में चल रही है और ये पूरे प्लांड है। इनको ये पता है कि आज इनसे युवा ये पूछता है कि हमें रोजगार कब मिलेगा तो ये बोलते हैं कि श्मशान और कब्रिस्तान का डिफरैंस बताओ। आज इनसे देश की कोई महिला ये बोलती है कि महंगाई कम होगी तो ये बोलते हैं कि हिंदु और मुसलमान की लड़ाई कब होगी, ये बताओ? ये वही लोग है जिन्होंने देश में गोधारा करवाया था। ये वही लोग है जो आज से नहीं, बरसों बरसों से आरएसएस के लोग केवल एक ही काम करते हैं कि देश को किस तरह से डिवाइड किया जाए। पर आज देश जाग चुका है। आज विश्वविद्यालय जाग चुका है। विश्वविालय एक ऐसा परिसर हुआ करता था, जहां पे डिस्कशन्स, डिबेट्स एक डेली रूटीन थे और गुरमेहर कौर को मैं ये समझाना चाहती हूं कि मैं एक महिला हूं और यहां पे 6 महिलाएं हैं। रेप और बलात्कार जैसे शब्द सुनते ही हमारी अपनी आंख नीची हो जाती थी। मतलब रेप, बलात्कार जैसे शब्द आज इतने कॉमन हो गए हैं कोई अगर आरएसएस या एबीवीपी के बंदे के साथ अगर उनके सामने सवाल खड़े करेगा तो उनके पास एक ही लाइन बची है कि वो इतने नपुंसक हैं कि वो सीधो रेप की बात करेंगे। आज केवल इस देश की महिलाओं की रेप के साथ तुलना की जा रही है, ये कैसा समाज

बनाने की बात कर रहे हैं? ये कैसी सोसायटी बनाने की बात कर रहे हैं? ऐसे तो ये कहते हैं कि भारत माता, गंगा मईया ने हमें बुलाया है। तो गंगा मईया को नग्न करने में इन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी है। एक कार्टूनिस्ट अपना कार्टून बनाता है तो उसे देशद्रोह बोल दिया जाता है और आज पूरा आरएसएस, पूरी भाजपा, पूरा एबीवीपी भारत माता का लगातार उनके साथ दुष्कर्म किए जा रहे हैं, पर इसका कोई जवाब नहीं होगा क्या? क्या देशभक्ति का सर्टिफिकेट किनके पास है। ये एक ऐसी गंदी, घिनौनी, हिंदु-मुसलमान की दलित स्वर्ण की, महिला पुरूष की, ये ऐसी राजनीति है आज इस देश में एक नेगेटिव एनर्जी इस देश में पैदा हो रही है। आज इस देश में ये चर्चा है नहीं कि रोजगार है या नहीं है, आज इस देश में चर्चा है ही नहीं कि देश कैसे डेवलप करेगा, आज देश में चर्चा ये है जब मोदी जी अपने भाषण में यूपी में बनारस में जाते हैं तो येक कहीं नहीं बता पाते कि तीन साल उन्होंने बनारस में क्या किया। उनके पास एक लाइन नहीं है दो साल में जब उन्होंने अपना, दो साल में कार्यशैली जो बीजेपी ने अपना रखी थी तो एक लाइन उनके पास नहीं थी, ये बोलने के लिए कि महिला सुरक्षा के लिए इन्होंने क्या किया। तो आज ऐसी सरकार केंद्र में बैठी है और एक नेगेटिव राजनीति चल रही है। ये बहुत ही सोचने का विषय है। हम सबको सोचने का विषय है। ये गुरमेहर कौर की लड़ाई नहीं है। एक बीस साल की बच्ची से जो पढ़ने आई थी डीयू में, वो डर मतलब उसका वीडियो आप देखो उस बच्ची ने वीडियो में बोला है कि आई एम स्केयर्ड। वो हमसे डरती है। वो अपने साथ रहने वाले हिंदुस्तान के लोगों से डरती है क्योंकि उसने हिंदुस्तान के लोगों की आवाज उठाई। तो अगर आज एक गुरमेहर कौर वापस जालंधार चली गई तो ये जो गुरमेहर कौर

की लड़ाई नहीं हारी है, ये हमारी लड़ाई हारी है। ये हम सब की लड़ाई हारी, ये मानवता की, इन्सानियत की और धार्म की लड़ाई हारी है। जिस तरह से उसको फेसबुक, वॉट्सप, ट्विटर में ट्रोल किया गया और वो सारे लोग जो ट्रोल कर रहे थे उनको प्रधानमंत्री जी फॉलो करते हैं। वो सारे वो लोग हैं जो बीजेपी और आरएसएस के हैंडल के ऑफिसियल फॉलोअर्स हैं। तो ये बहुत बड़ा सवाल है आज देश के सामने और इसके लिए मुझे लगता है कि हम सबको इनेशिएटिव लेना चाहिए और हम सबको गुरमेहर कौर को ये मैसेज देना चाहिए कि वो इस लड़ाई में वो अकेली नहीं है, हम सब उसके साथ हैं क्योंकि ये लड़ाई हम सबकी है। इस देश में एक सकारात्मक राजनीति की एक सकारात्मक समाज बनाने की ये लड़ाई है। तो इस लड़ाइ में हम सब उनके साथ हैं और गुरमेहर कौर की आवाज को न ये कल दबा पाए थे और न ही आज दबा पाए हैं और न कल दबा पाएंगे। कभी रोहित वेमुल्ला, कभी गुरमेहर कौर तो कभी कोई और होगा देश में बदलाव तो आ के रहेगा। (5.30)

उपाधयक्ष महोदय : विजेंद्र गुप्ता जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष महोदया, यहां जिस घटना का जिक्र हो रहा है उस घटना पर अभी तक पूरी तरह सिलसिलेवार कोई प्रकाश नहीं डाला गया। रामजस कालेज की लिटरेचर कमेटी ने उमर खालिद को सम्मानित परिसर में इनवाइट किया, अपना भाषण देने के लिए। जिसके ऊपर रामजस कालेज के अधिाकारियों ने, अथोरिटी ने परमिशन देने से इंकार कर दिया यानी कि मामला किसका था? मामला रामजस कालेज की अथोटिरी का और कालेज की अथोरिटी का और कालेज की लिटरेचर कमेटी का उसके बाद जवाहर

लाल नेहरू यूनविर्सिटी से लोग आते हैं और रामजस कालेज के अधिाकारियों के खिलाफ प्रदर्शन करते हैं और प्रदर्शन करते वक्त जो नारे लगाए जाते हैं, उसमें कुछ नारे मैं यहां पढ़ रहा हूं–भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशा अल्लाह इंशा अल्लाह (व्यवधाान)

उपाधयक्ष महोदया : बैठिए आप लोग बैठिए।

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप इतना घबरा क्यों गए? आप उनके साथ मिले हुए हैं, ये हम जानते हैं। आप घबरा क्यों गए? इतने बड़े वकील बनते हैं!

उपाधयक्ष महोदया : आप बैठिए, राजेश गुप्ता जी, सोमनाथ जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आपको भी पसंद नहीं आ रहा उनकी असलियत जानने में। देशद्रोाहियों की असलियत नहीं जानना चाहते हैं आप। आगे सुनिए दूसरा नारा उन्होंने लगाया (व्यवधाान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष महोदया, मैं चाहूंगा कि इतने डरपोक लोग जो देशद्रोह करते हैं और फिर उनको राजनैतिक संरक्षण मिलता है।....

उपाधयक्ष महोदया : सोमनाथ भारती जी, राजेश गुप्ता जी आप बैठिए।

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : ये नारे लगाने वालों के साथ आप लोग खड़े हैं। ये दूधा का दूधा और पानी का पानी हो गया है। ये सारा देश देख रहा है कि आप देश के टुकड़े करने वालों....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : राजेश जी, अलका जी बैठिए, सोमनाथ जी। विजेंद्र जी एक सेकेंड। सोमनाथ जी, आपका नाम आया हुआ है। आपको बोलने का अवसर मिलेगा। विजेंद्र जी, आप मेरे से बात करें ना। फिर आपस में टेंशन होगी। अगर आप सीधो मुझसे बात करें...(व्यवधाान)

अध्यक्ष महोदय : अलका जी बैठिए प्लीज....एक सेकेंड सोमनाथ जी प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आपकी इजाजत से खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी, एक मिनट। देखिए ये चर्चा है भई राजेश जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आज उनके वकील बन गए इतने बड़ा आपका क्या रिश्ता है उनके साथ ये जानना चाहते हैं, क्या घालमेल है?

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठिए प्लीज, सोमनाथ जी। मुख्यमंत्री जी बाद में बोलेंगे अलका जी बैठिए प्लीज। मैं विजेंद्र जी से प्रार्थना कर रहा हूं कि ज्यादा कटाक्ष में ना ले ठीक बोले प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अभी तो मैंने शुरू भी नहीं किया....

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : सारा देश देख रहा है देशद्रोह के जो नारे लग रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी मैं डायरेक्शन दे रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : चलिए, ये बहुत अच्छा है। आपको इतना दर्द हुआ है। वहां नारे लगे अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी, प्लीज। विजेंद्र जी, देखिए मेरा एक कहना है कि जो भी विषय आप रखें सदन में, उसका सुबूत होना चाहिए। कल को किसी ने, एक सेकेंड मेरी बात सुन लीजिए। एक सेकेंड रूक जाइए। मुझे कोई अवमानना का नोटिस मिला है किसी भी विषय को लेकर इधार से याउधार से, मुझे वो कमेटी को देना पड़ेगा।

श्री विजेंद्र गुप्ता : मैं अपने विचार व्यक्त कर रहा हूं। मैं पूरी जिम्मेदारी से विचार व्यक्त कर रहा हूं हम उसका विरोधा करेंगे।

अध्यक्ष महोदय : देखिए, मैंने कुछ रूलिंग दी है। मैंने जो रूलिंग दी है, उस रूलिंग में अवमानना का विषय बन जाता है अगर वो कोई गलत तथ्य रखेंगे और उधार से कोई तो क्या का क्या बन जाएगा। नोटिस है हम देख लेंगे।

श्री विजेंद्र गुप्ता : नारे लग रहे हैं विश्वविद्यालयों में वो देश के लिए चिंता का विषय है ऐसे लोगों का साथ मत दीजिए। मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि ऐसे लोगों का साथ मत दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : सोमदत्त जी प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ता : नारे लग रहे हैं बस्तर को क्या चाहिए? आजादी! आजादी! यानि कि नक्सलवाद क्षेत्र है और वहां को लेकर के फिर नारा लगाया,

''कश्मीर को क्या चाएिह?'' ''आजादी! आजादी!'' वास्तविकता में ये संघर्ष किसके बीच में है? ये रामजस कालेज के अधिाकारियों की अथोरिटी के और वहां पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से आए हुए जो लड़के-लड़कियां थे, जिन्होंने इस तरह के नारे भी लगाए साथ ही और भी बातें कही और भी अपशब्द कहे। वहां नारे लगे, उसके बाद वहां पर ये मामला था लिटरेचर कमेटी का। ये मामला था अथोरिटी का। ये मामला था जेएनयू विश्वविद्यालय से आए हुए लड़के-लड़कियों का। लेकिन रामजस कालेज में....मैं बताना चाहता हूं कि आप सबको अध्यक्ष जी, आपके माधयम से कि ये युवा भी वहां पढ़ते हैं। देश के युवा जो हजारों लाखों की संख्या में, करोड़ों की संख्या में इस देश में हैं तो चंद मुठ्ठी भर राष्ट्रविरोधियों को सबक सिखाना जानते हैं, ये आप समझ लीजिए। वहां पर जो संघर्ष हुआ या जो भी रिएक्शन हुआ, वो आम पब्लिक का रिएक्शन है और अगर आज देश का गरीब भी, उसको दो वक्त की रोटी ना मिले....

अध्यक्ष महोदय : राजेश जी, ये तरीका ठीक नहीं है। सदन का ये तरीका नहीं है, आप समझदार हैं, अलका जी प्लीज।

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप पूछिए तो सही क्या दिक्कत है....

अध्यक्ष महोदय : जगदीश जी आपका आपस में....

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : राजेश जी, प्लीज आप बैठिए। जगदीश जी, प्लीज। राजेश जी, क्या कर रहे हैं आप?

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : राष्ट्रविरोधियों के खिलाफ अगर कोई बोल रहा है यहां पर, तो आपको दर्द क्यों हो रहा है?

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, एक सेकेंड, वो कितने भी सही बोलें, गलत बोलें, मेरी माननीय सदस्यों से प्रार्थना है कि उनको बोल लेने दीजिए। मत डिस्टर्ब करिए। सोमनाथ भारती जी ने उत्तर देना है, उसके बाद कपिल मिश्रा जी ने उत्तर देना है। दोनों ही हमारे बोलने वाले हैं इधार से....

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं सदन को स्थगित कर देता हूं। आप बैठ जाइए आप। राजेश जी, बैठ जाइये आप प्लीज। (5.40)

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप छोटे भाई हैं। आप छोटे भाई हो। बैठ जाओ।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप बैठ जाइए।

श्री विजेंद्र गुप्ता : नहीं, आप मेरे से भी बड़े हो। आप कह सकते हैं। कोई ऐसी बात नहीं है। शांत रहो। सदन की गरिमा को बना के रखो।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : राजेश जी, चुप नही हो सकते आप? राजेश जी, ठीक नहीं है। चुप हो जाइये। प्लीज। अब सदन की अवमानना कर रहे हैं, साथ में मेरी भी कर रहे हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ता : इस देश में दो वक्त की रोटी न मिलने वाले गरीब को भी देश क खिलाफ कोई शब्द नहीं सुनना है। भूखों रह जायेगा, प्राण त्याग देगा लेकिन कोई ये कहे की कश्मीर भारत का अंग नहीं है। या कश्मीर को हम अलग करना चाहते हैं। हम नारे लगा रहे हैं। ये बर्दाश्त नहीं हो सकता क्योंकि किसी भारतीय से ये बर्दाश्त नहीं होगा। जो सच्चा भारतीय होता है, कभी ये शब्द उसके कानों को सुहा नहीं सकते। वो रिएक्ट करेगा, करेगा, करेगा। उसको राजनीति में मत बदलिए। राजनीति में अगर आप बदलें तो देश की सुरक्षा में जो लाखों हमारे सैनिक खड़े हैं, उनका होसला पस्त होा, उनका हौसला टूट जाये। जब देश के अंदर ये नारे लगेंगे; राष्ट्रद्रोह के नारे लगें तो सीमा पर खड़ा हुआ जवान अपने को ठगा हुआ महसूस करेगा। उसकी मां उसको फोन करेगी कि बेटा आ जा वापस। क्यों तू अपनी जान वहां पर दे रहा है। यहां तो ऐसे लोगों को शह दी जा रही है।

अध्यक्ष जी, अभी यहां पर नियमों का खुला उल्लंघन हुआ और खुले उल्लंघन में आपने पहली बार मैंने ऐसा देखा है, प्वाईन्ट ऑफ आर्डर को भी सुना नहीं गया क्योंकि आपको मालूम था कि इसमेमं से निष्कर्ष निकलेगा लेकिन खैर! मैं उसको विवाद का मुद्दा नहीं बनना चाहता। उसको विवाद, पिछली बार भी राष्ट्रपति जी के पास गया था, मैं लिखकर के देके आया था कि सदन की गरिमा को ठेस पहुंचती है। हमारे दिल को ठेस पहुंचती है और मैं फिर लिखकर दूंगा। अब वो मेरा अपना एक सदस्य के रूप में अधिाकार है, वो मैं करूंगा लेकिन मैं उसमें समय व्यतीत नहीं करना चाहता। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं अपने साथियों से, जो इस गरिमामय सदन के सदस्य हैं, जिस गुलमेहर की बात कर रहे हैं। बीस वर्ष की एक बच्ची है। अगर वो ये कहती है

कि 1999 में जो कारगिल युद्ध हुआ....कारगिल में घुसपैठ किसने की? पाकिस्तान ने की। कारगिल पर कब्जा किसने किया था? पाकिस्तान ने किया था। कारगिल किस देश का हिस्सा है? हिंदूस्तान का हिस्सा है। क्या आप इस बात से सहमत हैं, क्या आप इस बात से सहमत है कि हमारे देश में अगर पाकिस्तान की सेनाएं घुस आयें और जम्मू कश्मीर तक कब्जा कर लें तो सरकार या भारतीय सेनाएं उसका कोई जवाब न दें? अगर गुरमेहर ने ये कहा कि मेरे पिता को पाकिस्तान ने नहीं मारा। तो शायद उस बच्ची को समझाने की जरूरत है। उसको बताने की जरूरत थी कि कारगिल का युद्ध पाकिस्तान ने हिंदुस्तान पर थोपा था। वो बात अलग है, वो बात अलग है। शुरूआत पाकिस्तान ने की थी।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : लेकिन उसको खत्म हिंदुस्तान ने किया था और उसके बाद भी देश के प्रधानमंत्री उस समय आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उनको सेफ पैसेज दिया था। उनको बंदी नहीं बनाया था। उनको मारा नहीं था। एक मिनट

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप अपने बारी में बोलना।

अध्यक्ष महोदय : कपिल जी, कपिल जी।

श्री विजेंद्र गुप्ता : मुझे समझ में नहीं आ रहा है सरकार कैसी है? विपक्ष अपनी बात कह रहा है।....

(व्यवधाान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप बोल लेना। आपको पूरा मौका देंगे। अट भी मेरी, पट भी मेरी। अन्टा मेरे बाबा का। भई वाह! टरे! चिल्लाने से काम नहीं चलेगा। तथ्यों पर बात करिये। अगर आप एक तथ्य लायेंगे....

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : आवाज दबने वाली नहीं है मेरी।

अध्यक्ष महोदय : अपने इधार से दो सदस्य अभी बोल लें। माननीय मंत्री जी ने बोलना है। सोमनाथ भारती जी ने बोलना है। जो बोल रहे हैं, उसको नोट करें और चर्चा में उसका ठीक से उत्तर दें। ये कोई तरीका नहीं है, जो हो रहा है, मैं मान रहा हूं। चलो कोई बात नहीं। बैठो।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आप अपनी बारी पर बोलना। आप मुद्दे को घुमाओ नही। आप लोग गुरमेहर पर बात करो।

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, गुरमेहर को समझाने की आवश्यकता थी। उस बच्ची की जो भावनाएं, उसकी संवेदनाएं, जो हैं, उसको अपना राजनीति का हथिया बनाने की नहीं है। अगर उस बच्ची ने कहा कि मेरे पिता को पाकिस्तान ने नहीं मारा।

अध्यक्ष महोदय : युद्ध ने मारा।

श्री विजेंद्र गुप्ता : मैं वही....

अध्यक्ष महोदय : पूरी बात बोल दीजिए। कोट करें, पूरा कोट करें।

श्री विजेंद्र गुप्ता : मेरे पिता को युद्ध ने मारा है। उस बच्ची को समझाने की जरूरत थी कि बेटा ये युद्ध किसने थोपा। क्या आत्मरक्षा के लिए?

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बीच में मत बोलिए। प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ता : आत्मरक्षा के लिए प्रहार करना, क्या ये सही है या गलत है? ये आम आदमी पार्टी बताये। इस पर अपनी स्थिति स्पष्ट करें। दायें बायें न फिसलें। दायें-बायें न फिसलिए। आप आग से खेल रहे हैं, ये आप समझ लीजिए। देश की जनता देख रही है। देश की जनता सब जान रही है। आप अगर देश, एक कामन मिनिमम प्रोग्राम के बीच होना चाहिए कि देश की सीमाओं से हमारा कोई समझौता नहीं होगा। इस पर कोई राजनीति नहीं होगी। देशभक्ति पर कोई राजनीति नहीं होगी। लेकिन उसको, उन सब बातों को राष्ट्रविरोधाी नारों को, पाकिस्तान के बारे में जो भी हो रही हैं, बातें उनको आपने अभिव्यक्ति की आजादी से जोड़ने की कोशिश की। उस मुद्दे पर राजनीति करने की कोशिश की। अभिव्यक्ति की आजादी, तीन तलाक पर चर्चा चल रही है। ये है अभिव्यक्ति की आजादी! आप करिये, हम भी करें। आप भी करें। सब करें। सब करिये। जो सही होगा, अदालत फैसला करेगी लेकिन, राष्ट्रविरोधाी नारे लगाये। शाजिया इल्मी कौन है? शाजिया इल्मी, आपकी पार्टी की सदस्य थी। आपकी पार्टी की तरफ से चनुाव लड़ी हुई है। अगर उसको जामिया मिलिया में इन्वाईट किया, तीन तलाक पर अपनी बात कहने के लिए तो उसको रोक दिया गया। ठीक है, रोक दिया गया। कोई बात नहीं है। हम ऐसे मुद्दे बनाने पर विश्वास नहीं करते लेकिन आम आदमी पार्टी उस समय

कहां खो गयी थी? अरविन्द केजरीवाल जी कहां चले गये थे? जब उमर खालिद और कन्हैया के साथ जाकर खड़े हो सकते हैं तो उनकी पार्टी से निकली शाजिया इल्मी के साथ जाकर जामिया में क्यों नहीं कहा कि अभिव्यक्ति की आजादी है। अभिव्यक्ति की आजादी है और वहां पर उसको क्यों नहीं बोलने दिया जा रहा है। प्रश्न ये है कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर अगर देश को तोड़ने की बात आम आदमी पार्टी करेगी और उनके साथ खड़ी होगी तो भारतीय जनता पार्टी उसका पुरजोर, पुरजोर, पुरजोर विरोधा करेगी। धान्यवाद।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, प्लीज अब नहीं। कमान्डो जी प्लीज बैठिये। नहीं, नहीं बैठिये कमान्डो जी। प्लीज बैठिये। मैं मान रहा हूं आपकी भावना। प्लीज बैठिये। श्री सोमनाथ भारती जी।

श्री सोमनाथ भारती : अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे जिस सेंसिटिव मुद्दे पर बोलने का मौका दिया, आपका बहुत-बहुत धान्यवाद। मुझे बड़े दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि इस सदन के अंदर देश विरोधाी नारे किसी की जबान से निकले। इस सदन की कार्रवाई से निकाल दिया जाये। इस सदन के अंदर देश विरोधाी नारे बोले गये। भले किसी माधयम से बोले गये, लेकिन बोले गये। मैं जानना चाहता हूं कि इस देश के अंदर जिसका राज्य है। जिसके पास पुलिस है, वो कौन सी पार्टी है? जिसके जुबान से देश वि रोधाी नारे इस धारती पर निकले, वो इन्सान कहां है? कहां है वो नपुंसक?

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, अब ये ठीक नहीं है। ये जगदीश जी, आप भी नाराज हुए थे। दिक्कत हो रही है। मैं उठ के आया था। मेरी त बीयत ठीक नहीं थी।

श्री सोमनाथ भारती : आप बैठिये, आप बैठिये। देशद्रोह के नारे लगे।

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : देशद्रोह के नारे लगे थे। आप मेरा नाम लगा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये, आप बैठिये। उन्होंने कहा क्या है। सुनते हैं पूरा। चलिए।

श्री सोमनाथ भारती : आज ये देश इतना शर्मशार है। पूरे देश के अंदर चर्चा है कि जेएनयू के अंदर जिस किसी ने भी देश विरोधाी नारे लगाये, वो कहां है? (5.50) पुलिस के किसके पास है? सीबीआई किसके पास है? इंटेलिजेंस ब्यूरो किसके पास है? सारी एजेंसियां इनके पास हैं; वो लोग जिंदा कैसे हैं? जिस किसी ने भी इस धारती के ऊपर देश विरोधाी नारे लगाये, इसकी जिम्मेदारी किसके पोस है? किसके पास है इसकी जिम्मेदारी? यह बतायें।

अध्यक्ष महोदय, यह देश विरोधाी ताकतें किसके बलबूते पर फल-फूल रही हैं। जिस किसी ने भी कहा कि कश्मीर को क्या चाहिए? आजादी! आजादी! मैं जानना चाहता हूं कि अपने मित्र विजेंद्र गुप्ता जी से कि जिस बुआ के साथ इन्होंने सरकार बनाई कश्मीर के अंदर, वो बुआ कौन है? कौन है वो बुआ? बुरहान वानी को जिस पार्टी ने कहा कि यह तो देशभक्त है, उस पार्टी के साथ इन्होंने सरकार बनाई, शर्म नहीं आई! सरकार बनाई।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी, एक सेकेंड। विजेंद्र जी, प्लीज बैठिये। सोमनाथ जी, एक सेकेंड। मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं, सोमनाथ जी को फ्लो टूटता है, उनको बोलना दीजिए शांतिपूर्वक। कोई कमेंट्स नहीं, उनको बोलने दीजिए जो मर्जी आए, वो बोल रहे हैं, वो ठीक बोल रहे हैं, ठीक राह पर चल रहे हैं।

श्री सोमनाथ भारती : अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं और अपने साथियों की सम्मति से कहना चाहता हूं, कश्मीर हमारा था, हमारा है, हमारा रहेगा। किसी के बाप की औकात नहीं है, कश्मीर हमसे ले ले। लेकिन यह बताना चाहता हूं इनको, अगर हमारे पास पुलिस होती तो वो सारे जवान जिसने देश विरोधाी नारे लगाये थे, हम उनको ल ाकर खड़ा कर देते। वो जेल जाते। लेकिन उनके पास पुलिस है, फिर भी क्यों चुप बैठे हैं? किनको बनाचा चाहते हैं? छद्म राष्ट्रभक्ति के नाम पर यह जो राजनीति करते हैं, जो देश को बांटने का प्रयत्न करते हैं, इनको बता दें कि यह आम आदमी पार्टी है। हमारी साभी अलका ने, गौतम साहब ने, सरिता ने जिस तरीके से अपनी बातें रखीं। इतिहास गवाह है, इस जोश के साथ देशभक्ति की बातें आज तक कभी निकली नहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, कुछ समय पहले माननीय प्रधानमंत्री जी ने यूपी के चुनाव के दौरान कहा कि कुछ ताकतें चाहती हैं कि देश के सैनिक मारे जायें, कौन चाहता है? किसकी हिम्मत है? इस देश के अंदर, कौन बेवकूफ है? कौन देश विरोधाी है? इस देश का एक-एक इंसान देश के सैनिक के साथ है। इस देश का एक-एक इंसान भारत माता की पूजा करता है लेकिन यह छद्म लोग, जो झूठे....

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, यह ठीक नहीं है। आप बैठिये।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अगर आप सही हो....

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये।

श्री विजेंद्र गुप्ता : भारत माता की जय नहीं बोलते हैं।

....(व्यवधान)

श्री सोमनाथ भारती : अध्यक्ष महोदय, भारत माता की इस देश की हर इंसान कहता है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : हां, लेकिन....

श्री सोमनाथ भारती : लानत है आपकी सरकार पर, लानत है आपकी पार्टी पर, लानत है आपकी पुलिस पर जिसने आज तक, एक साल हो गया, आज तक भारत माता की जय न कहने वालों को ढूंढ न पाए। देश विरोध ाी नारे लगाने वालों को ढूंढ न पाये, वहां हैं वो।

श्री विजेंद्र गुप्ता : वो छिपे हुए हैं।

श्री सोमनाथ भारती : मैं चैलेंज करता हूं एक दिन के लिए दिल्ली पुलिस हमें दे दो।

अध्यक्ष महोदय : वो मुझे सम्बोधित करके बोल रहे हैं। वो सीधाा नहीं कह रहे हैं। सोमनाथजी, इनको सीधाा मत सुनायें, मुझे सुनाइये।

श्री सोमनाथ भारती : अध्यक्ष महोदय, मैं साफ-साफ कहना चाहता हूं।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सीधी बात आप खुद कर रहे हो।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अच्छा, मैं नहीं बोलूंगा, उनसे कह दीजिए आप।

अध्यक्ष महोदय : मैंने कह दिया। सोमनाथ जी, एक सेकेंड, आप उनकी आंखों में आंख मत मिलाइए, मेरी आंखों में मिलाइए।

श्री सोमनाथ भारती : मैं बिल्कुल नहीं मिलाऊंगा। लेकिन अध्यक्ष महोदय, यह बात कोई छोटी-मोटी नहीं है। अलका ने बड़े प्यारे शब्दों में कहा, यह बहुत सेंसेटिव मुद्दा है, यह छोटी-मोटी नहीं है, यह ऐसा मुद्दा है देश के हर नागरिक का खून खौलता है। यह जो झूठे लोग बैठ गये हैं केंद्र के अंदर, मैं आपके जरिये कहना चाहता हूं, अगर हमारी पार्टी को एक दिन के लिए दिल्ली पुलिस मिल जाये, हम ढूंढ निकालेंगे उनको। हम ढूंढ निकालेंगे उनको, कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, रूबिया सईद के बदले खूंखार आतंकवादी किसने छोड़ा था? हमने नहीं छोड़ा था। किसने छोड़ा था? इनके विदेश मंत्री उस वक्त के जसवंत सिंह जी, किसको ले गये थे प्लेन में बिठा कर के अफगानिस्तान? किसको ले गये थे? कौनथा वो? हम नहीं थे। कौन था वो? वो हैं राष्ट्र विरोधी ताकतें। अध्यक्ष महोदय, अपनी गुरमेहर कौर के बारे में कहा जा रहा है कि उसने कह दिया कि पाकिस्तान ने नहीं मारा, वार ने मारा। अरे, भाई हिंदू फिलॉसफी के अंदर तो बहुत बड़ा शब्द कहा गया है वसुधौवकुटुम्बकम्। आप उसको काट दो, आप बोल दो माइनस पाकिस्तान।

श्री विजेंद्र गुप्ता : फिर मेरी तरफ देख रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : विजेंद्र जी, इतना हनीं। यह उचित नहीं है। इतना तो बोलते हुए देखेंगे ही।

श्री सोमनाथ भारती : अध्यक्ष महोदय, अपना जो संस्कार है इस देश का, उसमें कहा गया है, ''एक नूर ते सब जग उपजे कौन भले कौन मंदे।'' कहा है, ''सब जग उपज्या'' यह नहीं कहा कि कोई देश नहीं उपज्या, यह नहीं उपज्या, वो नहीं उपज्या। अध्यक्ष महोदय, गुरमेहर कौर का इशारा किसी ओर तरफ था, फिलॉसफी अप्रौच के अंदर, वो कह रही है, मैंने भी अपने सम्मेलन के दौरान कहा कि जो भारत पाकिस्तान में टेशंन है, उसका फायदा कौन उठा रहा है? पाकिस्तान के अंदर इतनी गरीबी है, हिंदुस्तान के अंदर इतना कुछ करना है, पाकिस्तान में कुछ भी नहीं है, खाने को भी नहीं है। मैं तो कह रहा था कि यह जो टेंशन पैदा करके रखते हैं लोग, जो बॉर्डर पर इतना टेशंन पैदा करके रखते हैं, उससे फायदा किसको पहुंच रहा है? वो ताकतें बाहरी हैं। वो तो जरूरी है, वो बहुत बड़ा विषय है लेकिन सबसे बड़ी बात इस देश का हाल यह है, दुर्भाग्य है कि वो ताकतें जिन्होंने ऐसे नारे लगाये, वो लोग आज भी इस भारत की धारती पर जिंदा है, बगैर पकड़े गये।

अध्यक्ष महोदय, उमर खालिद को बुलाया गया था; ट्राइबल इशुज पर बोलने के लिए, वो कोई ऐसा मुद्दा नहीं था, जिससे कि राष्ट्र के प्रति किसी का अविश्वास पैदा हो, इन्होंने जिस तरह से पूरे देश के अंदर रोहित विमुला से लेकर जेएनयू तक, आईटी चेन्नई से लेकर डीयू रामजस कॉलेज, बीएचयू तक, जिस तरह से इन्होंने पूरे देश के अंदर एक माहौल पैदा करने का प्रयास किया,

उसका मतलब क्या है? उसका मतलब है इंटैलैक्चुअल डिप्राइविटी। ये चाहते हैं कि इंटैलैक्चुअली पूरे देश पर कंट्रोल कर लें। ये चाहते हैं कि देश का युवा वो साचें, जो ये कहें। ये चाहते हैं कि देश का युवा, देश का नौजवान, देश का बुद्धिजीवी, वो ना सोचे, जो सोचना चाहिए। वो चाहते नहीं हैं। इनका असली मुद्दा अध्यक्ष महोदय, यह है कि यूनिवर्सिटीज में, कॉलेजेज में, स्कूलिल्स में कंट्रोल कर लें, सोच पर कंट्रोल कर लें ये, थॉट्स पर कंट्रोल कर लें ये, इनका मुद्दा वो है। इस देश का दुर्भाग्य है कि इस देश के अंदर ऐसा आदमी प्रधानमंत्री बना, जिसे आप कह सकते हैं, चूंकि आज कल वो मुद्दा भी गर्माया हुआ है। स्मृति ईरानी जो डिग्री नहीं दिखा रही, माननीय मोदी जी डिग्री नहीं दिखा रहे। अब जिस इंसान को कॉलेज का अनुभव ही न हो, जिस इंसान को विचार का अनुभव ही न हो, जिस इंसान को इटैलेक्ट का अनुभव ही न हो, उसे क्या पता इंटैलैक्चुअल फ्रीडम होता क्या है?

अध्यक्ष महोदय, इस तरह की बातें जो कि आज सदन के अंदर कही गई, देश विरोधाी नारे लगाये गये, इस जैसा कोई इंसान नहीं चाहता। अध्यक्ष महोदय, वही लोग वायलेंस को रिजॉर्ट करते हैं, जिनके पास इटैलैक्चुअल एब्सैन्ट होता है, intellectually absent person only resorts to violence. आप देखेंगे पार्कों के अंदर जब चर्चा होती है तो बड़े गर्म हो जाते हैं भाजपा वाले। तुरंत चर्चा नहीं करेंगे, उनके पास विचार शून्यता है, उनके पास कोई सोच-समझ नहीं है कि चर्चा का जवाब चर्चा से दें। वो त ुरंत वायलेंस पर आ जायेंगे। इस देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि ऐसे लोग जो कि विचारों का जवाब ईंट-पत्थर से दें, वो सभी लोगों को माननीय प्रधानमंत्री जी सपोर्ट करते हैं। इस देश के संविधाान का अर्टिकल 19(1)ए कहता है कि इस देश के

अंदर all citizens shall have the right to freedom of speech and experssion, exception भी है, कहता है अर्टिकल 19(2) nothing in sub-clause A of I shall affect the operation of any existing of law or prevent the state of making law in so far as such law imposes regional restrictions on the exercise of right inferred by the State sub-clause in the interest of sovereignty and integrity of India. The security of State, friendly relations to foreign states, public order and so and so कानून है. ..(6.00) संविधाान में ये बाबा साहब का दिया गया संविधाान इतनी आजादी तो देता है कि हम अपनी बात अपने तरीके से रख सकते हैं। आज अगर इन्होंने देश विरोधाी बातें इस सदन के अंदर कहीं तो बाबा सहाब का संविध ाान शर्मसार होता है।

अध्यक्ष महोदय, हर तरफ कॉन्सपिरेसी चल रहा है, इस तरफ भी देखें। कॉन्सपिरेसी चल रहा है, मुझे याद है जब 2014 में चुनाव लड़ रहे थे माननीय मोदी जी उन्होंने नारे लगाये, ''बहुत हो गया नारी पे अत्याचार। अबकी बार मोदी सरकार'' अब क्या हो रहा है चारों ओर रेप की धामकी मिल रही है, मोदी जी के मुंह से एक शब्द नहीं निकल रहा है। ऐसी कौन सी मजबूरी है, ऐसी कौन सी ताकतें हैं जिसका साथ देना चाह रहे है।? अध्यक्ष महोदय, इनके एमएलए, एमपी, बड़े-बड़े नेता महिलाओं के ऊपर कुछ भी टिप्पणी कर दें और वे चुप बैठे रहते हैं। अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है एक इनका नारा और भी था ''बहुत हो गयी महगाई की मार अबकी बार मोदी सरकार'' और आज सिलेंडर 85 रूपए महंगा हो गया है लेकिन इनकी तरफ से कोई शब्द

नहीं निकल रहा अध्यक्ष महोदय। इनके सारे के सारे और अभी माननीय विजेंद्र गुप्ता जी मांग रहे थे श्वेत पत्र। श्वेत पत्र मांग रहे थे, इतना बड़ा कांड किया माननीय मोदी जी ने पूरे देश में नोटबंदी, डेढ़ सौ लोग मारे गये लेकिन श्वेत पत्र वहां नहीं आया, श्वेत पत्र वहा से आया ही नहीं, एक शब्द नहीं बोला कि कितना काला धान आया। भाई, श्वेत पत्र वहां मांग लेते, उनसे पूछ लेते भई श्वेत पत्र कहां है लेकिन श्वत पत्र मांगने की वहां पर हिम्मत नहीं है और आज जिस तरह से विजेंद्र गुप्ता जी ने अपनी बातें यहां पर रखने का प्रयास किया, मुझे तो बहुत शर्म आ रही है कि मेरे मुंह से वो नारे निकले कैसे। भले ही वो नारे किसी को अपोज करने के लिए निकले हों लेकिन निकले कैसे?

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात यहां समाप्त करता हूं हमारे साथी श्री कपिल मिश्रा जी इसका माकूल जवाब देंगे और जवाब बड़ा विषय है, इनको समझ में आये और हिंदुस्तान में बातें जाएं कि भई, ये सदन इस सदन के 67 सदस्य उस पार्टी का हिस्सा हैं जिस पार्टी ने ये कसम खाई है क न तो हम जात का उपयोग करेंगे अपने चुनाव के अंदर, न धार्म का उपयोग करेंगे अपने चुनाव के अंदर, न क्षेत्र का उपयोग करेंगे अपने चुनाव के अंदर, अध्यक्ष महोदय। इस पार्टी में मुझे तो बड़ा फख्र होता है, मुझे बड़ा फख्र होता है जाकर के पूरे देश में....

....(व्यवधान)

श्री सोमनाथ भारती : इस देश के अंदर ऐसा प्रधानमंत्री जो कहे 'श्मशान घाट और कब्रिस्तान', इस देश के अंदर ऐसा प्रधानमंत्री जो बिजली की जात

बना दी, धार्म बना दी। जो कहता है भई बिजली ईद में ज्यादा आती है दीवाली पर कम आती है। उसको मैं....चूंकि मेरे पास चार लाइनें हैं, उन चार लाइनों को पढ़कर के मैं अपनी बात समाप्त करूंगा। अध्यक्ष महोदय किसी ने लिखा है बड़े प्यार से : ''प्रधानमंत्री पद की गरिमा को इतना गिरा डाल,

उसने बिजली को भी हिंदू और मुसलमान बना डाला''

ये देख के बिजली भी हैरान हो गई,

मेरी सप्लाई भी अब हिन्दू मुसलमान हो गई,

कातिल के दिल में अभी मौतों का अरमान बाकी है,

गुजरात में बनाया था कब्रिस्तान यूपी में श्मशान बाकी है।

अध्यक्ष महोदय,

'बनाकर जरिया लाशों को, जो वोटों की भीख लेता है सुना ळे

गुजरात का कातिल गधों से सीख लेता है।''

धान्यवाद।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी....

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने नाम नहीं लिया, उन्होंने गुजरात का कातिल बोला है नाम नहीं लिया।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक सेकेंड, गुजरात का कातिल जो बोला है अगर उसमें प्रधानमंत्री का नाम बोला है तो हटा दीजिये बस।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी बहुत-बहुत धान्यवाद। कपिल मिश्रा जी, एक सेकेंड।

सदन का समय आधाा घंटा बढ़ा दिया जाए, मेरा सबसे निवेदन है।

(सदन से सहमति मिलने पर सदन का समय आधो घंटे के लिए बढ़ाया गया)

श्री कपिल मिश्रा : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अलका लांबा जी ने जो प्रस्ताव रखा है रामजस कालेज में जो घटना हुई उसके ऊपर और उसके बाद जो पूरा गुलमेहर का वाक्या और पूरे देश में जो कुछ हुआ और आज तो कारगिल तक वो बात पहुंच गई। मैं गुलमेहर क बारे में चंद लाइन जरूर कहना चाहूंगा कि शुरू होने से पहले जब गुलमेहर कानाम अलका लांबा जी ने लिया तब विपक्ष के नेता के चेहरे पर एक डर दिखाई दिया और वो तुरंत अपनी सीट से खड़े हो गये और यहां पर आ गये चिल्लाने लगे, वो घबराहट, वो चिल्लाहट, वो बेचैनी, वो गुस्सा, वो खौफ जो मैंने उनकी आंखों में देखा, गुलमेहर का नाम सुने ही।

श्री विजेंद्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, वो मेरी तरफ देखकर बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : वो कहां बोल रहे हैं वो मुझे संबोधित, भई नाम तो लेंगे न देखो ये बात ठीक नहीं है, नहीं आपने बोला है तो उसका उत्तर तो देंगे न।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चलिए।

श्री कपिल मिश्रा : गुलमेहर का नाम सुनते ही जो खौफ, गुस्सा, बेचैनी, छटपटाहट, डर, नाराजगी, पागलपन जो मैंने देखा मैं इनकी बात को बिलकुल सही मान गया गुलमेहर से खतरा तो है, गुलमेहर से खतरा तो है और मैं चार लाइनें कहना चाहता हूं इसके बारे में।

श्री विजेंद्र गुप्ता : नाम तो ठीक बोलो कपिल जी।

श्री कपिल मिश्रा : खतरा है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : किसका, किससे?

श्री कपिल मिश्रा : खतरा है।

श्री विजेंद्र गुप्ता : किससे?

श्री कपिल मिश्रा : खतरा है, खतरा है गुलमेहर से खतरा है। खतरा है, खतरा है गुलमेहर से खतरा है, खतरा है गद्दारों को, खतरा है गद्दारों को धार्म के ठेकेदारों को, झूठ से बनी सरकारों को खाकी चड्डी वालों को। खतरे में हिंदुस्तान नहीं, खतरे में हिंदुस्तान नहीं।

अध्यक्ष महोदय : कपिल जी, कपिल जी।

श्री कपिल मिश्रा : मैं आपको एक बात गुरमेहर, गुरमेहर के नाम पर इतना खौफ, गुरमेहर के नाम पर इतना डर, गुरमेहर के नाम पर इतनी बेचैनी, गुरमेहर के नाम पर इतना चिल्लाना, इतनी छटपटाहट, ये राष्ट्रविरोधी, देश विरोध

ाी गद्दारी के सर्टिफिकेट बांटे जा रहे हो, किस विचारधाारा का? शहीद की बेटी है, उसके पिता ने जान दी है पाकिस्तान की गोली को सीने पर खाया था। किसी पाकिस्तान के घर में जाकर केक नहीं कटवाया था।

ये हैदराबाद से कहानी शुरू की इन्होंने। हिंदुस्तान के बच्चों को गद्दार कहने की कहानी। हैदराबाद तो घोषित कर दिया हैदराबाद यूनिवर्सिटी देशद्रोहियों का अड्डा है वहां पर धारने, प्रदर्शन, वहां के लिए भाषणबाजी। फिर बोलो जेएनयू देशद्रोहियों का अड्डा है फिर कहते हैं अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी देशद्रोहियों का अड्डा है, श्रीनगर एनआईटी में क्या हुआ था, भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनें 24 घंटे बीते थे, तिरंगा झंडा फहराया था उन बच्चों ने और भारत माता की जय का नारा लगाया था लाठियों से पीट-पीट कर लहूलुहान कर दिया था इनकी सरकार न उनको। कोई भारत माता की जय बोले तो लाठी खाये, कोई भारत माता की जय न बोले तो लाठी खाये, वंदे मातरम बोले तो लाठी खाये, वंदेमातरम न बोले तो लाठी खाये, हिंदुस्तान का बच्चा बस पढ़ना नहीं चाहिए अगर युनिवर्सिटी जा रहा है, पढ़ाई कर रहा है और अपने दिल की बात खुलकर कहने की हिम्मत रखता है तो इनका दुश्मन है तो ये उसको मारेंगे। मैं ये कहना चाहता हूं, ''तुम्हें देश के बच्चों में गद्दार दिखाई देता है, तुम्हें देश के बच्चों में गद्दार दिखाई देता है और कातिल नवाज की आंखों में प्यार दिखाई देता है।'' ये वंदेमातरम को भारत माता की जय को मुद्दा बनाते हैं, हिंसा फैलाते हैं वंदेमातरम बोलने से वंदेमातरम नहीं होता। (6.10) एक मुसलमान जब दिन में पांच बार नमाज के लिए इस देश की मिट्टी पर अपना सिर झुकाकर सिजदा करता है ना, वो भी वंदे मातरम ही कह रहा होता है। उसे मुंह से बोलना जरूरी नहीं होता। शहीदों की अगर

लिस्ट निकाली जायेगी शायद वो अंग्रेजों से लड़ने वाले हों या पाकिस्तान से लड़ने वाले हों, लेकिन हिंदुस्तान से लड़ने वाले की लिस्ट निकाली जायेगी तो गुप्ता जी, आरएसएस वाले नजर नहीं आयेंगे, लेकिन मुसलमान बहुत नजर आएंगे उसके अंदर जिन्होंने इस देश के लिए अपनी कुर्बानी कर दी। पाकिस्तान के टैंक उड़ाने वाले अब्दुल हमीद का नाम याद रखना। मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि कारगिल युद्ध की बात की इन्होंने। कारगिल युद्ध के समय पाकिस्तान का प्रधानमंत्री कौन था, कौन था पाकिस्तान का प्रधानमंत्री?

अध्यक्ष महोदय : कपिल जी, मुझसे करो प्लीज।

श्री कपिल मिश्रा : जी मैंने तो पूछा ही नहीं आपसे। आपको ऐसा क्यों लग रहा है आपसे पूछ रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने....

....(व्यवधान)

श्री कपिल मिश्रा : नहीं-नहीं मैंने आपसे नहीं पूछा, मैंने आपसे नहीं पूछा।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने पूछा तो नहीं आपसे। नाम तो नहीं लिया आपका. ...(व्यवधान) भाषण तो देंगे ही ना।

....(व्यवधान)

श्री कपिल मिश्रा : अरे! गुप्ता जी, मैंने कब पूछा आपसे? मेरे को एक बात बताइये....

....(व्यवधान)

श्री कपिल मिश्रा : यहां समस्या है। मैंने तो आसे नहीं पूछा लेकिन ये जरूर है कि पाकिस्तान का नाम आते ही आप को कुछ कुछ होता है आर ये आप को नहीं होता, ये नागपुर से है ये समस्या नागपुर से है जब कारगिल का युद्ध हो रहा था तो पाकिस्तान का प्रधानमंत्री नवाज शरीफ था और उसकी शराफत इतनी कि अपने शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथिके तौर पर बुलाया ता नवाज शरीफ को बुलाया, कारगिल के हत्यारे को तुमने बुलाया। तुम देशभक्ति के सर्टिफिकेट बांटोग इस देश के अंदर। सरकार बनने के तुरंत बाद हाफिज सईद से मिलने कौन गया? कौन मिल के आया हाफिज सईद से? हाफिज सईद से मिलने आये वेद प्रताप वैदिक। हमारा तो कार्यालय नागपुर में नहीं है। पठानकोट में जब आतंकवादी हमला हुआ, उस दिन मैंने सवाल उठाया था। इसी सदन के अंदर सवाल उठाया था कि आईएसआई को क्यों बुलाया गया जांच करने के लिए? तब समझ में नहीं आया इसका जवाब। लेकिन अब समझ में आता है जब बीजेपी के अंदर से आईएसआई ऐजेंट पकड़े जाते हैं, आईएसआई ऐजेंट आपके मुख्यमंत्री के साथ घूमते हैं, आईएसआई ऐजेंट आपके मीडिया का कैम्पेन संभालते हैं। आईएसआई ऐजेंट आपकी पार्टी को फंडिग देते हैं। ये आपकी पार्टी फंडेड बाई आइएसआई है।

वेल एस्टैब्लिश फैक्ट जिसका पैसा ले के काम कर रहे हैं, उसी को जांच करने के लिए बुलाया था और आप इस देश में देशभक्ति के सर्टिफिकेट बाटोगे! आप कन्हैया के ऊपर सवाल उठाओगे! उमर खालिद के ऊपर सवाल उठाओगे! मैं कहता हूं इस देश का, भारत माता का सच्चा बेटा कन्हैया, हम खड़े हैं उसके साथ। डंके की चोट पर कहता हूं भारत माता की सच्ची बेटी है गुरमेहर हम खड़े हैं उसके साथ। डंके की चोट पर खड़े हैं और सुनो, ये जो तुम्हारे

दो कौड़ी के विद्यार्थी परिषद के गुडे हैं ना, भारत माता की जय, भारत माता उस दिन शर्मसार हुई थी, जिस दिन आईएसआई वालों को मोदी जी बिरयानी खिला रहे थे दिल्ली में बुलाकर! भारत माता उस दिन शर्म सार हुई थी, जिस दिन कश्मीर के दो झंडों के नीचे खड़े होकर नरेंद्र मोदी जी और मुफ्ती मोहम्मद सईद बैठे थे, उस दिन भारत माता शर्मिंदा हुई थी। भारत माता जब शर्मिंदा होती है जब रोहित वेमुल्ला को गद्दार कहा जाता है। भारत माता तब शर्मिंदा होती है जब जेएनयू पर उंगली उठाई जारती है। भारत माता तब शर्मिंदा होती है, जब रामजस कालेज के अंदर गद्दार ढूंढने निकल पड़ते हो। कौन सी राजनीति इस देश में चलाई जा रही है? कौन सी विचारधाारा इस देश में चलाई जा रही है? तिरंगा झंडा कितना ऊंचा हो, इसके फरमान जारी कर देते हैं सारी यूनिवर्सिटी के अंदर। तिरंगा झंडा लगाओ, तिरंगा झंडा डंड से ऊंचा नहीं होता तिरंगा झंडा ऊंचा होता है जब देश के बच्चों को खुलकर पढ़ने की ओर खुलकर बोलने की आजादी दी जाती है, तब तिरंगा झंडा ऊंचा होता है। मैं ये कहना चाहता हूं कि एक प्रोफेसर के ऊपर हाथ उठाना, एक टीचर के ऊपर हाथ उठाना, एक गुरू के ऊपर हाथ उठाना, एक गुरू के ऊपर हाथ उठाने वाला कुछ भी हो सकता है। लेकिन हिंदू नहीं हो सकता। ना हिंदू हो सकता है और न हिंदुस्तानी हो सकता है। जो ए क टीचर के ऊपर हाथ उठाये, चाहे वो विचारधाारा की आड़ में हाथ उठाये, चाहे वह धार्म की आड़ में हाथ उठाये, चाहे वो किसी पार्टी या संगठन की आड़ में हाथ उठाये। गुरू के ऊपर हाथ उठाने वाला ना हिंदू हो सकता है, न हिंदुस्तानी हो सकता है। ये पकड़े क्यों नहीं जाते थे विरोधाी नारे लगाने वाले? मेरे को तो अच्छा लगा। नारा कोई भी लगाया हो लेकिन अल्लाह का नाम तो लिया विजेंद्र गुप्ता ने

अपने मुंह से आज सदन के अंदर....बहुत अच्छा लगा। ले लेना चाहिए कभी कभार ईश्वर अल्लाह एक ही हैं, गांधाी जी ने बोला है, ''सबका सन्मति दे भगवान।'' आपने आज नाम तो लिया लेकिन एक बात कहना चहूंगा कि ये पकड़े क्यों नहीं जाते? जेएनयू में नारे लगाने वाले पकड़े क्यों हीं गये? दिल्ली की सरकार की तरफ से मंत्री होने के नाते और आम आदमी पार्टी का प्रवक्ता होने के नाते डंके की चोट पर कहता हूं कि जिसने ये नारा लगाया, ''भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशाल्लाह। उसकी जुबान काटकर फेंक देनी चाहिए, फांसी के तख्ते पर लटका देना चाहिए। बीच चौराहे पर फांसी देनी चाहिए। पुलिस की जिम्मेदारी और देश की सरकार की जिम्मेदारी है कि गिरफ्तार करें। लेकिन वो स रकार कहां से गिरफ्तार करे जिसका गृह मंत्री अपने अफसर से पूछता है हाफिज सईदउ आतंकवादी है कि नहीं है। जब उससे पूछा गया कि हाफिज सईद को आतंकवादी मानते हो तो गृहमंत्री राजनाथ सिंह अपने अफसर से पूछते हैं, ''हम आतंकवादी मानते हैं क नहीं मानते।'' आप कहां से पकड़ लोगे? ये यूनिवर्सिटी में देश विरोधाी नारे लगाने वाले इसलिए नहीं पकड़े जाते क्योंकि ये विद्यार्थी परिषद के सदस्य हैं, नारे लगाते हैं, माहौल खराब करते हैं और निकल जाते हैं। चुनौती देता हूं, ''जेएनयू में नारे लगाने वालों को पकड़ के दिखाओ, रामजस में नारे लगे हैं, तुम पकड़ के दिखाओ, हैदराबाद में नारे लगे हैं तो पकड़ के दिखाओ।'' बस्तर की आजादी की तुमने यहां पर बात की। 17 साल से बस्तर में किसकी सरकार है? किसकी सरकार है 17 साल से बस्तर में? अगर आज भीव हां पर नक्सलवादी बैठा है तो चूल्लूभर पानी में डूब के मर जाना चाहिए तुमको। सत्रह साल से भारतीय जनता पार्टी की छत्तीसगढ़ में सरकार है और वहां के नक्सलवाद की बात तुम यहां सदन के

अंदर कर रहे हो! कैसे नक्सलवाद बच गया? कैसे बच गया नक्सलवाद? आज 17 साल की तुम्हारी सरकार के बाद? क्योंकि तुम खुद वहां पर नक्सलवाद फैलाने वालों में शामिल हो गये थे। तुम्हारा धांधाा चलता है, दुकानदारी चलती है, जब एक जगह आतंकवाद फैले, एक जगह नक्सलवाद फैले, एक जगह धार्म की आड़ में लड़ाई, एक जगह जाति की आड़ में लड़ाई हो, इस तरह तुम्हारी दुकानदारी चलती रहे क्योंकि तुमसे सवाल पूछने बंद हो जाते हैं।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, तुम्हारे से अर्थ पार्टी भी हो सकती है, कुछ भी हो सकती है।

श्री कपिल मिश्रा : नाम ले के बोल दूं?

....(व्यवधान)

श्री कपिल मिश्रा : अध्यक्ष महोदय, इन्होंने कहा कि सैनिकों के हौंसले पस्त होते हैं। जब हम यहां पर गुरमेहर का साथ देते हैं, सैनिकों के हौंसलें पस्त होते हैं। सैनिकों का हौंसला तब पस्त होता है जब किसी का बाप देश के लिए जान दे दे और उसकी बेटी को बलात्कार की धामकी जाये कोर्ट के अंदर, तब सैनिकों के हौंसले पस्त होते हैं। सैनिकों के हौंसले तब पस्त होते हैं, जब वन रैंक, वन पेंशन की डिमांड करते हुए एक सैनिक को आत्महत्या करनी पड़ जाती है। तब सैनिकों के हौंसले पस्त होते हैं और सैनिकों के हौंसले तब पस्त होते हैं, जब एक सैनिक को दाल और रोटी खाने के लिए वीडियो जारी करना पड़ता है, इस देश के अंदर तब सैनिकों के हौंसले पस्त होते हैं जिस देश का सैनिक भूखा है, समझो राजा झूठा है।

...(व्यवधाान)

श्री कपिल मिश्रा : देशभक्ति! देशभक्ति! देशभक्ति! देशभक्ति! देशभक्ति! देशभक्ति! देशभक्ति की बातें करते हैं, देशभक्ति, देश पहले और भक्ति बाद में। देशभक्ति; देश पहले और भक्ति बाद में और ये क्या कर रहे हैं? भक्ति पहले और देश बाद में। देशभक्ति में भक्ति पहले नहीं आती है देश पहले आता है। ये भक्ति पहले वाली राजनीति, इस देश के अंदर बंद होगी। भक्ति पहले वाली राजनीति के कारण आपको अपने देश के लोगों में ही गद्दार नजर आने लगे। हर मुसलमान गद्दार नजर आने लगा, हर सवाल उठाने वाला गद्दार नजर आने लगा। दलित का बेटा पढ़ाई कर ले तो देश का दुश्मन, किसान का बेटा सवाल उठाये तो नक्सलवादी, मुसलमान सवाल उठा ले तो आतंकवादी। ये कौन सी राजनीति है? इस देश के लिए एक शेर याद आता है :

''जब जब वतन को खूं की जरूरत पड़ी सबसे पहले गर्दन हमारी कटी।

फिर भी कहता है ये सययादे वतन, ये हमारा चमन है, तुम्हारा नहीं।''

कारगिल की लड़ाई के बारे में बात कर रहे हैं, कारगिल की लड़ाई, कारगिल में पाकिस्तान घुस के आया था, ये एक फैक्ट है लेकिन फिर उसे कारगिल में ही क्यों लड़ा? लिमिटेड लड़ाई क्यों लडी? किसके दबाव में लड़ी? क्या सैटिंग हुई थी? क्या डील हुई थी? कश्मीर से लेकर कच्छ तक क्यों नहीं लड़ाई लड़ी? पाकिस्तान के अंदर हम क्यों नहीं घुस के गये? हमने क्यों नहीं मारा पाकिस्तानयिों को? लिमिटेड लड़ाई! लिमिटेड लड़ाई! लिमिटेड लड़ाई! क्या होती है लिमिटिड लड़ाई?

....(व्यवधान)

श्री विजेंद्र गुप्ता : युद्ध के पक्ष में नहीं है ये।

श्री कपिल मिश्रा : कौन नहीं है उसके पक्ष में? कौन नहीं है उसके पक्ष में?

श्री विजेंद्र गुप्ता : युद्ध के पक्ष में नहीं है।

श्री कपिल मिश्रा : हम हैं ना, हम बोल रहे हैं, क्यों नहीं लड़ी? क्यों नहीं लड़ी लड़ाई?

...(व्यवधाान)

श्री कपिल मिश्रा : इस देश में जब जब भातरीय जनता पार्टी की सरकार आई है, जब जब, ऑन रिकार्ड है ये कि जब जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है, पाकिस्तान को मोस्ट फेवर्ड का दर्जा देना हो, ये देते हैं। पाकिस्तान के साथ बस चलानी हो, ये चलाते हैं। पाकिस्तान के आतंकवादियों को छोड़ के आना है, ये छोड़ के आते हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को यहां बुलाना हो, ये बुलाते हैं, (06.20) पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के घर में बर्थ-डे मनाना हो, ये मनाते हैं। पाकिस्तान की जऐंसी को जांच करने के लिए आतंकवादी हमले के लिए बुलाना हो, तो ये बुलाते हैं और पाकिस्तान के नाम पर राजनीति इस देश में करते हैं। बोलते हैं कि अगर कोई हमारे अलावा किसी और को वोट देगा तो पाकिस्तान चले जाओ, चुनाव परिणाम आने के 2 दिन के बाद खुद पाकिस्तान जाकर बैठे हुए होते हैं। पाकिस्तान के नाम पे दुकानदारी चला रहे हो? और किया क्या? कारगिल के युद्ध में भी क्या किया? उध ार सैनिक मर रहे थे, उधार हमारे सैनिक शहीद हो रहे थे इधार ये सैनिकों के ताबूत में कमीशन खा रहे थे।

मैं यह कहना चाहता हूं कि रामजस कॉलेज में, कोई भी मामला हो अगर चर्चा करने के लिए स्टूडेंट की बॉडी ने किसी को बुलायाहै, चाहे वो रामजस कॉलेज हो, दिल्ली यूनिवर्सिटी हो, जेएनयू हो, जामिया हो, अलीगढ़ हो, हैदराबाद हो, श्रीनगर हो, एनआईटी हो, इस देश का कोई भी विश्वविद्यालय हो, चर्चा को रोकने की कोशिश करने वाला देश का दुश्मन है। विचारों को रोकने की कोशिश करने वाला देश का दुश्मन है। भारतमाता को तब पीड़ा होती है, जब आप भारतमाता के बच्चों को खुलकर अपने विचार नहीं रखने देते हैं। इस देश के युवा को रोक नहीं सकते आप। आपको हो कसता है से रोक दोगे।. ...अच्छा! ये कह रहे हैं कि अब आधाी नहीं है, पूरी है। मेरी बात सुनो। ये पैंट बड़ी करने से कुछ नहीं होता, सोच बड़ी करनी पड़ती है। इस देश का युवा सवाल उठाएगा, हर देशभक्त युवा सवाल उठाएगा, पूछेगा, सवाल करेगा, अपनी बात रखेगा, सरकार की नीतियों की आलोचना करेगा, देश के बारे में भी बोलेगा, देश की सेना के बारे में भी बोलेगा, देश की राजनीति के बारे में भी बोलेगा, कश्मीर के बारे में भी बोलेगा और खुलकर बोलेगा। और अगर आपको लगता है कि आपकी दो कौड़ी के एबीवीपी के गुंडे किसी को बोलने से रोक देंगे तो आपको मैं ये समझा दूं 'राम को समझो, गांधाी को समझो' जो राम और गांधाी को नहीं समझता, भारतमाा उसको समझाने के लिए 'भगतसिंह' पैदा कर देती है।

मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, कि इस देश में देश के अंदर गद्दार ढूंढने की राजनीति बंद होनी चाहिए। देश के अपने नागरिकों को देशद्रोही और गद्दार बताने की राजनीति बंद होनी चाहिए और जिनके अपने संगठन के अंदर आईएसआई के एजेंट पकड़े जा रहे हैं, उनको जरूरी है कि

'गिरेबान में झांकें' आज आपके अंदर जितने आईएसआई एजेंट पकड़े गए हैं ना, आज हमें कहना पड़ रहा है, ''कहनी है एक बात जरा सी मुल्क के पहरेदारों से, संभल के रहना अपने घर में छिपे हुए गद्दारों से।' बहुत-बहुत शुक्रिया अध्यक्ष महोदय, धान्यवाद, जय हिंद।

अध्यक्ष महोदय : बहुत-बहुत धान्यवाद। नहीं, अब सोमनाथ जी हो गया, अब नहीं। सोमनाथ जी प्लीज, सोमनाथ जी प्लीज। मैं रिकवेस्ट कर रहा हूं प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती : अटारी बॉर्डर पर....

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी, मैं इजाजत नहीं दे रहा हूं। नहीं, मैं कोई इजाजत नहीं दे रहा हूं।

अब सदन की कार्यवाही 8 मार्च, 2017 को मधयान्ह 12.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

मैं एक बार दुबारा फिर दोहरा दूं कि कल बजट पेश होगा। सदन 12.00 बजे आरंभ होगा। ठीक 12.00 बजे सदन की कार्यवाही आरंभ होगी। धान्यवाद, बहुत-बहुत धान्यवाद।

(सदन की कार्यवाही 8 मार्च, 2017 को मधयान्ह 12.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

विषय सूची

सत्र-05 मंगलवार, 07 मार्च, 2017/16 फाल्गुन 1938 (शक) अंक-45

क्रसं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	
2.	शोक संवेदना	
3.	माननीय अधयक्ष द्वारा व्यवस्था	
4.	विशेष अधयक्ष (नियम-280)	
5.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात	
6.	धान्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा	
7.	अलपकालिक चर्चा	